
₹25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
क्रान्ति
अक्तूबर 2016
बढ़ते अपराध की प्रभावी रोकथाम
–मौलाना मुहम्मद जिरजीस करीमी
मुस्लिम काल में सहिष्णुता
–मुहम्मद इलियास हुसैन
सांप्रदायिक सद्भाव है देश की शक्ति
–संपादन प्रभाग
परलोक-विश्वास का प्रभाव
–अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी

MASJID - ISLAMIC CENTER

7-TOMBS ROAD | TOLICHOWKI | HYDERABAD

The proposed multifaceted Islamic Center at Tolichowki is committed in providing a service to the community in accordance to the teachings and strict adherence to the Quran and authentic Sunnah.

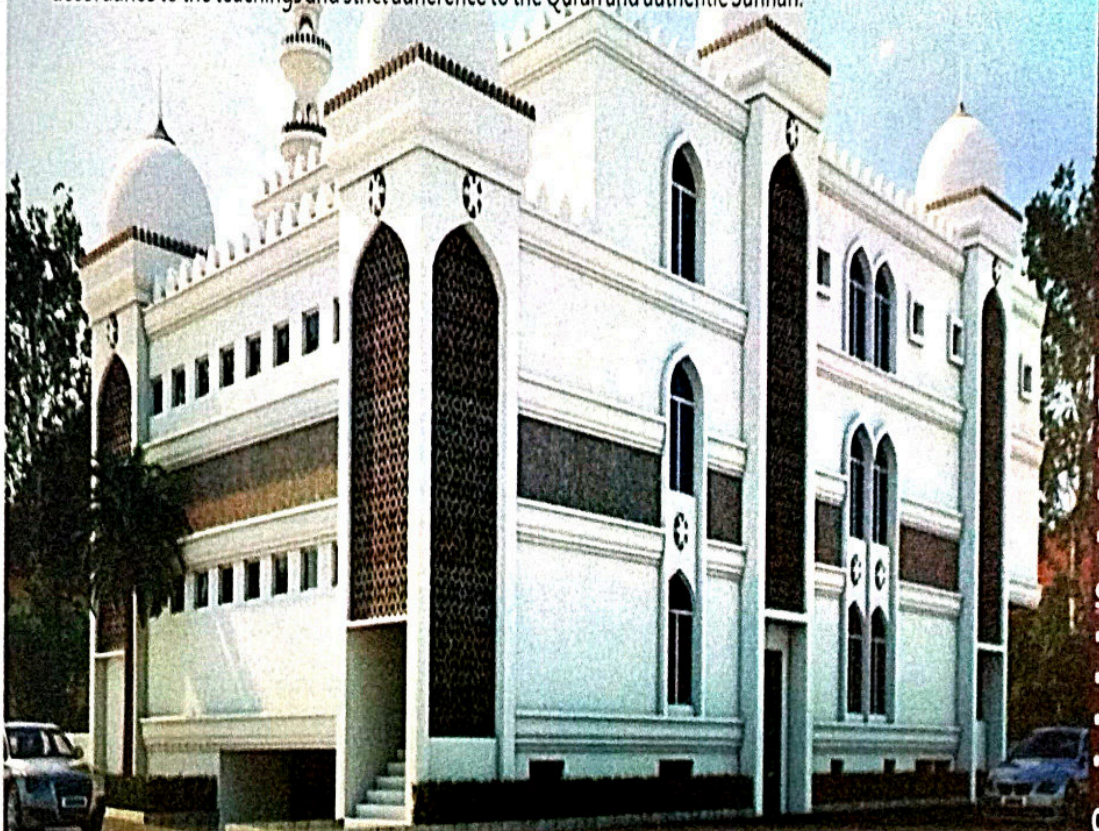

We aim to make ISLAMIC CENTER the focal point within our community. We envision beyond the tradition Masajid that only offer Salat, as we have a dedicated team of workers beholding a vision of several Social Spiritual activities:

JAMA'AT-E-ISLAMI HIND
Greater Hyderabad

HIGHLIGHTS

Dawah Center
- Dawah Counseling Center
- Dawah Library
- Audio Visual Library
- Dawah Training Center

Women and Children Welfare Centre
- Basic Learning Center
- Women Welfare Centre
- Facilities for Sisters

Social Service Center
- Widows Support Center
- Career Guidance Center
- Interest free Micro Finance Centre
- Medical Aid and Medical Equipment Bank

Other Facilities
- Markazi Maktaba Publishres (MMI) Depot
- SIO , GIO and JIH Offices
- Reading Rooms and Lecture Hall

The Masjid and Islamic Center will be a rewarding source. Please reserve your eternal rewards by contributing as much as you can.

Account Name : JIH Toli Chowki | Account No.: 3459101006336 | IFSC Code:: CNRB0003459 | Bank: Canara Bank | Branch: Toli Chowki.

TANVEER UL HAQ : 9989036632 | ABDUL RAZZACK : 9440014127

www.islamiccentertolichowki.com

info@islamiccentertolichowki.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 26 अंक 4 अक्तूबर 2016

अल्लाह की तसबीह की है हर उस चीज़ ने जो ज़मीन और आसमानों में है, और वही प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है । -क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

आज कुछ ऐसा तय पाया है हक़ के इजारादारों[1] में
हम पर जो ईमान न लाएं चुनवा दो दीवारों में

❖

कौन-सी है तस्वीर हमारी, काश, बता दे कोई हमें
चेहरों पर छाई है उदासी, रौनक़ है बाज़ारों में

❖

सूरज को दो देस निकाला, दिन का क़िस्सा पाक करो
बनते हैं ऐसे मंसूबे रात के रिश्तेदारों में

❖

ग़म भी इक एहसान है उसका, शुक्र कर ऐ दिल शिकवा क्या
ग़म तो हमारी रूहे-रवां[2] है, हम नहीं ग़म के मारों में

❖

राज़िक़[3] पर करते हैं भरोसा और न अपनी कोशिश पर
ख़ुशहाली को ढूंढ़ रहे हैं जो ख़ाली गह्वारों[4] में

❖

उसकी हां में हां न मिलाई बस यह जुर्म हमारा है
वाइज़[5] ने शामिल कर डाला हमको भी मैख़्वारों[6] में

❖

इक जाबिर[7] का मजबूरों ने ऐसे इस्तक़बाल[8] किया
आ निकला हो कोई मसीहा जैसे दर्द के मारों में

❖

हर ज़ालिम[9] से टक्कर ली है सच्चे फ़नकारों[10] ने 'हफ़ीज़'
हम वो नहीं जो डर कर कह दें "हम हैं ताबेदारों में"।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

---

1. ठेकेदारों 2. प्रवाहित आत्मा 3. रोज़ी देने वाला, आजीविका प्रदान करने वाला, ईश्वर 4. झूलों, हिंडोलों, पालनों 5. धर्म उपदेशक 6. शराबियों 7. अत्याचारी 8. स्वागत 9. ज़ुल्म करने वाला, अत्याचारी 10. कलाकारों ।



कहां क्या है ?

गज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
अल्लाह के लिए प्रेम और उसकी अपेक्षाएं (हदीस मंजरी)		6
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के मानवता पर उपकार (संपादकीय)		7
दहेज मुक्त भारत अभियान की आवश्यकता (आपके पत्र)		9
परलोक-विश्वास का प्रभाव (प्रेरणा)	–अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी	11
मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) (आदर्श)	–प्रो॰ अब्दुल्लाह भट्टी	15
पैग़म्बरी की अवधारणा (आस्था)	–अबरार अहमद	17
हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)	–मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही	19
सकारात्मक सोच रखें सदा (कैरियर)		21
मुस्लिम काल में सहिष्णुता (अतीत के झरोखे से)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	23
बढ़ते अपराध की प्रभावी रोकथाम (विशेष आयोजन)	–मौलाना मुहम्मद जिरजीस करीमी	26
सांप्रदायिक शांति एवं सद्भाव है देश की शक्ति (सामयिकी)	–संपादन प्रभाग	31
एकेश्वरवाद (इक दूजे के जानें)	–स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	35
भ्रम (लघुकथा)	–डॉ॰ पूरन सिंह	38
आबादी सवा सौ करोड़ से अधिक, व्यक्तिगत गोल्ड मेडल सिर्फ़ एक (खेल)	–ए॰ एन॰ शिब्ली	39
धनोपार्जन और इस्लाम	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	41
मुन्ना : प्रेरक बाल-कहानियां (पुस्तक समीक्षा)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	43
कहां है ख़ुशियां ? (कहानी)	–चांद ख़ां रहमानी	45
अल्लाह और उसकी सृष्टि	–अबरार अहमद	47
कैसा अद्भुत हमारा संसार ? (बालवीथी)	–जागृति श्रीवास्तव	50

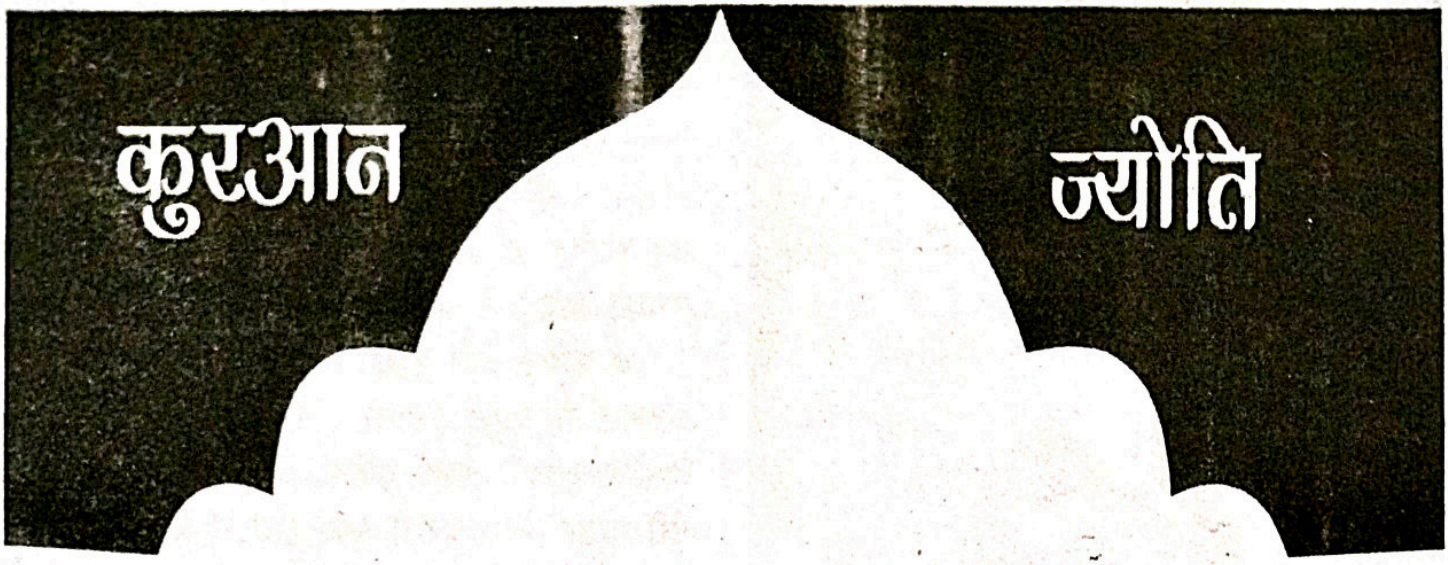

(6) निश्चय ही रात और दिन के उलट-फेर में और हर उस चीज़ में जो अल्लाह ने ज़मीन और आसमानों में पैदा की है निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो (ग़लत देखने और ग़लत कार्य करने से) बचना चाहते हैं।[11]

(7) सच तो यह है कि जो लोग हमसे मिलने की आशा नहीं रखते और दुनिया की ज़िन्दगी ही पर राज़ी और संतुष्ट हो गये हैं और जो लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं।

–क़ुरआन, 10 : 6,7

---

11. यह आख़िरत के अक़ीदे (विश्वास) का तीसरा प्रमाण है। सृष्टि में अल्लाह के जो काम हर ओर दिखायी दे रहे हैं, जिनके बड़े-बड़े चिह्न सूरज और चांद और रात व दिन के आने-जाने की शक्ल में हर आदमी के सामने मौजूद हैं, उनसे इस बात का अत्यंत स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि इस महान सृष्टि का पैदा करने वाला कोई बच्चा नहीं है जिसने केवल खेलने के लिए यह सब कुछ बनाया हो, और फिर दिल भर लेने के बाद यूं ही उस घरौंदे को तोड़-फोड़ डाले। स्पष्ट रूप से दिखायी दे रहा है कि उसके हर काम में नज़्म (व्यवस्था) है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) है, मस्लहत है और कण-कण की पैदाइश में एक बड़ा उद्देश्य पाया जाता है, अतएव जब वह तत्वदर्शिता और उसके (निहित उद्देश्य) की चिह्न और निशानियां तुम्हारे सामने खुल्लम-खुल्ला मौजूद हैं तो इससे तुम कैसे यह आशा रखते हो कि वह इन्सान को बुद्धि और नैतिक चेतना और स्वतंत्र दायित्व और उपयोग के अधिकार प्रदान करने के बाद उसके जीवन-कार्यों का हिसाब कभी न लेगा और बुद्धिपरक और नैतिक दायित्वों के आधार पर बदला और सज़ा का जो हक़ अनिवार्य रूप से पैदा होता है, उसे यूं ही व्यर्थ जाने देगा।

इस सिलसिले में एक और महत्वपूर्ण विषय भी बयान फ़रमा दिया गया है जो गहरी तवज्जोह चाहता है। फ़रमाया कि 'अल्लाह अपनी निशानियों को खोल-खोलकर पेश कर रहा है उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं' और 'अल्लाह की पैदा की हुई हर चीज़ में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़लत सोच और ग़लत रवैये से बचना चाहते हैं।' इसका अर्थ यह है कि अल्लाह ने बड़े विवेकपूर्ण ढंग से जीवन की प्रत्यक्ष वस्तुओं में हर ओर से निशान फैला रखे हैं जो इन प्रत्यक्ष वस्तुओं के पीछे छिपे हुए तथ्यों का साफ़-साफ़ पता दे रहे हैं, लेकिन इन निशानों से तथ्यों तक केवल वही लोग पहुंच सकते हैं जिनके भीतर ये दो गुण पाए जाते हों–एक यह कि वे अज्ञानतापूर्ण संकीर्णताओं (तास्सुबात) से पाक होकर ज्ञान प्राप्त करने के उन साधनों को अपनाएं जो अल्लाह ने इन्सान को दिए हैं, दूसरे यह कि उनके भीतर स्वयं यह इच्छा मौजूद हो कि ग़लती से बचें और सही रास्ता अपनाएं।



अल्लाह के लिए प्रेम और उसकी अपेक्षाएं

● हज़रत अनस (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "तीन चीज़ें जिस व्यक्ति में पायी जाएं उसको उनसे ईमान की मिठास प्राप्त होगी : अल्लाह और उसका रसूल उसे शेष सभी चीज़ों से बढ़कर प्रिय हों, वह किसी व्यक्ति से प्रेम करे तो केवल अल्लाह के लिए प्रेम करे, और 'कुफ़्र' (अधर्म) की ओर लौटना-जिससे अल्लाह ने उसे बचाया है-उसे ऐसा अप्रिय हो जैसा उसे यह अप्रिय हो कि उसे आग में डाल दिया जाए ।" -बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "सात व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह उस दिन अपने साये में ले लेगा जिस दिन उसके साये के अतिरिक्त कोई साया नहीं होगा । (और वे ये हैं): न्यायशील शासक, वह नवयुवक जो गरिमा के स्वामी प्रतापवान अल्लाह की बन्दगी करते हुए जवान हुआ, वह व्यक्ति जिसका दिल मस्जिद से लगा रहे, और वे दो व्यक्ति जो अल्लाह के लिए एक-दूसरे से प्रेम करें । मिलें तो उसी के लिए अलग हों तो उसी के लिए, वह व्यक्ति जिसे किसी सुन्दर और रूपवती स्त्री ने अपनी ओर बुलाया तो उसने कहा : मैं अल्लाह से डरता हूं, वह व्यक्ति जो दान दे तो उसको इतना छुपाये कि उसके बांये हाथ को मालूम न हो कि दांये हाथ ने क्या ख़र्च किया और वह व्यक्ति जो अकेले में अल्लाह को याद करे और उसकी आंखों से आंसू बह पड़े ।" -बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "क़ियामत के दिन अल्लाह तआला कहेगा : कहां हैं वे लोग जो मेरी गरिमा के आदर में एक-दूसरे से प्रेम करते थे ? आज मैं उन्हें अपने साये में लूंगा । आज मेरे साये के अतिरिक्त कोई साया नहीं ।" -मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "उसकी सौगन्ध जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, तुम जन्नत में प्रवेश नहीं पा सकते जब तक कि ईमान न लाओ और तुम ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि आपस में एक-दूसरे से प्रेम न करो । क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बताऊं कि तुम उसे व्यवहार में लाओ, तो एक-दूसरे से प्रेम करने लगो ? (वह यह कि) अपने बीच सलाम को रिवाज दो ।" -मुस्लिम

● हज़रत मुआज़ (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उनका हाथ पकड़ा और कहा : "ऐ मुआज़, अल्लाह की सौगन्ध, मैं तुमसे प्रेम करता हूं । फिर ऐ मुआज़ मैं तुम्हें वसीयत करता हूं कि हर नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़नी न छूटे : 'अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िक्रिका व शुक्रिका व हुस्न इबादतिका' (ऐ अल्लाह, मेरी सहायता कर कि मैं तुझे याद करूं, और तेरे आगे कृतज्ञता दिखलाऊं और तेरी अच्छी बन्दगी करूं)।" -अबू दाऊद, नसई

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मानवता पर उपकार

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जब दुनिया में शुभागमन हुआ, तो सारी दुनिया पर अज्ञानता और अंधविश्वास का अंधकार छाया हुआ था । लोग अपने वास्तविक ईश्वर को भूल गये थे और अनेक प्रकार के उपास्य बना डाले थे । मानव-सभ्यता विभिन्न कुसंस्कारों में फंसकर सिसक रही थी । रहन-सहन के सुख और ठाठ-बाट ने अधिकतर लोगों को अपाहिज और निष्क्रिय कर दिया था । यूरोप के लोग सुख-सुविधा के सामान संचित करने में लगे हुए थे और भोग-विलास के चक्कर में पड़कर अपने को तबाह व बरबाद कर रहे थे । मिस्र से भारत, यूनान से चीन तक में सभ्यता का सूर्य अस्त हो चुका था । रोम और ईरान की 'महान सभ्यताएं' लोगों के साथ क्रूरता, बर्बरता और नृशंसता के घृणित बर्ताव में लिप्त थीं । कुछ शासक स्वयं को ईश्वर के रूप में प्रस्तुत कर धर्मादेश भी दे रहे थे और अपने घिनौने स्वार्थों की पूर्ति के लिए सामान्य जनता से भारी कर वसूल कर रहे थे । उनसे रिश्वतें, नज़राने लेते और जबरन बिना मज़दूरी के काम कराते थे । इस दुर्दशा और अभिशाप से उन्हें छुटकारा दिलाने वाला कोई न था । रोमी और ईरान साम्राज्यों के बीच होने वाली लड़ाइयों के प्रभाव से आम जन अछूते न थे और अछूते रह भी नहीं सकते थे । वे जीवन की ज़रूरत की चीज़ों से वंचित थे, पर इसके लिए आवाज़ भी नहीं उठा सकते थे । अंत:करण की स्वतंत्रता का पूरी तरह अभाव था । इन्सान अंधकार में डूबा हुआ था । किसी धर्म का दर्शन उसके पास प्रकाश न था कि वह उसका मार्गदर्शन करे ।

पैग़म्बरों और ईशदूतों की शिक्षाएं अपने सही रूप में नहीं रह गयी थीं और स्वनिर्मित धर्माचार धर्मनेताओं का लाभकारी धंधा बन चुका था । उन्हें सत्ताधारी वर्ग का संरक्षण मिला हुआ था, जिससे वे धर्म के नाम पर नित नयी व्याख्याएं पेश करके लोगों को ठगने से नहीं चूक रहे थे । यूनानी सभ्यता नष्ट हो चुकी थी, यहां तक यूनानियों के सुधारक कन्फ्यूशियस और मानी की शिक्षाएं विद्यमान न रहीं । बौद्ध और वैदिक धर्म भी निष्प्रभावी थे । मानवता को इन परिस्थितियों से उबरने का कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था । अत: ये परिस्थितियां सहज रूप से एक ऐसे महानतम व्यक्तित्व की मांग कर रही थीं कि वह आये और सारी दुनिया को मानवता का पाठ सिखाए और सीधा मार्ग बताए । अल्लाह ने मानवता पर बड़ा उपकार किया और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को अपने अंतिम नबी की हैसियत से सारी दुनिया के मार्गदर्शन हेतु भेजा और आप (सल्ल०) के व्यक्तित्व में अच्छा आदर्श निहित कर दिया, जो सारे संसार के लिए

अनुकरणीय और संपूर्ण जीवन-नीति के लिए उत्कर्ष और शिष्टता की पराकाष्ठा का यथार्थ मानदंड है । आप (सल्ल०) ने अपने इस मिशन को भली-भांति पूरा किया, जिस पर अल्लाह ने आपको नियुक्त किया था । आपके अद्वितीय व्यक्तित्व और महान कार्यों को देखते हुए ही माइकल एच० हार्ट ने अपनी पुस्तक 'द हंड्रेड' में विश्व-प्रसिद्ध व्यक्तित्वों में आपको प्रथम स्थान पर रखा है । मिस्टर हार्ट ही क्या, जो भी दुर्भावना और पक्षपात से रहित होकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पवित्र जीवनी का अध्ययन करेगा, वह भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि आप ही का व्यक्तित्व उभरा हुआ है और आप ही सारे इन्सानों के आदर्श हो सकते हैं । आप (सल्ल०) के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आपने अल्लाह की ओर से आए हुए प्रत्येक आदेश और मार्गदर्शन को इन्सानों तक ज्यों का त्यों पहुंचा दिया । कुछ भी छिपाया नहीं । अपनी 23 वर्षों की पैग़म्बराना ज़िन्दगी में इस बात का एक प्रमाण भी नहीं मिल सकता कि आपने ईश-आज्ञा के अनुपालन में कोई कोताही दिखायी हो । ऐसा भी होता था कि जो कुछ आपको दुनिया के सामने रखना होता था, वह माहौल के लिए पूर्णतः असंगत और सुनने वालों के लिए पूरी तरह असहनीय होता था, लेकिन माहौल और सुनने वालों की भावनात्मक प्रतिक्रिया का आपने कभी मानसिक दबाव स्वीकार न किया और न सत्य के आह्वान का हित इस पर समझा कि उसके ऐसे अंशों को जिनसे लोगों के भड़क उठने की आशंका हो, उन्हें कुछ हलका करके पेश करें ।

एक ओर तो अरब का भू-भाग था, जो सैकड़ों उपास्यों की पूजा में लिप्त था, दूसरी ओर कुरआन की तौहीद (एकेश्वरवाद) की धारणा थी, जिसमें एक ईश्वर के अतिरिक्त दूसरों के लिए कोई स्थान न था । इस्लाम की शिक्षा है कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं है । अनेकेश्वरवाद और मूर्तिपूजा का केन्द्र बन चुके मक्का के लोगों को यह चीज़ सहन कैसे हो सकती थी ? मक्का में और काबा के सामने खड़े होकर 'ला इलाह इल्लल्लाह' (अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं) का उद्घोष करना वास्तव में बड़ा कठिन कार्य था । मगर दुनिया जानती है कि आप (सल्ल०) ने यह उद्घोष ठीक इन्हीं शब्दों में किया, प्रत्येक स्थान और अवसर पर किया और इस प्रकार किया कि लोग तौहीद के बारे में किसी भ्रांति के शिकार न हों । आपने अन्य ईश्वरीय शिक्षाओं को भी दुनिया के सामने दो टूक अंदाज़ में ज्यों का त्यों प्रस्तुत किया । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पवित्र जीवन का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आपने जिस धारणा, जिस उसूल और जिस आदेश की भी इन्सानों को शिक्षा दी, उसकी अपेक्षाओं पर सबसे पहले स्वयं अमल किया । आपने अपने वचन और कर्म दोनों से सत्य का अनुपालन किया । धार्मिक आदेश का कोई अंश और इबादत का कोई पहलू ऐसा नहीं, जिसमें आपका अपना कर्म दूसरों के मार्गदर्शन के लिए आगे-आगे मौजूद न रहा है । अल्लाह ने इस बात का आदेश भी दिया था–"(ऐ नबी) इनसे कहो, मुझे आदेश दिया गया है कि धर्म को अल्लाह के लिए विशुद्ध करके उसकी बन्दगी करूं, और मुझे आदेश दिया गया है कि सबसे पहले मैं स्वयं मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूं ।" (कुरआन 39:11,12)

दहेज मुक्त भारत अभियान की आवश्यकता

दहेज कुप्रथा लोकतंत्र के सभी स्तम्भों तक भी अब पहुंच गई है और लोकतंत्र में जिस वर्ग को व्यवस्था को चलाने की ज़िम्मेदारी है अगर वही ऐसी कुप्रथाओं के वायरस से ग्रस्त हो जायेंगे तो फिर भारत के लोकतंत्र को चरमराना तय है । सबसे ऊपर वर्ग ही ग्रसित हो जाये तो बाक़ी का क्या कहना ? अगर हम अब भी न चेते तो हमारी बेटियां/बहनें निराशा में चली जाएंगी, और हम सब ध्यान रखें कि बेटी ही भावी मां होती है और अगर मां ही निराशा में चली गई, तो हम लाख "भारत माता की जय" बोलें, भारत कैसे आगे बढ़ेगा ।

भारतीय मानस दहेज मुक्त हो और दहेज कुप्रथा से उत्पन्न हो रही समस्याओं से अवगत हो । मैं संकल्प लेती हूं कि मैं दहेज प्रथा आधारित वैवाहिक सम्बन्ध को किसी भी दशा में स्वीकार नहीं करूंगी तथा मैं इस सामाजिक कुरीति के विरुद्ध प्रारम्भ हो रही वैचारिक क्रान्ति में पूर्ण मनोयोग से तब तक सहभागिता करती रहूंगी, जब तक सर्वथा समाज विरोधी इस कुप्रथा का समूल नाश न हो जाए ।

अब वक़्त आ गया है कि भारत के श्रेष्ठ बौद्धिक जन उठकर खड़े हों और "डाउरी फ्री इंडिया मूवमेंट" की शुरुआत करें । संकल्प सभा का आयोजन किया जाये जिसमें हर जाति/धर्म की ऐसी लड़कियां जो आत्मनिर्भर हैं या आत्मनिर्भरता की तरफ़ अग्रसर हैं, वे संकल्प लें कि "मैं अपने आत्म गौरव के सापेक्ष संकल्प लेती हूं कि मैं जिस किसी की जीवन साथी बनूंगी, उसको जीवन साथी बनने के एवज़ में कोई पैसा नहीं दूंगी ।"

"आइए हम भारतीय पुरुषों से यह सवाल पूछें कि क्या आप अपने गृहस्थ जीवन की शुरुआत अपनी जीवनसंगिनी से पैसा लेकर करेंगे? आइए हम भारतीय स्त्रियों से यह सवाल पूछें कि तुम कब तक जीवनसंगिनी बनने के भी पैसे दोगी? हम सब "दहेज कुप्रथा" पर व्यवस्थित तरीक़े से चोट करना अपने परिवार से आरंभ करें, यही देश के महापुरुषों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी ।"

दहेज मांगना और देना दोनों निन्दनीय कार्य हैं । जब वर और कन्या दोनों की शिक्षा-दीक्षा एक जैसी है, दोनों रोज़गार में लगे हुए हैं, दोनों ही देखने-सुनने में अच्छे तथा स्वस्थ हैं, तो फिर दहेज की मांग क्यों की जाती है? कन्यापक्ष की मजबूरी का नाजायज़ फ़ायदा क्यों उठाया जाता है ? भारत में कुछ ऐसी जातियां भी हैं जो वर को नहीं, अपितु कन्या को दहेज देकर ब्याह कर लेते हैं, लेकिन ऐसा कम ही होता है । अब तो ज़्यादातर जाति वर के लिए ही दहेज लेती हैं ।

दहेज-दानव को रोकने के लिए सरकार द्वारा सख़्त क़ानून बनाया गया है । इस क़ानून के अनुसार दहेज लेना और दहेज देना दोनों अपराध माने गए हैं । अपराध प्रमाणित होने पर सज़ा और जुर्माना दोनों भरना पड़ता है । यह क़ानून कालान्तर में संशोधित करके अधिक कठोर बना दिया गया है । अधिक संख्या में बारात लाना भी अपराध है । दहेज के लिए कन्या को सताना भी अपराध है ।

दहेज के कलंक और दहेज रूपी सामाजिक बुराई को केवल क़ानून के भरोसे नहीं रोका जा सकता । इसके रोकने के लिए लोगों की मानसिकता में बदलाव लाया जाना चाहिए । विवाह अपनी-अपनी जाति में करने की जो परम्परा है उसे तोड़ना होगा तथा अन्तर्राज्यीय विवाहों को प्रोत्साहन देना होगा । तभी दहेज लेने के मौक़े घटेंगे और विवाह का क्षेत्र व्यापक बनेगा । अन्तर्राज्यीय और अन्तर्राष्ट्रीय विवाहों का प्रचलन शुरू हो गया है, यदि इसमें और लोकप्रियता आई और सामाजिक प्रोत्साहन मिलना रहा, तो ऐसी आशा की जा सकती है कि दहेज लेने की प्रथा में कमी ज़रूर आएगी ।

बेटी को आज के वैश्विक युग की आवश्यकता के अनुकूल उच्च, तकनीकी तथा आधुनिक शिक्षा दिलाकर आत्मनिर्भर बनाने के लिए हमें जी-जान से कोशिश करनी चाहिए । इस दिशा में गुणात्मक शिक्षा को शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वजन सुलभ बनाने का यह सबसे उपयुक्त समय है । एक बेटी या मां अच्छी शिक्षक है जिससे बेहतर स्नेह और देखभाल करने का पाठ और किसी से नहीं सीखा जा

सकता है । नारी के नेतृत्व में दुनिया से युद्धों की समाप्ति हो जायेगी । क्योंकि कोई भी महिला का कोमल हृदय एवं संवेदना युद्ध में एक-दूसरे का ख़ून बहाने के पक्ष में कभी नहीं होता है । महिलायें ही एक युद्धरहित विश्व का गठन करेंगी । विश्व भर के पुरुष वर्ग के समर्थन एवं सहयोग का भी वसुधा को कुटुम्ब बनाने के अभियान में सर्वाधिक श्रेय होगा ।

कुमारी शांतिपाल 'प्रीति'
लखनऊ (उ०प्र०)

स्वच्छ भारत का सपना ?

स्वच्छ भारत अभियान महज़ एक सपना साबित हो रहा है । 2 अक्टूबर 2014 से देश भर में शुरू किये गये इस अभियान का कोई उल्लेखनीय परिणाम सामने नहीं आया है ।

पहले भी भारत सरकार द्वारा 1999 में "सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान कार्यक्रम" शुरू किया गया था, जिसका मूल उद्देश्य ग्रामीण भारत में पूर्ण स्वच्छता लाना और 2012 तक खुले में शौच को सिरे से ख़त्म करना था । इसमें घरों, विद्यालयों तथा आंगनबाड़ियों में स्वच्छता सुविधाओं पर विशेष बल दिया गया है । स्वच्छता अभियान के तहत स्थानीय स्तर पर यह पंचायतों की ज़िम्मेदारी दी गयी कि वे गांव के स्कूल, आंगनबाड़ी, सामुदायिक भवन, स्वास्थ्य केंद्र एवं घरों में समग्र रूप से बच्चों को पेयजल, साफ़-सफ़ाई एवं स्वच्छता के साधन उपलब्ध कराएं लेकिन यह कार्यक्रम अपने लक्षय को पाने में असफल रहा ।

अब अगर मोदी सरकार की मानें तो 2022 तक खुले में शोच को ख़त्म कर दिंया जाएगा और 2019 तक देश के 4041 शहरों में ठोस कचरा प्रबन्धन की योजना पूरी हो जाएगी, लेकिन मौजूदा हालात इसकी गवाही नहीं देते कि सरकार यह लक्ष्य निर्धारित समय में हासिल कर लेगी । लेकिन यह काम काग़ज़ पर अच्छा है और ज़मीनी हक़ीक़त इसके उलट है । रेलवे स्टेशनों, एयरपोर्टों, बस अड्डों, अस्पतालों और देश के सार्वजनिक स्थलों पर कमोबेश गन्दगी का साम्राज्य है । सामाजिक रूप से सफ़ाई-सुथराई का सुपरिणाम नहीं सामने आया है । इस तरह से क्या हम भारत स्वच्छता अभियान का नारा पूरा कर पाएगें? देश में स्वच्छता का नारा काफ़ी पुराना है, लेकिन अभी भी देश की एक बड़ी आबादी गन्दगी के बीच अपना जीवन बिताने को मजबूर है । 2011 की जनगणना के अनुसार राष्ट्रीय स्वच्छता कवरेज 46.9 प्रतिशत है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह औसत 30.7 प्रतिशत है । अभी भी देश की 62 करोड़ 20 लाख की आबादी राष्ट्रीय औसत 53.1 प्रतिशत है । खुले में शौच करने को मजबूर हैं ।

राज्यों की बात करें तो मध्य प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय के उपयोग की दर 13.6 प्रतिशत, राजस्थान में 20 प्रतिशत, बिहार में 18.6 प्रतिशत और उत्तर प्रदेश 22 प्रतिशत है । भारत के केवल ग्रामीण ही नहीं बल्कि शहरी क्षेत्र में शौचालयों का अभाव है । यहां सार्वजनिक शौचालय भी पर्याप्त संख्या में नहीं हैं, जिसकी वजह से हमारे शहरों में भी एक बड़ी आबादी खुले में शौच करने को मजबूर है । इसी तरह से देश में क़रीब 40 प्रतिशत लोगों को स्वच्छ पीने योग्य पानी उपलब्ध नहीं है । दुख इस बात का है कि प्रधानमंत्री द्वारा ज़ोर-शोर से शुरू किए गए स्वच्छता अभियान के बाद भी देश की तस्वीर में कोई ख़ास बदलाव नहीं आया है । अभियान की सफलता को जांचने की ख़ातिर केन्द्रीय शहरी मंत्रालय द्ववारा जो सर्वे कराया गया, उसने सरकार के सारे दावों की पोल खोलकर सामने ला दी है । और तो और विडम्बना यह है कि पिछले 10 सालों के दौरान बने 47.3 प्रतिशत शौचालयों का इस्तेमाल अभी भी नहीं हो पा रहा है ।

शाहिद इलियास
नयी दिल्ली

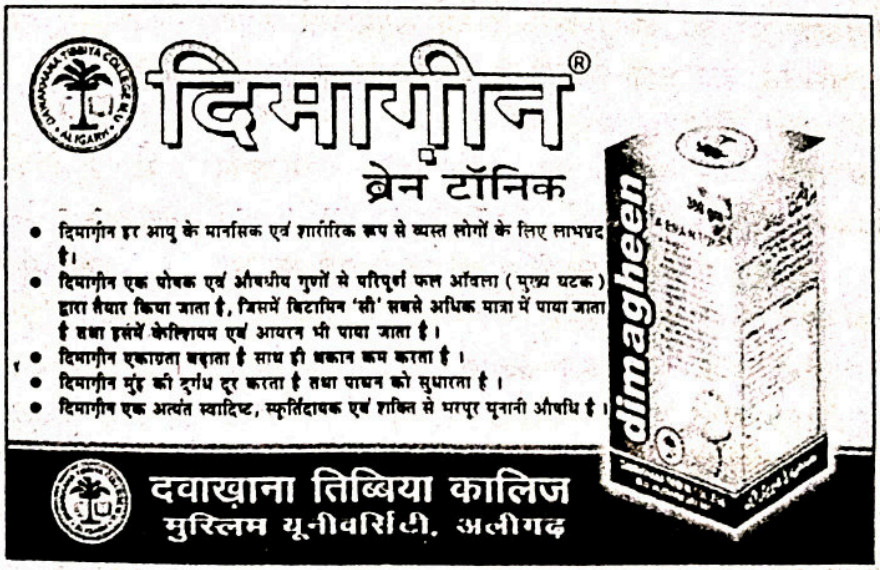

परलोक-विश्वास का प्रभाव

■ अबू मुहम्मद इमामुद्दीन रामनगरी

हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰), हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के पहले ख़लीफ़ा थे । उन्होंने धर्म और जनता की सेवा के उद्देश्य से ख़लीफ़ा होना स्वीकार कर लिया था । फिर भी समय-समय पर घोषणा करते रहते थे कि कोई इस भार को उठाने पर तैयार हो तो वह बड़ी प्रसन्नता से उसके परित्याग के लिए तैयार हैं । एक दिन एक व्यक्ति ने उनसे प्रार्थना की कि कुछ उपदेश कीजिए । आपने उपदेश करते हुए कहा, "शासन-सत्ता और अधिकार कभी स्वीकार न करना । संसार में तो शासक का दायित्व बढ़ ही जाता है । क़ियामत के दिन भी उसका हिसाब बड़ी कड़ाई से होगा और उसका लेखा-पत्र अधिक लंबा होगा ।"

वह स्वयं क़ियामत और उस दिन के हिसाब-किताब से हर समय भयभीत रहते थे । पक्षियों को वृक्षों पर आनन्द से चहचहाते देखते तो ठंडी सांस लेकर कहते, पक्षियो! तुम अच्छे हो कि संसार में चरते-चुगते हो, वृक्ष की छाया में बैठते हो और क़ियामत में तुम्हारा कोई हिसाब-किताब नहीं । क्या अच्छा होता कि अबू बक्र भी तुम्हारे समान होता ।

लोग इस विचार से आपका सम्मान करते कि आप खुदा के रसूल (सल्ल॰) के ख़लीफ़ा हैं तो आप कहते, "लोगों ने मुझको बहुत बढ़ा दिया है ।" कोई आपकी प्रशंसा करता तो कहते, "ऐ खुदा ! तू मेरी दशा अधिक जानता है और मैं अपनी दशा लोगों से अधिक जानता हूं । ऐ खुदा ! तू लोगों के विचार से मुझको अधिक अच्छा सिद्ध कर, मेरे पापों को क्षमा कर और लोगों की अनुचित प्रशंसा की पूछ मुझसे न कीजियो !" इसी परलोक-विश्वास का प्रभाव था कि धनवान होते हुए आप अपना सब कुछ ईश्वर की प्रसन्नता और भक्ति में लुटाकर निर्धन हो गये और समस्त अरब के राजपद पर आसीन होकर भी राजकोष से इतना न लिया कि सुखमय जीवन बिता सकते । उन्होंने मरते समय अपनी बेटी हज़रत आयशा से, जो खुदा के रसूल (सल्ल॰) की पत्नी थीं, कहा, "जब से मेरे सिर पर ख़िलाफ़त (राजपद) का भार आया है मैंने साधारण से साधारण भोजन और मोटे-झोटे वस्त्र पर निर्भर किया । मुसलमानों के राजकोष से मेरे पास एक हब्शी गुलाम, एक ऊंट और इस पुरानी चादर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है । मेरे बाद यह सारी चीज़ें उमर (रज़ि॰) को देकर इन वस्तुओं से मुक्त हो जाना ।"

हज़रत उमर (रज़ि॰) के पास यह वस्तुएं पहुंची तो वे रो पड़े । कहने लगे, अबू बक्र ! तुम पर ईश्वर की दया हो । तुमने मृत्यु के पश्चात भी संयम सूत्र को हाथ से न छोड़ा और किसी को टीका-टिप्पणी का अवसर न दिया ।

स्वयं हज़रत उमर (रज़ि॰) के परलोक भय की यह अवस्था थी कि एक बार रात को गश्त करते हुए मदीना से दूर निकल गये । एक गांव में देखा एक स्त्री कुछ पका रही है और दो-तीन बच्चे बिलख रहे हैं । स्त्री से पूछा तो ज्ञात हुआ कि कुछ खाने को नहीं है, बच्चे भूख से तड़प रहे हैं, माता ने उनको बहलाने के लिए ख़ाली हांडी चढ़ा दी है । हज़रत उमर (रज़ि॰) फ़ौरन मदीना आये और भोजन सामग्री लेकर चलने लगे तो दास ने कहा, "मेरे होते हुए आप बोझ क्यों ढोएंगे, लाइए मैं ले चलता हूं ।" हज़रत उमर (रज़ि॰) ने कहा, "तुम आज तो मेरा बोझ उठाकर ले जाओगे, लेकिन काल क़ियामत के दिन जब इस संबंध में प्रश्न किया जाएगा तो उत्तर मुझे ही देना होगा । अतः स्वयं बोझ उठाकर ले गये और चूल्हा जलाकर खाना तैयार करने में भी सहायता की ।"

हज़रत उमर का जीवन इतना सीधा-सादा था कि कंधे पर मश्क रखकर विधवा स्त्रियों का पानी भरते । युद्ध में गये सिपाहियों के घरों का सौदा-सुलुफ़ ला देते । कामकाज से थक जाते तो मस्जिद के किसी कोने में भूमि पर लेट जाते । यात्रा करते तो डेरा खेमा कुछ साथ न होता, वृक्ष की छाया में रात को भूमि ही पर पड़े रहते ।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि॰) एक बार दिन

भर रोज़ा रहे, संध्या को भोजन सामने आया तो सहसा मुसलमानों का वह समय याद आ गया जब मुसलमान बहुत ही निर्धन और दीन दशा में थे, कहने लगे, "मुसइब बिन उमैर (रज़ि॰) मुझ से श्रेष्ठ थे वे शहीद हुए तो कफ़न में केवल एक चादर थी, जिससे सिर छिपाया जाता तो पांव खुल जाते और पांव छिपाये जाते तो सिर खुल जाता । इसी प्रकार हमज़ा (रज़ि॰) शहीद हुए । वे भी मुझ से श्रेष्ठ थे, लेकिन अब हमारे लिए दुनिया विस्तृत हो गयी है । और हमें इतनी सांसारिक सामग्रियां प्रदान की गयी हैं कि मुझे डर है कि कदाचित हमारे पुण्य कार्यों का पुरस्कार दुनिया ही में हो गया । इसके पश्चात इस प्रकार दिल भर आया कि भोजन से हाथ खींच लिया ।

क़ुरआन में एक आयत उतरी जिसमें कहा गया है कि लोग क़ियामत के दिन ईश्वर के सामने अपने हक़ के लिए एक-दूसरे से झगड़ेंगे । हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम (रज़ि॰) ने यह आयत सुनी तो ख़ुदा के रसूल (सल्ल॰) से पूछा, "कि क्या क़ियामत के दिन हमारे झगड़े फिर दुहराए जाएंगे ? रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "हां, एक-एक कण का हिसाब होगा और हक़दार को उसका हक़ दिलाया जाएगा । यह सुनकर हृदय कांप उठा, बोले, "हे ईश्वर ! कितना कठिन अवसर होगा ?"

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) ख़ुदा के रसूल (सल्ल॰) के प्रमुख सहाबी (साथी) थे । एक बार एक व्यक्ति ने उनसे प्रार्थना की, "आप ख़ुदा के रसूल (सल्ल॰) की कोई हदीस (कथन) सुनाइए, जिसे आपने स्वयं ख़ुदा के रसूल (सल्ल॰) से सुना हो, समझा हो और जाना हो । हज़रत अबू हुरैरा ने कहा, ऐसी ही हदीस सुनाऊंगा । यह कहा और चीख़ मारकर बेहोश हो गये । थोड़ी देर के बाद बेहोशी दूर हुई तो बोले, "मैं तुमसे ऐसी ही हदीस वर्णन करूंगा जो ख़ुदा के रसूल (सल्ल॰) ने इसी घर में वर्णन की थी और उस समय मेरे और रसूल (सल्ल॰) के अतिरिक्त कोई तीसरा व्यक्ति न था" इतना कहकर फिर ज़ोर से चिल्लाए और मूर्छित हो गये । जब मुर्छा दूर हुई तो मुंह पर हाथ फेर कर कहा, "मैं तुम से ऐसी ही हदीस वर्णन करूंगा जो रसूल (सल्ल॰) ने इसी घर में बयान की थी और वहां मेरे और रसूल (सल्ल॰) के सिवा कोई न था । यह कहा और चीख़ मारकर बेहोश हो गये और मुंह के बल गिर पड़े । जो व्यक्ति पूछ रहे थे उन्होंने पकड़ लिया और देर तक संभाले रहे । जब अचेतना दूर हुई तो कहा, "ख़ुदा के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया था–

"क़ियामत के दिन जब ख़ुदा मनुष्यों के फ़ैसले के लिए उतरेगा तो सबसे पहले तीन आदमी बुलाए जाएंगे, क़ुरआन का ज्ञाता, ख़ुदा की राह में मारा जाने वाला और धनी, फिर ख़ुदा क़ुरआन के ज्ञाता से पूछेगा, "क्या मैंने तुझे क़ुरआन की विद्या नहीं दी ?" वह कहेगा, "हां, ऐ ख़ुदा।" फिर वह पूछेगा, "तूने उसके अनुसार काम किया ?" वह कहेगा, "रात-दिन उसका पाठ करता था ।" ख़ुदा फ़रमाएगा, "तू झूठा है, तू इसलिए पाठ करता था कि लोग तुझे "क़ारी" (पाठकर्ता) कहें और लोगों ने तुझे यह पदवी दी ।" फिर धनी से प्रश्न करेगा, "क्या मैंने तुझको धनी बनाकर लोगों के सामने हाथ फैलाने से बेपरवाह नहीं कर दिया था ?" वह कहेगा, "हां, ऐ ख़ुदा ?" पूछेगा, "तूने क्या किया ?" वह कहेगा, "संबंधियों की सहायता करता था ।" वह फ़रमाएगा, "तू झूठ बोलता है बल्कि इससे तेरा उद्देश्य यह था कि लोग तुझको दानकर्ता और सख़ी कहें और लोगों ने कहा, 'फिर वह व्यक्ति उपस्थित किया जाएगा जिसका ख़ुदा की राह में जान देने का दावा था । उससे प्रश्न होगा, "तू क्यों मारा गया ?" वह कहेगा, "तूने अपनी राह में युद्ध की आज्ञा दी थी मैं तेरी राह में लड़ा और मारा गया ।" ख़ुदा फ़रमाएगा, "तू झूठ कहता है बल्कि तू चाहता था कि संसार में वीर और बलवान कहलाए और यह तुझे कहा जा चुका ।"

यह हदीस बयान करके ख़ुदा के रसूल (सल्ल॰) ने मेरी रान पर हाथ मार कर फ़रमाया, "अबू हुरैरा ! सबसे पहले इन्हीं तीनों से नरक की आग भड़काई जाएगी ।"

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ एक दिन एक व्यक्ति से क़ब्र के संबंध में अपना विचार प्रकट करते हुए कहने लगे–"मुर्दे के गाड़े जाने के तीन दिन बाद उस क़ब्र में देखो तो उससे प्रेम और स्नेह होते हुए भी भयभीत हो जाओगे । तुम ऐसा घर देखोगे जिसमें अच्छे ढंग, अच्छे वस्त्र और सुगंध के पश्चात कीड़े रेंग रहे होंगे और पीप बह रही होगी और उसमें कीड़े तैर रहे होंगे, दुर्गंध फैली होगी, कफ़न गल चुका होगा ।" यह कहकर हिचकी बंध गयी और बेहोश होकर गिर पड़े । पत्नी ने पानी छिड़का तो होश में आये ।

एक रात उन्होंने क़ियामत (प्रलय के दिन) के संबंध

में कुरआन की एक आयत पढ़ी, जिसका अर्थ है–"जिस दिन मनुष्य बिखरे हुए पतिंगों के समान होंगे और पहाड़ धुनी हुई ऊन के समान।" इस आयत को पढ़कर एक चीख़ मारी और इस प्रकार गिरे मानो प्राण निकल जाएगा फिर इस प्रकार बेहोश हो गये, मानो जीवन-लीला समाप्त हो गयी। थोड़ी देर बाद होश में आये फिर नारा मार कर कूद पड़े और घर भर में दौड़-दौड़कर कहने लगे, "हाय, वह दिन जब मनुष्य बिखरे हुए पतिंगों के समान और पहाड़ धुनी हुई ऊन के समान होंगे।" प्रातःकाल तक यही अवस्था रही, फिर इस प्रकार गिरे मानो मर गये हों।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ को ईश्वर और परलोक पर जो इतना सच्चा और प्रबल विश्वास था, उसी का परिणाम था कि अरब, शाम, मिस्र, फ़ारस और इराक़ का शासक होते हुए भी आप साधु का-सा जीवन व्यतीत करते थे। आपके वस्त्र में अधिकतर एक जोड़ा रहता था उसी को धो-धोकर पहनते थे। उसमें भी पेवंद लगे होते थे। मृत्यु के समय एक कुर्ते के अतिरिक्त और कोई वस्त्र न था। उनकी पत्नी के एक भाई मुस्लिमा ने अपनी बहन फ़ातिमा से कहा कि, "लोग इनको देखने आते हैं, इनका कुर्ता मैला हो गया है दूसरा कुर्ता बदल दो।" वे सुनकर चुप रह गयीं, उन्होंने दूसरी बार कहा तो बोलीं, "खुदा की क़सम ! इस कुर्ते के अतिरिक्त और कोई कुर्ता नहीं है।"

भोजन की भी यही दशा थी। सादा रोटी और ज़ैतून का तेल यही आपका भोजन था। इसके बारे में भी आपके गुलाम का कथन है कि ख़लीफ़ा होने के पश्चात मृत्युकाल तक कभी आपने पेट भर भोजन नहीं किया। एक बार अंगूर खाने का जी चाहा पास में पैसे न थे, पत्नी से पूछा, "तुम्हारे पास एक दिरहम (चांदी का सिक्का) है ? अंगूर खाना चाहता हूं।" पत्नी ने जलकर उत्तर दिया, "तुम मुसलमानों के अमीर (अधिकारी) हो, तुम्हारे पास एक दिरहम भी नहीं है ?"

हज़रत उमर ने कहा–"हां, और नरक की हथकड़ियों से मैं इसे अधिक सरल समझता हूं।" राजकोष से कभी कोई लाभ नहीं उठाया। रात को जब तक राज कार्य करते, सरकारी दीया जलाते और उसके पश्चात उसे बुझा कर घर का दिया जलवाते, इतना भी उचित न समझते कि फ़क़ीरों के लिए जो सरकारी भोजनालय था उससे वुज़ू का पानी गर्म करा लें। आपकी अनभिज्ञता में एक महीने तक आपका सेवक सरकारी चूल्हे से वुज़ू का पानी गर्म करता रहा। आपको मालूम हुआ तो उतनी लकड़ी ख़रीद कर सरकारी भोजनालय में भिजवा दी। सरकारी अतिथि इसी भोजनालय से खाते थे। आप अतिथियों के साथ न खाते, एक बार उन्होंने कहा, आप नहीं खाते तो हम भी नहीं खाएंगे, इस पर आप खाने लगे, मगर उसका मूल्य दे देते।

एक बार बहुत से सेब आये, आप मुसलमानों को बांट रहे थे। आपका छोटा बच्चा एक सेब उठाकर खाने लगा। आपने बच्चे के मुंह से सेब छीन लिया। वह रोने लगा और जाकर मां से शिकायत की। मां ने बाज़ार से सेब मंगा दिये, घर गये तो सेब की महक मालूम हुई, पत्नी से पूछा, "फ़ातिमा ! सरकारी सेब तो घर में नहीं आये हैं ?" उन्होंने सारा हाल कह सुनाया, आपने फ़रमाया, "खुदा की क़सम! मैंने बच्चे के मुख से सेब नहीं छीना था, अपने हृदय से छीना था, लेकिन मुझे यह स्वीकार न था कि मैं मुसलमानों के हिस्से के एक सेब के बदले में अल्लाह के सामने अपनी आत्मा को भ्रष्ट करूं।"

आपकी पत्नी गर्भवती थी। उनको थोड़े से दूध की आवश्यकता थी। लौंडी सरकारी अतिथिशाले से प्याले में थोड़ा-सा दूध ले आयी। आपने पूछा, क्या है ?" उसने कहा, "बीबी के लिए दूध की आवश्यकता है। न दिया जाएगा तो गर्भ नष्ट हो जाएगा, इसलिए अतिथिशाले से ले आयी हूं।" यह सुनकर लौंडी का हाथ पकड़ा और चिल्लाते हुए पत्नी के पास लाए और कहा, "यदि गर्भ दीन-दुखियों के भोजन के अतिरिक्त किसी और वस्तु से स्थिर नहीं रह सकता तो खुदा उसे स्थिर न रखे।" आपका यह रोष देखकर पत्नी ने दूध लौटा दिया।

जनता का इतना ख़याल रखते थे कि जब से शासन पद पर नियुक्त हुए थे सारी राजकीय विशेषताओं को समाप्त कर दिया था और कहते, समस्त मुसलमानों की तरह मैं भी एक मुसलमान हूं। सरकारी पहरेदारों को अपने सम्मान में खड़े होने की मनाही कर दी थी। अपने सेवकों और सेविकाओं के साथ भी समानता का व्यवहार करते थे। एक बांदी आपको पंखा झल रही थी, उसकी आंख लग गयी। आप उसको पंखा झलने लगे, बांदी की आंख खुली तो वह घबराकर चिल्ला पड़ी। आपने फ़रमाया, घबराने की कोई बात नहीं है मेरी तरह तुम भी मनुष्य हो, तुमको भी गर्मी

लगती होगी, इसलिए जिस प्रकार तुम मुझे पंखा झल रही थीं, मैं भी तुम्हें पंखा झल रहा था ।

एक बार एक अतिथि से आप बातें कर रहे थे । रात अधिक हो गयी । सेवक पास ही सोया था, दीया झिलमिलाने लगा, अतिथि ने चाहा, सेवक को जगा दे, आपने कहा, "उसे सोने दो ।" अतिथि ने चाहा स्वयं दीया ठीक कर दें, हज़रत उमर ने उसे भी रोक दिया, कहा, "अतिथि से काम लेना सभ्यता के विरुद्ध है ।" फिर स्वयं उठकर दीया में तेल डाला और उसको ठीक करके अपनी जगह आकर कहा–

जब मैं उठा था तब भी अब्दुल अज़ीज़ का बेटा उमर था और अब भी अब्दुल अज़ीज़ का बेटा उमर हूं ।

मानवजाति में समता, न्याय, प्रेम और सुख-शांति की स्थापना के लिए ऐसे जीवन-विश्वास, ऐसे जीवन-सिद्धांत और ऐसे जीवन-विधान की आवश्यकता है जो समाज में साधारण रूप से हर व्यक्ति में दायित्व का गहरा भाव उत्पन्न कर दे, जो केवल राज नियम के भय से नहीं ईश्वर भय और परलोक भय से दायित्वपूर्ण जीवन व्यतीत करने पर अपने को बाध्य समझे ।

इस पुस्तक में इस्लामी समाज का पूरा चित्र पेश करना तो संभव नहीं, लेकिन अवसर के अनुसार इस्लामी समाज की जो रूप-रेखा उपस्थित की गयी है उसमें सहज ही देखा जा सकता है कि जीवन के पल-पल से इस्लाम के मूल विश्वास व्यक्त हो रहे हैं । कोई कार्य और कोई व्यवहार नहीं जो इन विश्वासों से प्रभावित न हो । मनुष्य ने अपनी आंखों से कभी ईश्वर को देखा नहीं लेकिन इस्लाम ने जो समाज उत्पन्न किया था उसकी स्थिति पर विचार कीजिए । तो ज्ञात होता है मानो अनदेखा ईश्वर उनके लिए प्रत्यक्ष हो गया था, उनमें से कोई नहीं जानता था कि कल क्या होगा ? लेकिन क़ियामत और परलोक पर उन्हें इतना प्रबल विश्वास था मानो परलोक उसी प्रकार उनके सामने प्रकट हो जैसे यह संसार !

इस्लामी विश्वासों और धारणाओं को सच्चे दिल से अपनाने के बाद व्यक्ति अपने एक-एक कार्य के लिए अपने को ईश्वर के सम्मुख उत्तरदायी समझता है । उसको विश्वास होता है कि वह कोई बुरा काम करके चाहे सांसारिक दंड से बच जाए लेकिन परलोक के ईश्वरीय दंड से नहीं बच सकता । और उसके विश्वास के अनुसार कार्यों के दो प्रकार नहीं कि कुछ कार्यों में तो वह ईश्वरीय आदेशों के अधीन हो और कुछ कार्यों में स्वतंत्र, वह अपने संपूर्ण जीवन से अपने को ईश्वरीय आदेशों के अधीन समझता है इसलिए जो कुछ करता है ईश्वर की आज्ञा पालन और उसकी प्रसन्नता के विचार से करता है । पूरे समाज की जीवनावस्था और कार्यनीति यही होती है । जनता के सामने भी ईश्वर के आदेश होते हैं और नेताओं और अधिकारियों के सामने भी । एक साधारण व्यक्ति भी जो कुछ करता है ईश्वर की आज्ञापालन की धारणा से करता है और एक अधिकारी भी । बल्कि अधिकारी साधारण व्यक्तियों से अपना दायित्व कहीं अधिक अनुभव करता है । ऐसा ईश-भक्त और समाज न अनाचारी हो सकता है न अत्याचारी और न अन्यायी । इसके विपरीत वह अनाचार, अत्याचार और अन्याय को मिटाने वाला होगा । संसार में चारों ओर फैली हुई पशुता और अशांति का यदि नाश हो सकता है तो ऐसे ही समाज से हो सकता है ।

इस्लामी विश्वासों के आधार पर समाज स्थापित करने के लिए विधि और कर्म निश्चित हैं । उनके अनुसार जब भी कार्य हुआ उन विश्वासों के गुण प्रकट हुए । आज भी उनके अनुसार कार्य किया जाए तो अवश्य वही गुण उत्पन्न हो सकते हैं ।

इस्लामी विश्वासों के गुणों का प्रमाण स्वयं उनके भीतर विद्यमान है । उनको किसी बाहरी प्रमाण की आवश्यकता नहीं और यदि आवश्यकता ही हो तो उसके लिए ऐतिहासिक प्रमाण पर्याप्त है । यदि इतिहास को भुलाया नहीं जा सकता तो इस्लामी विश्वासों के गुणों का इन्कार भी संभव नहीं ।

इस्लामी विश्वास और धारणाएं संपूर्ण मानवजाति की संयुक्त पूंजी है, उन पर केवल मुसलमानों ही का अधिकार नहीं है । सारी मानवजाति का कर्तव्य है कि वह इन विश्वासों के महत्व और उनकी उपयोगिता पर विचार करे । उनको दूसरे विश्वासों और सिद्धांतों के सामने रखकर जांचे-परखे और दूसरे जीवन सिद्धांतों से उनको अधिक पवित्र, मानवतापूर्ण और कल्याणकारी पाये तो उनको ग्रहण करे । किसी मूल्यवान और उपयोगी वस्तु को जिस पर दूसरों के साथ अपना भी अधिकार हो । केवल इसलिए ठुकरा देना और उससे घृणा करना कोई बुद्धिमानी नहीं है कि वह दूसरों के पास है ।

मानवता उपकारक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

● प्रो० अब्दुल्लाह भट्टी

ब्रह्माण्ड का कण-कण ईश्वर के होने का एहसास दिलाता है और अगर आप धरती पर मौजूद अरबों इन्सानों का अध्ययन करें तो हर इन्सान में कोई न कोई गुण छिपा होता है, जो अल्लाह के अस्तित्व का एहसास दिलाता है। इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए हर दौर में अल्लाह तआला ने अपने पैग़म्बरों को दुनिया में भेजा, जिन्होंने अपने-अपने दौर में अपनी ड्यूटी को निभाया और अंत में अपने रब से जा मिले। फिर मानव-इतिहास के सबसे बड़े इन्सान ने हज़रत आमिना (रज़ि०) के घर जन्म लिया।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के दुनिया में क़दम रखते ही मानव-इतिहास के नये दौर का शुभारंभ हुआ। आप (सल्ल०) के दुनिया में आते ही मानव-जीवन पर शबाब आ गया। हज़ारों सालों से देखे जाने वोले स्वप्न को स्वप्नफ़ल मिल गया। आप (सल्ल०) के आने के बाद ही इन्सानी सौभाग्य को वास्तविक अन्दाज़ा हुआ, वरना इससे पहले इन्सानों को दूसरी चीज़ों की शानो-शौकत का एहसास था। लेकिन वह अपने मान-सम्मान व प्रतिष्ठा को नहीं जानता था कि इन्सान ख़ुद क्या था। वह अज्ञानता के अन्धेरों में डूब चुका था। वह हर चमकदार ताक़तवर चीज़ से प्रभावित होकर उसको अपना उपास्य बना लेता। चांद-सितारों और सूरज को देखता तो उनमें ख़ुदा को ढूंढ़ता।

पहाड़ों की ऊंचाई और गुफ़ाओं की गहराई से प्रभावित हो जाता। शासकों, बादशाहों, महाराजों, नवाबों और सरदारों से प्रभावित होकर उन्हें बहुत आगे बढ़ा देता। पीढ़ी दर पीढ़ी इन्सान अपने आपको इस सीमा तक भूल चुका था कि हर ताक़तवर के सामने झुक जाता। भय और कमज़ोरी उसके स्वभाव का अंग बन चुका था। इन्सानों को अपनी शान, सामर्थ्य और योग्याताओं का बिल्कुल भी बोध नहीं था। वह जानवरों की तरह, जीवन व्यतीत कर रहा था।

फिर नबी करीम (सल्ल०) ने आकर बताया ऐ इन्सान! तुझे ख़ुदा ने अपनी अमानत सौंपी है। तुझे भलाई-बुराई, नेकी और बदी का गुण प्रदान किया गया है। तू स्वयं को कण माग समझता है, जबकि ख़ुदा ने तेरे अन्दर मैं व्यापक्ता रख दी है। तू स्वंय को छोटा-सा राज़ समझता है, ज़बकि ख़ुदा ने तेरे हृदय में दुनिया आबाद कर दिया है और फिर मानवता उपकारक (सल्ल०) की ही शिक्षा का परिणाम था कि वह इन्सान जो अपने ही भय व शंकाओं का बंदी था, सिमटा हुआ था, फिर उसी इन्सान के भय से पहाड़ भी सिमट कर राई का रूप धारण करने लगे। यह वही इन्सान था जो आग, सूरज, चांद, सितारों, इन्सानों, मूर्तियों, भूत-प्रेतों और अंधविश्वासों के जंगल में बुरी तरह फ़ंसा हुआ था, अब सहरा और दरिया उसके पांव की नोक पर थे।

यह आप (सल्ल०) का ही यश था कि आपके आने से पहले यूनान के दार्शनिकों के दर्शनशास्त्र भी अपनी मौत मर चुके थे, बल्कि उनकी शिक्षाओं ने रोशनी के बजाय अंधेरों की और भी अंधकारमय बना दिया था। दुनिया अज्ञानता, निर्धनता और अत्याचार के घेरे में थी, बल्कि अंधेरी गुफ़ाओं में गुम हो चुकी थी और फिर यह दुनिया अगर रोशन हुई, तो ग़ारे हिरा के गोशे से उदित होने वाले हज़रत आमिना (रज़ि०) के चांद हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से हुई।

इन्सान अपनी पहचान खो चुका था, अगर किसी ने आकर इन्सान को उसकी पहचान और स्थान बताया तो आप (सल्ल०) ने। जुल्म-अत्याचार और अज्ञानता में डूबी दुनिया को पनाह मिली, तो मानवता उपकारक (सल्ल०) से। शाही शानोशौकत इन्सानों के लिए महामारी बन चुकी थी और तथाकथित शासकों की सल्तनतें उनके निवासियों के लिए लोहे की शिकंजे बन चुकी थीं, जबकि यतीम मक्का की छोटी-सी कोठरी, पृथ्वी के छोटे-से टुकड़े पर बसने वाले पीड़ितों के लिए अपने अन्दर आसमान की तरह विशालता रखती थी।

जुल्म व अत्याचार की चक्की में सदियों से पिसे हुए ग़ुलाम, हब्श से आने वाले, रोम से आने वाले, फ़ारस से आने-वाले, नज्द से आने वाले, शांति व सुकून की तलाश में रहमते आलम (सल्ल०) की आग़ोशे रहमत में आते गए, समाते गए और अरक़म के छोटे से घर में सिमट गए। आप (सल्ल०) दुनिया में क्या आए कि बेसहारों, अनाथों और

दीन-दुखियों को आसमान मिल गया । आप जैसा न कोई था, न है, न आएगा । दुनिया भर के सारे इतिहासकार, अनुसंधानकर्ता दार्शनिक और बुद्धि जीवी अपनी मर्ज़ी के पैमाने और तराज़ू ले आएं और फिर मानवता उपकारक (सल्ल०) की ज़िन्दगी का हर पल ग़ौर से नापें-तौलें, कड़ा से कड़ा इम्तिहान लें । आप (सल्ल०) की ज़िन्दगी का हर पल, हर पहलू, हर दौर, हर रिश्ता, हर कोण से चेक कर लें, तो विरोधी से विरोधी भी आपके गुणों और उच्च चरित्र को देखकर पुकार उठेंगे, "तेरी हयाते पाक का हर लम्हा पैग़म्बर लगे ।"

यूरोपवालों और आप (सल्ल०) के इन्कारियों को हमारी तरफ़ से कोई क़ैद नहीं कि वे केवल अहदे रिसालत का ही जायज़ा लें, न ही यह पाबन्दी है कि वे आप (सल्ल०) के व्यावहारिक-जीवन पर चर्चा न करें और न ही यह शर्त है कि विरोधी नुबूवत काल से पहले के दौर को न चेक करें, न ही हम यह कहेंगे कि आप (सल्ल०) का धार्मिक जीवन जंगों में नेतृत्व, राजनैतिक जीवन, आम इन्सानों से व्यवहार, हम दावा करते हैं कि बल्कि चैलेंज करते हैं कि हज़रत हलीम सादिया (रज़ि०) के आंगन में नन्हें मुहम्मद (सल्ल०) की परवरिश और हलीमा सादिया (रज़ि०) की बकरियां चराने से लेकर मैदाने अरफ़ात में मानवधिकार की सनद प्रवान करने और दीन (धर्म) के पूर्ण हो जाने की ख़ुशख़बरी देने तक अपनी नज़रों में ले आएं और हिजरत मदीना से पहले मक्का की गलियों और काबे के प्रांगण में आप (सल्ल०) पर होने वाले अत्याचारों को याद रखें और फिर किस तरह आप (सल्ल०) को मक्का छोड़ने पर विवश कर दिया गया । आप (सल्ल०) की महबूब बीवी हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) की शाबे अबी तालिब में मृत्यु, बेटी को घायल करना और प्यारे चचा हज़रत हमज़ा (रज़ि०) को निर्दयता पूर्वक शहीद करना । इन सारे दृश्यों को मन-मस्तिष्क में रखकर सोचें कि जब आप (सल्ल०) दस हज़ार सहाबा किराम के साथ मक्का विजय के अवसर पर मक्का में प्रवेश करते हैं, काबा को बुतों से पाक करते हैं और वे सारे ज़ालिम और क़ातिल अपराधियों की भांति आप (सल्ल०) के सामने गर्दनें झुकाए खड़े नज़र आते हैं, अपने जीवन की भीख मांगते हैं और फिर आप (सल्ल०) जिस दयालुतापूर्वक सबको माफ़ कर देते हैं; यह इतिहास के माथे पर क़यामत तक के लिए अंकित हो गया है । सिर झुकाए खड़े होने वालों में वे सारे लोग थे, जिन्होंने मक्का में आप (सल्ल०) की ज़िन्दगी को दूभर करके रख दिया था ।

अपराधियों में उस्मान बिन तलहा भी खड़े थे, जिनसे आप (सल्ल०) ने नूबूवत से पहले इबादत के लिए चाबी मांगी थी, उन्होंने इन्कार कर दिया था और आज आप (सल्ल०) ने उन्हीं को बुलाकर काबे की चाबी उन्हीं के सुपुर्द कर दी जो आज भी उन्हीं के ख़ानदान के पास है । एक बार यहूदियों के बहुत बड़े विद्वान अम्र बिन हसीन अपनी किताबें के अंबार के साथ आप (सल्ल०) से बहस-मुबाहिसे के लिए आए । उनको यह घमण्ड था कि मुहम्मद (सल्ल०) तो एक उम्मी (अनपढ़) हैं, वे एक विद्वान का मुक़ाबला किस तरह कर सकते हैं और फिर आसमान और लोगों ने अजब मंज़र देखा कि अभी औपचारिक बातों के बाद बहस का आरंभ हुआ ही था कि अम्र बिन हसीन कलिमा शहादत पढ़कर मुसलमान हो जाते हैं । उनके साथियों को उनपर बहुत गुस्सा आया कि तुमने हमें अपमानित कर दिया, हमें शर्मिंदा कर दिया ।

हमारी नाक कट गयी तो अम्र बिन हसीन ने ऐतिहासिक शब्द बोला कि "मैंने जब एक ही निगाह आप (सल्ल०) के पवित्र चेहरे पर डाली तो वास्तविकता यह है कि मेरे दिल व दिमाग़ ने गवाही दी कि "यह किसी झूठे व्यक्ति का चेहरा हो ही नहीं सकता" और मैंने कलिमा शहादत पढ़ लिया ।" फिर यही आपत्ति अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि०) के नाम से प्रसिद्ध हुए ।

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

पैग़म्बरी की अवधारणा

■ अबरार अहमद

इस्लाम धर्म में अल्लाह के समस्त रसूलों और पैग़म्बरों पर ईमान लाना अनिवार्य है । अल्लाह के रसूल संसार की समस्त जातियों के पास आए थे और उन सबने इस्लाम की ही शिक्षा दी थी । अतः जिन लोगों ने अल्लाह के किसी भी रसूल का इन्कार किया अथवा रसूल से झगड़ा किया, तो अल्लाह उनका सब किया-धरा बरबाद कर देगा ।

अल्लाह के सब रसूल एक ही गिरोह के लोग थे । यदि कोई व्यक्ति उनमें से किसी एक को भी झूठा ठहराए तो मानो उसने सारे रसूलों को झुठला दिया, अतः इन्सान को सारे रसूलों को मानना बहुत ज़रूरी है । अल्लाह ने अपने रसूलों को साफ़-साफ़ निशानियों और मार्गदर्शनों के साथ भेजा और उनके साथ किताब भी अवतरित की, ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि कौन अल्लाह को देखे बिना उसकी और उसके रसूलों की सहायता करता है । जो व्यक्ति भी किसी एक रसूल पर ईमान नहीं लाया, वह अधर्मी होगा, चाहे वह अन्य सभी रसूलों को मानता हो ।

अल्लाह के सब रसूल एक ही गिरोह के लोग थे । यदि कोई व्यक्ति उनमें से किसी एक को भी झूठा ठहराए तो मानो उसने सारे रसूलों को झुठला दिया, अतः इन्सान को सारे रसूलों को मानना बहुत ज़रूरी है । अल्लाह ने अपने रसूलों को साफ़-साफ़ निशानियों और मार्गदर्शनों के साथ भेजा और उनके साथ किताब भी अवतरित की, ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि कौन अल्लाह को देखे बिना उसकी और उसके रसूलों की सहायता करता है ।

कुछ उल्लेखों के अनुसार संसार की विभिन्न क़ौमों और क्षेत्रों में कुल एक लाख चौबीस हज़ार नबी भेजे गए । उनमें से जिन के नाम अल्लाह की किताब क़ुरआन में बताए गए हैं, उन पर तो निश्चयपूर्वक ईमान लाना अनिवार्य है, बाक़ी सभी के बारे में हमें यह समझना चाहिए कि वे भी अल्लाह ही के भेजे हुए थे और सबके सब सच्चे थे ।

जिन लोगों के पास उनके रसूल खुले-खुले प्रमाण और निशानियां लेकर आए और उन्होंने कहा कि क्या ये हमारे जैसे इन्सान हमें मार्ग दिखाएंगे और ऐसा कहकर उनका इन्कार कर दिया तो उनके लिए अल्लाह ने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है । जो आदमी रसूल के विरोध पर कटिबद्ध वह होता है और स्वयं भी भटका हुआ है और दूसरों को भी सीधे मार्ग से रोकता है, तो एक दिन अल्लाह उसे निश्चय ही जहन्नम में झोंक देगा ।

यदि दस व्यक्ति एक ही बात कहें और हम उनमें से एक को भी सच्चा मान लें तो हमें सभी दसों को सच्चा मानना होगा, परन्तु इस दुनिया में ऐसे भी लोग हैं, जो रसूलों में अन्तर करते हैं, वे कहते हैं कि हम अमुक मानेंगे और अमुक को नहीं मानेंगे, तो ऐसे ही लोग पक्के अधर्मी हैं, जिनके लिए अल्लाह ने ऐसी सज़ा तैयार कर रखी है, जो उन्हें अपमानित कर देने वाली होगी ।

"जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ इन्कार की नीति अपनाते हैं, और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के बीच अंतर करें, और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी न मानेंगे और इन्कार और ईमान के बीच में एक राह निकालना चाहते हैं, वे सब पक्के अधर्मीयों के लिए हमने वह सज़ा तैयार कर रखी है जो उन्हें अपमानित कर देने वाली होगी- इसके विपरीत जो लोग अल्लाह और उनके सभी रसूलों को मानें, और उनके बीच अंतर न करें, उनको हम ज़रूर अदा बदला देंगे, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करनेवाला है ।"

(क़ुरआन, 4:150-152)

इस दुनिया में कोई उम्मत (समुदाय) ऐसी नहीं है

जिसमें अल्लाह को अपना रसूल न भेजा हो–"हमने हर उम्मत में एक रसूल भेज दिया, और उसके द्वारा सबको सूचित कर दिया कि "अल्लाह की बन्दगी करो और बढ़े हुए अवज्ञाकारी (ताग़त) ही बन्दगी से बचो ।"

(क़ुरआन, 16:36)

."और कोई समुदाय (उम्मत) ऐसा नहीं हुआ है जिसमें कोई चेतावनी देने वाला न आया हो ।" (क़ूरआन, 35:24)

अनेक ऐसी बस्तियां हैं, जिन्होंने अपने रब और रसूलों के आदेश की अवहेलना की, तो अल्लाह ने भी उन्हें कड़ी सज़ा दी–"कितनी ही बस्तियां हैं, जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के आदेश की अवहेलना की तो हमने उनसे कड़ा हिसाब जिया और उनको बुरी तरह सज़ा दी । उन्होंने अपने किए का मज़ा-चख लिया और उनका कार्य- परिणाम घाटा ही घाटा है ।" (क़ुरआन, 65:8-9)

जिन के बारे में क़ुरआन में बताया नहीं गया है कि वे अल्लाह के नबी थे या नहीं और यदि किसी धर्म के अनुयायी उन्हें अपना पेशवा मानते हैं तो उनके विरूद्ध कुछ भी कहना हमारे लिए टचित नहीं, क्योंकि हो सकता है कि वे भी अल्लाह के पैग़म्बर रहे हों, जिस प्रकार हज़रत ईसा (अलैहि०) अल्लाह के रसूल थे, मगर बाद में उनके अनुयायियों ने उनके धर्म को बिगाड़ दिया और ईसा (अलैहि०) को अल्लाह का बेटा घोषित कर दिया । अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं तथा आख़िरी किताब क़ुरआन है । पिछले रसूलों में और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) में इस दृष्टि से तो कोई अन्तर नहीं है कि आप (सल्ल०) की तरह वे सब भी सच्चे थे, अल्लाह के भेजे हुए थे तथा इस्लाम का सीधा मार्ग बताने वाले थे ।.परन्तु जो अन्तर है, वह यह है कि पिछले नबी किसी विशेष जाति की तरफ़ तथा किसी विशेष समय और विशेष भू-भाग के लिए भेजे गए थे, जबकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पूरी दुनिया के लिए तथा हमेशा के लिए नबी बनाकर भेजे गए हैं । क़ुरआन में हैं–"और (ऐ नबी) हमने तुमको सारे ही इन्सानों के लिए शुभ-सूचना देने वाला और सावधान करने वाला बनाकर भेजा है, मगर ज़्यादातर लोग जानते नहीं हैं ।"

(क़ुरआन, 34:28)

इसके अलावा पिछले नबियों की शिक्षाएं या तो सिरे से ही संसार से ग़ायब हो चुकी हैं अथवा विकृत हो चुकी हैं जबकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अवतरित क़ुरआन आज भी हमारे पास उसी रूप में मौजूद है जैसा वह आप (सल्ल०) के समय में था । इसका कारण यह है कि इसकी सुरक्षा का ज़िम्मा स्वयं अल्लाह ने अपने ऊपर ले लिया है–

"रहा यह ज़िक्र तो इसको हमने अतारा है और हम ख़ुद इसके रक्षक हैं ।" (क़ुरआन, 15:9)

चूंकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के आख़री नबी हैं तथा क़ुरआन आख़री किताब है, अत: आप (सल्ल०) के द्वारा दी गई शिक्षा पूर्ण शिक्षा है ।

"वह अल्लाह ही है जिससे अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य-धर्म के साथ भेजा है ताकि उसे दीन (धर्म) की पूरी जिंस (पूरे आकार-प्रकार) पर प्रयावी कर दे चाहे मुशरिकों (बहुदेववादियों) को यह कितना दी अप्रिय हो ।"

(क़ुरआन, 9:33)

असी कारण पिछले नबियों को दी गई शरीअतें निरस्त हो गई हैं तथा अब हमें जिस शरीअत का अनुसरण करना है, वह शरीअत वही है जो क़ुरआन में वर्णित है । अत: अब जो व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का अनुपालन करेगा उसके मानो समस्त नबियों का अनुपालन किया, क्योंकि समस्त नबियों की शिक्षाओं का निचोढ़ आप (सल्ल०) की शिक्षाओं में मौजूद हैं ।

इसके विपरीत जो व्यक्ति आप (सल्ल०) के बजाय किसी पिछले नबी का आज्ञापालन करेगा वह सही रास्ते से अटक जाएगा, क्योंकि उनकी शिक्षाएं विकृत की जा चुकी हैं । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आख़िरी नबी होने का प्रमाण क़ुरआन की यह आयत है–"(लोगों) मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, मगर वे अल्लाह के रसूल और नबियों के समायक (आख़िरी नबी) हैं, और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखनेवाला है ।" (क़ुरआन, 33:40)

अब हम पुन: देखते हैं कि जो लोग रसूल (सल्ल०) का इन्कार करते हैं, उनका तर्क यह होता है कि ये भी जो हमारी तरह इन्सान हैं । इनका जवाब क़ुरआन में इस प्रकार दिया गया है–"और ऐ नबी, तुमसे पहले भी हमने इन्सानों ही को रसूल बनाकर भेजा था जिन पर हम प्रकाशना (वह्य) दिया करते थे । तुम लोग अगर ज्ञान नहीं रखते तो किताब वालों से पूछलो । उन रसूलों को हमने कोई ऐसा शरीर नहीं किया था कि वे खाते न हों और न वे सदा जीने वाले थे ।" (क़ुरआन, 21:7-8)

(शेष पृष्ठ 20 पर)

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰)

● मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

प्यारे नबी (सल्ल॰) के आठ बच्चे हुए । चार लड़के और चार लड़कियां । इनमें हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) बहुत मशहूर हैं । दादी अम्मा अक्सर उनका हाल सुनाती हैं और कहती हैं कि तमाम दुनिया की मुसलमान औरतों के लिए हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है । मुझे बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) का हाल ख़ूब मालूम हो गया है, आप भी सुनिए :

बीवी फ़ातिमा (रज़ि॰) प्यारे नबी (सल्ल॰) की सबसे चहेती बेटी थीं उनकी अम्मी जान का नाम हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) था । हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) बड़ी नेक और इबादत गुज़ार थीं । रात-दिन अल्लाह की इबादत करतीं, घर का काम-काज खुद करतीं और हर हाल में खुश रहतीं ।

हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) का निकाह प्यारे नबी (सल्ल॰) के चचेरे भाई हज़रत अली (रज़ि॰) के साथ हुआ था । आप (रज़ि॰) के कई बच्चे हुए । उनमें हज़रत इमाम हसन (रज़ि॰) और इमाम हुसैन (रज़ि॰) बहुत मशहूर हैं ।

नबी (सल्ल॰) हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) को बहुत चाहते थे । और क्यों न चाहते, बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) थीं भी तो बहुत नेक । प्यारे नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया : हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) जन्नती औरतों की सरदार हैं । प्यारे नबी (सल्ल॰) जब कभी सफ़र से वापस आते तो मस्जिद में जाकर दो रकअत नफ़्ल पढ़ते और फिर सबसे पहले हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) के घर जाते । एक बार एक सहाबी (रज़ि॰) ने हज़रत आइशा (रज़ि॰) से पूछा, प्यारे नबी (सल्ल॰) को सबसे ज़्यादा प्यारा कौन था ? हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने जवाब दिया बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰)।

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) में बहुत- सी ख़ूबियां थीं । शर्म और हया तो मानो उनमें कूट-कूट कर भर दी गयी थी । एक बार हज़रत अली (रज़ि॰) के कहने से अपने अब्बू जान के पास गयीं कि ख़िदमत के लिए कोई ख़ादिमा (नौकरानी) मिल जाय । जाने को तो चली गयीं लेकिन वहां देखा कि कुछ लोग बैठे हुए हैं मारे शर्म के कुछ न कह सकीं, और दबे पांव वापस चली आयीं । हज़रत अली (रज़ि॰) के कहने से दोबारा फिर गयीं, मगर शर्म के मारे से कुछ न कह सकीं । अगले दिन प्यारे नबी (सल्ल॰) खुद ही बेटी के घर पहुंचे और पूछा : बेटी फ़ातिमा ! क्या ज़रूरत थी ? फ़ातिमा (रज़ि॰) चुप रहीं । हज़रत अली (रज़ि॰) भी वहां मौजूद थे । उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल ! चक्की पीसते-पीसते इनके हाथों में गट्टे पड़ गये हैं और मश्क उठाते-उठाते गर्दन में निशान पड़ गये हैं । मैंने देखा कि आपके पास कुछ लौंडी-गुलाम आये हुए हैं । मैंने ही इनसे कहा था कि प्यारे नबी (सल्ल॰) से जाकर कहो शायद कोई ख़ादिमा मिल जाय ।

नबी (सल्ल॰) की आंखों में आंसू भर आये और फ़रमाया : बेटी सब्र करो । अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो । अल्लाह के हुक्मों को पूरा करती रहो और रात को सोते वक़्त 33 बार सुब्हानल्लाह और 33 बार अल्हम्दुलिल्लाह और 34 बार अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो । बेटी जाओ, यह अमल तुम्हारे लिए ख़ादिमा से ज़्यादा बेहतर होगा ।

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) ने फ़रमाया अब्बू जान ! मैं खुदा और रसूल से इस हाल में भी खुश हूं । यही तस्बीह 'तस्बीहे फ़ातिमा' के नाम से मशहूर है ।

शर्म और हया लड़कियों का सबसे क़ीमती ज़ेवर है । बीवी फ़ातिमा (रज़ि॰) का तो यह हाल था कि हर वक़्त अपना जिस्म सिर से पांव तक बड़ी सावधानी से ढके रहतीं, पानी खुद भर-भरकर लाती, मगर क्या मजाल कि जिस्म का कोई हिस्सा खुल जाय । बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) ने ज़िन्दगी भर कभी ऐसा बारीक कपड़ा नहीं पहना जिससे जिस्म की नुमाइश हो । ज़िन्दगी में तो आप (रज़ि॰) हमेशा अहतियात करती रहीं, मगर आख़िरी वक़्त में जब बीमार पड़ीं तो अक्सर फ़िक्रमंद रहतीं कि मरने के बाद कहीं लाश की बेपर्दगी न हो, क्योंकि उस वक़्त तक औरतों का जनाज़ा भी मर्दों ही की तरह खुला हुआ जाता था ।

बीबी असमा (रज़ि॰) से बातों-बातों में ज़िक्र आया । उन्होंने फ़रमाया, 'बहिन ! हबश में यह रिवाज है कि औरतों

के जनाज़े पर लकड़ी खड़ी करके पर्दा डाल देते हैं।' फिर बीबी असमा (रज़ि॰) ने खजूरों की टहनियां लीं और पर्दा तानकर दिखाया। बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) को यह तरीक़ा बहुत पसन्द आया, बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) के इन्तिक़ाल के बाद उनके जनाज़े पर भी उसी तरह पर्दा ताना गया। और उसी वक़्त से औरतों के जनाज़े पर पर्दा लगाया जाने लगा।

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) को अपने अब्बू जान से बहुत मुहब्बत थी। वे दिल और जान से आप (सल्ल॰) का कहना मानतीं, हर काम में आप (सल्ल॰) की ख़ुशी का ख़्याल रखतीं और कभी कोई ऐसा काम न करतीं, जिससे प्यारे नबी (सल्ल॰) नाराज़ हों।

एक बार नबी (सल्ल॰) सफ़र से लौटे तो हज़रत फ़ातिमा (रज़ि॰) ने ख़ुशी के मारे घर सजाया, दरवाज़े पर रंगीन पर्दा लटकाया, और अपने दोनों बेटों इमाम हसन (रज़ि॰) और इमाम हुसैन (रज़ि॰) को चांदी के कंगन पहनाये। नबी (सल्ल॰) अपनी आदत के मुताबिक़ सबसे पहले बेटी से मिलने के लिए गये। दरवाज़े पर जाकर यह सब कुछ देखा तो बिना मिले वापस चले आये। बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) ने अपने अब्बू जान की नाराज़गी का हाल सुना तो बहुत दुखी हुईं, आंखों से आंसू जारी हो गये। पर्दा और कंगन उतरवाये और अपने अब्बू जान के पास कहला भेजा कि मैंने उनको सदक़ा कर दिया है। आप जिनको चाहें दे दें। आप (सल्ल॰) ने कंगन बेच डाले और यह रक़म उन ग़रीब सहाबा (रज़ि॰) पर ख़र्च कर दी जो दीन का इल्म सीखने के लिए मस्जिदे नबवी के चबूतरे पर रहा करते थे।

बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) की इसी दीनदारी, सादगी और शर्म व हया का असर था कि उनकी गोद में पलकर हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि॰) जैसे बहादुर मुजाहिद उठे, जिन्होंने दीन की लाज रखने के लिए अपनी जान तक क़ुरबान कर दी।

नबी (सल्ल॰) जब सख़्त बीमार पड़े तो आप (सल्ल॰) ने बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) को बुलवाया। जब वे आ गयीं तो क़रीब बुलाकर आप (सल्ल॰) ने कान में कुछ बातें कीं। वे रोने लगीं। फिर बुलाकर कान में कुछ कहा तो हंस पड़ीं। हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) से पूछा तो कहने लगीं, पहली बार तो अब्बू जान ने फ़रमाया, मैं इस बीमारी में अब तुमसे जुदा होने वाला हूं, जब मैं रोने लगी तो आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, फ़ातिमा पूरे ख़ानदान में तुम मुझसे सबसे पहले आकर मिलोगी, तो हंसने लगी। बीबी फ़ातिमा (रज़ि॰) नबी (सल्ल॰) के बाद छह महीने तक ज़िन्दा रहीं और 3 रमज़ान 11 हिजरी को दुनिया से हमेशा के लिए चली गयीं।

पैग़म्बरी की अवधारणा

(पृष्ठ 18 का शेष)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने पिछले नबियों की शिक्षाओं से इन्कार नहीं किया, बल्कि जो शिक्षाएं विकृत कर दी गई थीं उन्हें सुधारा और जो शिक्षाएं विकृत नहीं की गई थीं, उनकी पुष्टि की। अत: क़ुरआन में है—"ऐ किताब वालों, हमारा रसूल तुम्हारे पास आ गया है जो ईश्वरीय ग्रन्थ की बहुत-सी उन बातों को तुम्हारे सामने खोल रहा है जिन पर तुम परदा डाला करते थे, और बहुत सी बातों को जाने भी देता है। तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से प्रकाश आ गया है और एक ऐसी स्पष्ट किताब जिसके द्वारा अल्लाह उन लोगों को जो उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हैं सलामती की राहें बताता है और अपनी अनुमति से उनको अंधेरों से निकाल कर उजाले की ओर लाता है और सीधे मार्ग की तरफ़ उनका पथ-प्रदर्शन करता है।" (क़ुरआन, 5:15-16)

अत: अल्लाह के समस्त रसूलों ने लोगों को नेकी का आदेश दिया तथा उन्हें बुराई से रोका।

दरअस्ल रूसलों को भेजे जाने का कारण यह था कि इन्सान अपनी बुद्धि से अल्लाह के आदेशों को नहीं जान सकता और न ही वह ध्यान-योग करके अल्लाह से साक्षात्कार करके उसकी मर्ज़ी को जान सकता है।

इसीलिये अल्लाह ने रसूलों का नियम बनाया। इस नियम के अनुसार अल्लाह इन्सानों में से ही किसी एक श्रेष्ठ इन्सान को अपना रसूल चुन लेता है तथा फ़रिश्ते के ज़रिए से उस पर अपनी वह्य (प्रकाशना) भेजता है।

"हमने जो भी रसूल भेजा है, इसीलिए भेजा है कि अल्लाह की अनुमति से उसकी आज्ञा का पालन किया जाए।" (क़ुरआन, 4:64)

हर रसूल के दुनिया से जाने के पश्चात लोगों ने उनकी शिक्षाओं को विकृत कर दिया, तब अल्लाह ने अन्त में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को भेजा, जिन्होंने उस सत्य को खोल दिया जिसे लोग छिपाते फिरते थे, तथा क़ुरआन की रक्षा का ज़िम्मा अल्लाह ने स्वयं अपने ऊपर ले लिया, ताकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के इस दुनिया से परदा फरमाने के बाद क़ुरआन की शिक्षा को विकृत न किया जा सके।

सकारात्मक सोच रखें सदा

अपने बारे में आपकी सोच आपके व्यक्तित्व पर गहरा असर डालती है । मन में पनपती हीन भावना के कारण आपकी यह सोच कि मुझसे कुछ नहीं होगा या मैं किसी काम का नहीं, आपको वास्तव में नाकारा बनाने पर आमादा हो जाती है जबकि आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच कुछ कर गुज़रने को प्रोत्साहित करती है ।

मीना लालवानी के पास ख़ूबसूरत बग़ीचा था । सुबह उठकर वह जैसे ही बाग़ में जाती, माली की आलोचना शुरू कर देती । ये आदमी बहुत कामचोर है, इधर सूखे पत्ते पड़े हैं, ये क्यारी साफ़ नहीं हुई, वो गमला उधर रखना था, ये पाइप बाहर ही छोड़ गया । कहने का अभिप्राय यह कि उनकी सुबह की शुरुआत ही नकारात्मक सोच लेकर होती।

वहीं मीना के पड़ोसी मिस्टर बालकृष्ण जडेजा अपने घर से उनके बाग़ के फूल देखकर बहुत ख़ुश होते और अपनी पत्नी को भी दिखाते हुए कहते, "मीना जी का माली अपने काम में बहुत एक्सपर्ट है । क्या बग़ीचा मैंटेन किया उसने । देखकर दिल ख़ुश हो जाता है ।"

अगर किसी दुश्मनी की बात की जाए तो यह एक कड़वा सच है कि आप लाख उसके बारे में न सोचना चाहें पर ये स्ट्रांग फ़ीलिंग आपको पीछा नहीं छोड़ती । इसका इलाज है कि आप दुश्मन के गुण देखिए, अवगुण भूल जाइए । अपने से मिलने का रास्ता तभी साफ़ होगा । जब यह बड़ा 'ब्लॉक' हटेगा । नकारात्मक सोच को दिमाग़ से निकाल दें । "मैं बहुत गुस्सैल हूं । क्या करूं मेरा गुस्से में अपने पर क़ाबू नहीं रहता । ऐसा कहते रहने से कोई फ़ायदा नहीं होने वाला । इसके बजाए उस समय को, जब आप शांत रहती हैं, ख़ुश रहती हैं, धैर्य रखती हैं, महत्त्व देते हुए यही समझें कि आप वास्तव में धैर्यवान और ख़ुशमिज़ाज ही हैं ।

वर्तमान में जीना सीखें । आप कल क्या थीं अथवा कल क्या बनेंगी, यही सोचते रहने के बजाए वर्तमान को शिद्दत से जीएं । नफ़ा-नुक़सान जीवन में चलता रहता है। नुक़सान को लेकर हताश न हों ।

वसीम ने दो लाख रुपये का प्लॉट तीन लाख में बेच दिया, लेकिन जब उसे पता चला कि वही प्लॉट आगे वाले ने चार लाख में बेच दिया तो उसे अपने एक लाख का फ़ायदा तो याद न रहा, उसके लिए यह एक लाख का नुक़सान ज़्यादा अहम बन गया । उसका मूड ख़राब रहने लगा, जबकि उसकी पत्नी आइशा एक लाख के फ़ायदे को लेकर बेहद उत्साहित थी । वह मन ही मन प्लॉट बनाती कि वह इन पैसों से कौन-कौन-सी इच्छाएं पूरी कर सकती है।

यह सोच कि आपकी कोई हंसी उड़ता है, अगर आपको डिप्रेस्ड करती है, तो यह हंसी उड़ाने वाले को सशक्त बनाती है, क्योंकि वह आपको डाउन करना चाहता था और आपने खुद उसका मक़सद पूरा कर दिया । अतः ऐसा न होने दें । यही सोचें कि चूंकि वह आप जितना समझदार नहीं है, इसलिए उपहास उड़ाकर अपनी खुंदक निकाल रहा है ।

हर पल यूं जिएं कि मानो आख़िरी पल हो । यह सोच जीवन को नया रंग देती है । जीवन में ऊब मिटाती है, जो चुपके से कभी ने कभी हर जीवन में घुसपैठ करती रहती है । हमेशा सकारात्मक तरीक़े से सोचें, तभी जीवन में आगे बढ़ा जा सकता है । यह सोचकर कि हमारे पास जो अहम चीज़ें हैं, वे अगर न होतीं, दृष्टि न होती, श्रवण-क्षमता न होती, रोटी के लिए पैसे न होते, पीने को पानी न होता, ये हवा-धूप, दिन का उजाला और साथी, रिश्तेदार न होते तो क्या होता, आपको ज़रूरी इन सब चीज़ों का महत्त्व मालूम होगा और मन यह सोचकर खुशी से भर उठेगा कि आप कितनी खुशक़िस्मत हैं ?

अपने को स्वीकारें । अपने गुणों को विनम्रता के चलते नकारें नहीं, बल्कि उन्हें खुलकर सामने रखें और बार-बार रखें । इससे आपके अंदर नकारात्मक भावों का ज़ोर नहीं बढ़ेगा । प्रैक्टिकल होना बहुत ज़रूरी है । हवाई क़िले बनाते रहने से काम नहीं चलेगा । अपनी योग्यता को जानकर ही किसी ख़ास क्षेत्र में पैर रखें । मिज़ाज आपका शायराना है, लेखन प्रतिभा है, फ़िर आप लैब में क्या करेंगे ? अपनी दिमाग़ी लैब में घुसिए, और शब्दों से कल्पनाओं से तरह-तरह के प्रयोग करें । कामयाबी आपको वहीं मिल सकती है । हमारी सही सोच ही हमारी क़िस्मत बनाती है । जब हम सकारात्मक सोच को सकारात्मक कार्यों में परिवर्तित करते हैं, तो मानकर चलें कि हमें स्वयं अपना विकास करना है।

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL

INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL

INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright
Future & Best Economic
Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE
INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)

Chairman
Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

मुस्लिम काल में सहिष्णुता

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

धार्मिक सहिष्णुता और सांप्रदायिक सद्भाव का फूल मुस्लिम शासन काल में अपने पूरे रंग, सौन्दर्य और सुगंध के साथ खिला हुआ था । सांप्रदायिक सौहार्द्र का शांतिप्रद रंग समाज में बहुत गहरा था । हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई इत्यादि सारे धर्मावलंबी प्रेम-भाव के साथ परस्पर मिल-जुलकर शांतिपूर्वक रहते थे । किसी भी प्रजा के साथ किसी प्रकार का भी धार्मिक भेद-भाव नहीं किया जाता था । बादशाह सभी धर्मों और उनके अनुयायियों के साथ उदारता और सहिष्णुता का व्यवहार करता था । इस बात की पुष्टि एक अंग्रेज़ पादरी फ़ादर टैरी के कथन से होता है । वह जहांगीर के शासन काल के सांप्रदायिक सद्भाव और सहिष्णुता के बारे में लिखता है, "सभी धर्मों के साथ सहिष्णुता का व्यवहार होता है और उनके पुरोहितों का आदर किया जाता है । मुझको ही मुग़ल (बादशाह) ने स्वयं फ़ादर कहकर पुकारा और अनेक कृपापूर्ण शब्दों का प्रयोग किया तथा उच्चतम अमीरों में स्थान दिया ।"[1]

अर्थात् जहांगीर के शासन काल में सभी धर्मों के लोग मेल-जोल के साथ प्रेम-भाव से शांतिपूर्वक रहते थे । जहांगीर अपनी सल्तनत की प्रजा के साथ किसी प्रकार का धार्मिक भेद-भाव नहीं करता था । वह सभी धर्मों के प्रति उदार और सहिष्णु था । उसकी न्यायप्रियता आज भी कहावत के रूप में हमारे बीच प्रचलित है ।

शाहजहां (1627-1658) : शाहजहां एक न्यायप्रिय बादशाह था । एक अंग्रेज़ इतिहासकार ट्रेवर्नियर उसके शासन के बारे में लिखता है, "शाहजहां का शासन ऐसा था, जैसा एक पिता का अपने परिवार तथा बच्चों पर होता है ।"[2]

वस्तुतः शाहजहां अपने निष्पक्ष न्याय के लिए प्रसिद्ध था और अपराधियों को कठोर दण्ड देने में भी नहीं झिझकता था । दरबार के दिन वह अपने महल में एक विशिष्ट न्यायालय की व्यवस्था करता था और सभी की फ़रियाद सुनता था । वह क़ाज़ी के फ़ैसलों के विरुद्ध भी अपील



सुनता था और बिना किसी पक्षपात के न्याय करता था । कड़े क़ानूनों एवं कठोर दण्डों के कारण अपराध बहुत कम होते थे ।

औरंगज़ेब (1658-1707) : औरंगज़ेब ने न्याय विभाग में सबसे अधिक सुधार लाया था और दो लाख रुपये व्यय करके 'फ़तावा-ए-आलमगिरी' नामक एक विशाल ग्रंथ तैयार करवाया, जिससे न्यायाधीशों को बहुत सुविधा हुई ।

मुस्लिम शासन काल में भारत में अदालतें भी अधिकतर धर्म से प्रभावित हुए बिना निष्पक्ष रूप में अपना कार्य करती थीं । मुस्लिम शासन में क़ानून का मुख्य स्रोत शरीअत (क़ुरआन और सुन्नत) थी; क्योंकि क़ुरआन न्याय का घोषणापत्र और मानवता का उद्धारक है । इसमें सबके साथ समान न्याय का सिद्धांत मौजूद है । धार्मिक मामलों में आम तौर पर मुसलमानों के मुक़दमों के फ़ैसले मुफ़्तियों और ग़ैर-मुस्लिमों के मुक़दमों के फ़ैसले उनके अपने धर्म के पुरोहितों द्वारा सुनाए जाते थे ।

प्रायः सभी मुस्लिम बादशाहों ने न्याय और न्यायालय की समुचित व्यवस्था करने के आदर्श को स्वीकार किया । वे स्वयं भी बड़े से बड़े और छोटे से छोटे फ़रियादी तक की

फ़रियाद सुनने को प्रस्तुत रहते थे और उनको 'दूध का दूध और पानी का पानी' जैसा इन्साफ़ दिलाने की कोशिश करते थे । फ़ैसला सुनाते समय इस बात की पूरी कोशिश करते थे कि फ़ैसले में मानवीय भूल कम से कम हो ।

डॉक्टर बिपिन बिहारी सिन्हा मुस्लिम बादशाहों की न्यायप्रियता का उल्लेख करते हुए कहते हैं, "जहांगीर की न्यायप्रियता आज भी कहावत के रूप में हमारे बीच प्रचलित है । औरंगज़ेब तथा शाहजहां बुधवार के दिन न्याय करते थे । सम्राट औरंगज़ेब ने यह नियम बनाया था कि सप्ताह में एक बार वह दस साधारण व्यक्तियों की फ़रियाद सुनेगा और उन्हें अपने पास बुलाकर न्याय करेगा । अकबर तथा औरंगज़ेब ने न्यायाधीशों को ईमानदार, चरित्रवान, परिश्रमी और निष्पक्ष रखने की ओर विशेष ध्यान दिया ।"[3]

मुस्लिम बादशाहों की न्याप्रियता के बारे में लिखते समय यह बात ध्यान में रहनी चाहिए कि वे मुस्लिम बादशाह ज़रूर थे, इस्लाम के प्रतिनिधि, समाज-सुधारक, उपदेशक या धर्म-प्रचारक नहीं थे । बादशाहत की अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर काम अंजाम देना उनकी मजबूरी थी और राजनैतिक दांव-पेंच की दृष्टि से कई बार कठोर क़दम उठाना ज़रूरी होता था और मानवीय भूल-ग़लतियों की संभावना भी हो सकती थी । इन सबके बावजूद यह सच्चाई है कि पूरी दुनिया की तथाकथित सभ्य और उन्नत जातियां उनके जैसे न्यायनिष्ठ, प्रजापालक और सदाचारी जनप्रतिनिधि आज तक दुनिया के सामने पेश नहीं कर सकी हैं और न ही इसकी संभावना है ।

मुस्लिम बादशाहों ने न्याय और इन्साफ़ की अनूठी मिसाल पेश की है । इसलिए अनेक बादशाहों की न्यायप्रियता की मिसाल आज भी दी जाती है और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मुस्लिम शासन काल में मानवता की सेवा में बड़े-बड़े काम हुए हैं । ज्ञान एवं साहित्य, विकास एवं निर्माण, दर्शन एवं चिन्तन, विज्ञान एवं अन्वेषण इत्यादि क्षेत्रों में धीरे-धीरे विकास होता रहा, प्रगति होती रही और लोगों ने बड़े-बड़े कारनामे अंजाम दिए हैं और जहां तक समाज को सुधारने, इन्सान को सभ्य और शिष्ट बनाने, उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों को विकसित करने, जुल्म एवं अत्याचार को रोकने, मज़लूमों, मजबूरों एवं निस्सहाय लोगों की सहायता करने का सवाल है, मुस्लिम शासन काल आज के आक्रामक रूप धारण करते जा रहे काल जैसा कभी नहीं रहा । प्रजा-पालन, जन-कल्याण और जनसेवा में मुस्लिम बादशाह हमेशा अग्रणी रहे हैं । पक्षपात और पूर्वाग्रह के रंगीन ऐनक पहने मुट्ठी भर लोगों को मुस्लिम शासन काल में सब कुछ काला ही काला नज़र आता है ।



अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी लिखते हैं कि सारी दुनिया के धर्मों में केवल इस्लाम ही ऐसा धर्म है, जिसने यह दर्शन दुनिया के समक्ष पेश किया कि धर्म यक़ीन (विश्वास करने) का नाम है और यक़ीन तलवार की धार या भाले की नोक से नहीं पैदा किया जा सकता ।[3]

कड़वा सच : 'फूट डालो और राज करो' की विषैली नीति के अंतर्गत अंग्रेज़ों ने हिन्दू-मुस्लिम के बीच फूट का जो ज़हरीला बीज बोया, वह आज एक विशाल विष-वृक्ष बन चुका है, जिसके कड़वे-कसैले फल विभिन्न रूपों में हमें आए दिन चखने पड़ते हैं । सांप्रदायिकता का प्रायोजित दानव समय-समय पर, ख़ासकर चुनाव-पूर्व परिस्थितियों में तांडव नृत्य करने लगता है और उसकी मानव-विरोधी घिनौनी हरकतों से इन्सानियत कलंकित और शर्मसार होने लगती है । घृणा, घृणा को जन्म देती है और घृणा पैदा करके शांति की कामना करना मूर्खता नहीं तो क्या है ?

दुखद तथ्य यह है कि आज भी मुस्लिम बादशाहों का चरित्र-हनन करनेवाली वर्चस्ववादी, सांप्रदायिक एवं स्वार्थी शक्तियां इतिहास को तोड़ने-मरोड़ने और उसे ग़लत रंग देने में लगी हुई हैं । वर्चस्ववादी शक्ति सत्ता पर क़ब्ज़ा करने के लिए नफ़रत की राजनीति का हथियार ही इस्तेमाल करती हैं ।

लाला लाजपत राय मुस्लिम शासकों की शांतिप्रियता के बारे में लिखते हैं–

"मुसलमान अच्छे थे या बुरे–उनमें एक बात तो थी और वह यह थी कि उन्होंने हिन्दुस्तान को अपना वतन बना लिया, हिन्दुओं पर भरपूर भरोसा किया । उनको उच्चतम पदों पर नियुक्त किया और कभी क़ौमी नफ़रत उनकी कार्रवाई का उत्प्रेरक न होती थी ।"[4]

मशहूर समाचार-पत्रिका 'केसरी' (लाहौर) मुस्लिम

शासन काल के बारे में लिखती है–

"इस्लामी सल्तनत जहां भी क़ायम हुई, उसका सबसे बड़ा प्रभाव सांस्कृतिक जीवन पर पड़ा । यही कारण था कि पुराकालीन हिन्दू लोग मुसलमानों के शासन में न केवल सुख-शांति और सुरक्षा के साथ रहे, बल्कि सल्तनत के अन्तरंग अधिकारी और मूलाधार बने रहे । किसी मुस्लिम शासक ने हिन्दुओं की सामाजिक जीवन-प्रणाली, क़ानून और धर्म को बरबाद करने की कोशिश नहीं की ।"[5]

इसी प्रकार एक फ्रांसिसी पर्यटक डॉक्टर बनरियर ने मुस्लिम बादशाहों द्वारा हिन्दू पर्सनल लॉ को सुरक्षित रखने और उसमें हस्तक्षेप न करने के बारे में लिखा है–

"मुस्लिम शासकों की शासन-प्रणाली का यह एक अंग है कि वे हिन्दुओं की परंपराओं-प्रथाओं में हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझते और उन्हें अपनी धार्मिक परंपराओं को पूरी करने की स्वतंत्रता देते हैं ।"[6]

आज के आक्रामक माहौल में क्या इसकी कल्पना की जा सकती है ? सभ्यता-संस्कृति के वर्तमान संघर्ष कालीन संक्राति काल में, जबकि वर्चस्ववादी शक्तियां पूरी दुनिया में एकजुट होकर मुसलमानों के ख़िलाफ़ संघर्षरत हैं और उपभोक्तावादी विलासी वर्ग को भोग-विलासिता की मदिरा पिलाकर उपभोक्तावादी संस्कृति के मायावी दलदल में फंसाकर, लोगों को उल्लू बनाकर सतत् सफलतापूर्वक अपना स्वार्थ साधती जा रही हैं । कमज़ोरों को और कमज़ोर बनाकर अपना आर्थिक गुलाम बनाती जा रही हैं और उनका साम्राज्य विस्तार लगातार होता जा रहा है । यह कब और कहां जाकर रुकेगा ? क्या मुस्लिम शासन काल जैसी स्वतंत्रता और न्याय यहां की प्रजा को कभी नसीब होगी या वह कुछ प्रतिशत स्वार्थी लोगों की दास बनकर रहने को मजबूर हो जाएगी ?

मशहूर इस्लामी विद्वान और विचारक मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां इस्लामी क़ानून के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं, "इस्लाम अपने अनुयायियों को ऐसे योद्धा के रूप में देखना चाहता है, जो बुराई के विरुद्ध निरन्तर संघर्षरत हों । उनका संघर्ष न्याय और शांति की स्थापना के लिए हो, बिगाड़ और उपद्रव फैलाने के लिए न हो ।"[7]

भारत में मुस्लिम काल के शासकों ने इस्लाम के इसी लक्ष्य को सदा ध्यान में रखकर शासन-प्रशासन का काम अंजाम देने की कोशिश की । शांति, समानता, मानव-एकता, भाईचारा और न्याय का शासन स्थापित करना ही उनका मक़सद था । इस्लामी क़ानून ही देश का क़ानून था, जिसमें दीवानी और फ़ौजदारी दोनों तक के क़ानून शामिल थे । हां, ग़ैर-मुस्लिमों के शादी-विवाह, विरासत, जायदाद और मिलकियत के मामले उनके पारिवारिक क़ानून के अनुसार तय किए जाते थे । अंग्रेज़ों ने 1765 ई॰ में भारतीय विधि-व्यवस्था में आंशिक परिवर्तन किए । इस व्यवस्था में अंग्रेज़ जज, क़ाज़ी, मुफ़्ती और पंडितों की सहायता से मुक़दमों के फ़ैसले सुनाते थे । 1862 ई॰ इस्लामी फ़ौजदारी क़ानून की जगह 'इंडियन पैनल कोड' और 1872 ई॰ में इस्लामी गवाही क़ानून की जगह भारतीय साक्ष्य अधिनियम लागू किए गए, जो आज तक लागू हैं । इसमें भी मुसलमानों और अन्य दूसरी जातियों के पर्सनल लॉ को नहीं छेड़ा गया, भले ही इसे निकाह, तलाक़, हिबा, विरासत, जायदाद, मिलकियत इत्यादि तक सीमित कर दिया गया ।

इस प्रकार अंग्रेज़ों के शासन काल से पहले भारत में– मुहम्मद बिन क़ासिम से लेकर बहादुरशाह ज़फ़र तक– मुस्लिम शासित परिक्षेत्र में शरीअत-क़ानून ही लागू था, जिसके गुणों का अन्दाज़ा लॉर्ड विलियम बेंटिक के कथन से बख़ूबी हो जाता है । लॉर्ड विलियम बेंटिक ने मुस्लिम बादशाहों की न्यायप्रियता और अंग्रेज़ों की स्वार्थपूर्ण शोषक नीति का वर्णन इन शब्दों में किया है–

"प्राय: मुसलमानों का शासन काल हमारे शासनकाल से अच्छा रहा । उन्होंने जिस देश को जीता, उसे अपना वतन बना लिया । उन्होंने स्थानीय नागरिकों से शादियां कीं । उनके साथ घुल-मिल गए । उन्होंने उन्हें तमाम सहूलतें और सम्मान प्रदान किए । यहां तक कि शासक और शासित के हितों में कोई अन्तर नहीं रहा । इस प्रकार हमारी नीति बिल्कुल इसके विपरीत और प्रतिकूल रही–स्वार्थपूर्ण, बेजान और संवेदनहीन ।"[7]

संदर्भ :

1. मुग़ल भारत, पृ॰ 383
2. इस्लाम, मुसलमान और ग़ैर-मुस्लिम, संस्करण-2011 ई॰, मधुर संदेश संगम, नई दिल्ली-25 पृ॰ 21
3. वही, पृ॰ 23
4. वन्दे मातरम्, 07 जुलाई, सन् 1920 ई॰
5. केसरी, लाहौर, 09 सितम्बर, सन् 1923 ई॰
6. इस्लाम में उदारता, मतीन तारिक़ बागपती, एम॰ एम॰ आई॰ पब्लिशर्स, संस्करण : सितम्बर 2005, पृ॰ 154
7. वही, पृ॰ 160

बढ़ते अपराध की प्रभावी रोकथाम

■ मौलाना मुहम्मद जिरजीस करीमी

निस्संदेह इन्सान के बुनियादी हित अनेक हैं और इन हितों को विभिन्न वर्गों में रखा जा सकता है । संभव है कि एक हित दूसरे हित से बड़ा हो, दूसरा तीसरे से अधिक प्रभाव रखता हो ।

अत: इस्लामी क़ानून ने इसका ध्यान रखा है । इसलिए उसमें अपराध का वर्गीकरण किया गया है और इसी लिए उसमें इनकी सज़ाओं में भी अन्तर है । इस्लामी क़ानून में मूल रूप से अपराध तीन प्रकार के हैं–

1. वे अपराध जिनकी सज़ा अल्लाह या उसके रसूल की ओर से सुनिश्चित कर दी गयी हो, जिनमें न कमी की जा सकती हो और न बढ़ाया जा सकता हो । वे ये हैं–व्यभिचार, व्यभिचार का आरोप, शराब पीना, चोरी-डकैती इत्यादि ।

2. वे अपराध जिन पर क़िसास (मृत्युदंड) या दीयत (जुर्माना) अनिवार्य होती हो वे ये हैं–जान-बूझकर हत्या करना, हत्या का संदेह, भूलवश हत्या करना, जान-बूझकर या अनजाने में घाव लगाना या किसी अंग को निष्क्रिय कर देना ।

3. वे अपराध जिनकी सज़ाएं अल्लाह और उसके रसूल की ओर से निर्धारित न की गयी हों, बल्कि वर्तमान शासक और न्यायाधीश के विवेक पर छोड़ दिया गया हो कि परिस्थिति के अनुसार सज़ा निर्धारित करे, वे ये हैं–क़िसास की सज़ा को लागू करने के लिए जो शर्तें तय की गयी हैं उन शर्तों के पूरा न होने पर अपराधी के लिए सज़ा सुनिश्चित करना, इसके अतिरिक्त रिश्वत, सूद, गाली-गलौज, जनहित के विरुद्ध कार्य, आगज़नी, धोखाधड़ी, जालसाज़ी, ग़बन, आपराधिक सहयोग इत्यादि मामलों में सज़ा निर्धारित की जाएगी ।

अपराध साबित करने की शर्तें

ऊपर अपराध के विभिन्न प्रकार बताए गये हैं, उनमें से किसी भी अपराध को किसी के ख़िलाफ़ साबित करने के लिए निम्नलिखित तीन शर्तों का होना ज़रूरी है–

1. पहली शर्त यह है कि जिस अपराध को साबित किया जाए उस पर क़ुरआन और सुन्नत का स्पष्ट आदेश मौजूद हो यानी क़ुरआन और सुन्नत में उसको अपराध बताया गया हो ।

2. दूसरी शर्त यह कि अपराधी ने वास्तव में अपराध किया हो । केवल अपराध की नीयत या इरादा ज़ाहिर करने मात्र से वह अपराधी नहीं माना जाएगा ।

3. तीसरी शर्त यह है कि अपराधी क़ानूनी रूप से जवाबदेह हो और उन स्थितियों में से किसी भी स्थिति का शिकार न हो जो सज़ा को स्थगित कर देती हैं, जैसे–पागलपन, कमउम्री, भूल, अज्ञानता, विवशता, जान-माल की रक्षार्थ ।

सज़ा की इस्लामी धारणा

जो सज़ा अपराधी को अपराध से बाज़ रखने के लिए दी जाए उसको शरीअत में 'उक़ूबत' अर्थात यातना कहा जाता है । इसके तीन रूप हैं–हद, क़िसास, और ताज़ीर । 'हद' उस सज़ा को कहते हैं जो क़ुरआन और सुन्नत के स्पष्ट आदेशों के माध्यम से निर्धारित कर दी गयी हो, जैसे–चोरी की सज़ा हाथ काट देना,[1] व्यभिचार की सज़ा कोड़े मारना या पत्थर मारना । व्यभिचार का आरोप लगाने की सज़ा कोड़े मारना और शराब पीने की सज़ा चालीस या अस्सी कोड़े मारना ।

कुछ धर्मशास्त्रियों ने 'क़िसास' अर्थात हत्या के बदले हत्या को भी 'हद' के बराबर माना है । इसलिए कि उसकी सज़ा भी निर्धारित होती है, जैसे–क़त्ल की सज़ा क़त्ल (यानी जान के बदले जान), कान के बदले कान, नाक के

1. एक हदीस में मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह ने ऐसे चोर पर लानत भेजी जो अंडा या रस्सी (यानी मामूली सामान) चुराता है, जिसके बदले उसका हाथ काट दिया जाता है । (बुख़ारी) फिर भी इस्लामी धर्मशास्त्रियों ने हाथ काटने के लिए कम से कम मात्रा का निर्धारण किया है । जो चौथाई दीनार या तीन दिरहम (अरबी मुद्रा) है । साथ ही कुछ ऐसी वस्तुओं की चोरी पर जो जल्दी ख़राब हो जाने वाली हों, जैसे–सब्ज़ी, फल इत्यादि, के लिए हाथ काटने की बजाए अदालत द्वारा सज़ा तय की जाएगी ।

इस्लामी शिक्षाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

बदले नाक, आंख के बदले आंख, चोट के बदले चोट और ज़ख़्म के बदले ज़ख़्म । 'ताज़ीर' उन सज़ाओं को कहते हैं जो न्यायाधीश (या सरकार क़ानून बनाकर) अपराध, अपराधी और वर्तमान परिस्थिति के अनुरूप निर्धारित करता है, जैसे झूठी गवाही देने वाले या दूसरों के घर में ताक-झांक करने वाले को कोड़े मारना, क़ैद करना या जुर्माना लगाना या डांट-फटकार करना इत्यादि ।

सज़ाओं में अन्तर

इस्लाम में सज़ाओं में अन्तर है । उसकी बुनियादी अपराध के स्वरूप में अन्तर होना है । यानी अपराध का जो स्वरूप होगा उसी के अनुसार सज़ा होगी । इस्लामी क़ानून में क़िसास सभी सज़ाओं की बुनियाद है । यानी जो व्यक्ति दूसरे को जितना कष्ट और दुख पहुंचाएगा, उसको भी उतना ही कष्ट दिया जाएगा । लेकिन यह बात भी ध्यान में रहे कि किसी अपराध के स्वरूप (या जघन्यता) के निर्धारण में तीन बातों को ज़रूर ध्यान में रखा जाएगा–

1. अपराधी ने अपने अपराध के माध्यम से जो कष्ट दिया वह किस प्रकार का है, शारीरिक, मानसिक या आर्थिक और कितना है ?

2. उस भय और घबराहट का अनुमान जो उसके अपराध से जनसाधारण में पैदा हुई ।

3. इसका अनुमान करना कि अपराध से किस हद तक मान-हानि हुई । अतः चोरी की सज़ा चोरी गये माल की मात्रा या उसकी क़ीमत की बुनियाद पर नहीं है, बल्कि उसकी सज़ा इसलिए है कि उससे पूरे समाज में डर और भय पैदा हुआ और लोगों की नींद हराम हुई । इसी तरह डकैती की सज़ा उस फ़िल्ला व फ़साद पर दी जाती है जो उसके करने से प्रकट होते हैं । उसी तरह एक शिष्ट और भली औरत से व्यभिचार की जो सज़ा है वही बुरी और नीच औरत से व्यभिचार की सज़ा है क्योंकि दोनों स्थिति में एक समान ही मर्यादा-भंग होती है । यद्यपि वे अपराध जो जनाधिकार से संबंधित हों उनमें अपराध की मात्रा को ध्यान में रखा जाएगा और सज़ा लागू करते समय समानता और बराबरी को भी ध्यान में रखा जाएगा, जैसे–क़िसास की समस्त परिस्थितियां ।

सज़ाओं की हैसियत

इस्लामी क़ानून में अपराध की जो सज़ाएं निर्धारित की जाती हैं, उनके चार स्वरूप धर्मशास्त्रियों ने बताए हैं–

1. अस्ल अर्थात मूल सज़ाएं जैसे–क़त्ल की सज़ा क़िसास (मृत्युदंड) या व्यभिचार की सज़ा सौ कोड़े या पत्थर मारना, या चोरी की सज़ा हाथ काटना है ।

2. बदली सज़ाएं यानी अस्ल सज़ा लागू न हो रही होतो उसकी जगह दूसरी सज़ाओं को लागू करना, जैसे क़िसास (मृत्युदंड) के स्थान पर दीयत (देय धन-राशि) का जारी होना या अल्लाह व रसूल द्वारा निर्धारित सज़ा के स्थान पर अदालत द्वारा निर्धारित सज़ा को लागू करना ।

3. तबीई (अतिरिक्त) सज़ाएं, जैसे–अगर क़ातिल मक़्तूल का वारिस हो तो उसे मक़्तूल की विरासत से वंचित करना । या मक़्तूल (जिसका क़त्ल किया गया हो) की विरासत से वंचित करना, अगर क़ातिल उसका वारिस हो । या व्यभिचार का झूठा आरोप लगाने के जुर्म में हमेशा के लिए उसकी गवाही का स्वीकार न किया जाना ।

सज़ाओं के प्रकार

इस्लामी क़ानून में अपराध की तरह सज़ाओं के भी विभिन्न प्रकार हैं, जैसे–

1. सज़ा के निर्धारण में क़ाज़ी (सरकार या अदालत) को अधिकार प्राप्त होना या न होना, जैसे–हुदूद (अल्लाह व रसूल द्वारा निर्धारित सज़ा) या क़िसास (मृत्युदंड) में क़ाज़ी (न्यायाधीश) को अधिकार प्राप्त नहीं है कि सज़ा में कमी-बेशी कर सके । लेकिन ताज़ीरात (अदालत द्वारा निर्धारित सज़ा) में उसको अधिकार है कि परिस्थिति के अनुसार कमी-बेशी करे ।

2. बदली सज़ाओं का दिया जाना, जैसे–क़त्ल या कोड़े लगाना या अपराधी को क़ैद कर देना ।

3. मानसिक सज़ाएं, जैसे–अपराधी को डांटना-फटकारना या चेतावनी देना ।

4. आर्थिक सज़ाएं, जैसे–जुर्माना या अपराधी के सामान की क़ुर्क़ी कर लेना ।

सज़ा का उद्देश्य

इन्सान में बुरे और भले दोनों प्रकार की प्रवृत्तियां होती हैं । इस्लाम की समस्त उपासनाओं और नैतिक नियमों का उद्देश्य यह है कि इन्सान अपने आपको और अपनी भावनाओं को इस्लामी शिक्षाओं के सांचे में ढाल ले । लेकिन कभी-कभी वह अपनी इच्छाओं से हार जाता है और अपराध कर बैठता है । उसके बाद अनिवार्य है कि उसको सज़ा देकर उसका सुधार किया जाए जिससे कि दोबारा वह उस प्रकार के अपराध का दुस्साहस न कर सके या अपनी इच्छा के सामने विवश न हो । इसी तरह इन्सान एक विवेकी और स्वाभिमानी प्राणी है । वह कुछ सामाजिक मूल्य रखता है । लेकिन कभी-कभी किसी कारण से वह खुद इन मूल्यों की रक्षा नहीं कर पाता । ऐसी स्थिति में ज़रूरी है कि उस पर सज़ा लागू हो जिससे कि उसमें सुधार आये और जो प्रतिष्ठा उसने गंवा दी है वह दोबारा उसे वापस मिल जाए और समाज में सकारात्मक मूल्यों को बढ़ावा मिले । तीसरी बात यह है कि आदमी के भीतर अपराध के प्रति झूकाव की प्रवृत्ति पायी जाती है, लेकिन अगर अपराध करने पर सज़ा दी जाए तो उसके भय से इस प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जा सकता है । साथ ही दूसरे लोगों को भी इससे सबक़ मिलता है कि एक आदमी अपने किये अपराध की सज़ा पा रहा है । चौथी और अंतिम बात यह है कि किसी अपराध पर उचित सज़ा देना इसलिए भी ज़रूरी है ताकि यह उस व्यक्ति के लिए हार्दिक प्रसन्नता का माध्यम हो, जिस पर अपराधी ने ज़ुल्म ढाया है । केवल क़िसास ही नहीं बल्कि अन्य सज़ाओं में भी यह बात शरीअत के पेशे-नज़र है ।

अपराध की रोकथाम के उपाय

इस्लाम में निस्संदेह अल्लाह, रसूल और अदालत द्वारा निर्धारित सज़ाओं को लागू करने के आदेश हैं । लेकिन ऐसा नहीं है कि सीधे इन आदेशों को जारी कर दिया जाता है, बल्कि उसने पहले अपराध को रोकने का हर संभव उपाय किया है लेकिन उपायों के बाद भी लोग अपराध करें तो उस पर सज़ा का प्रावधान है, नहीं तो पहले वह विभिन्न उपायों के माध्यम से अपराध पर क़ाबू पाने की कोशिश करता है । इस्लाम ने अपराध की रोकथाम के लिए निम्नलिखित उपाय बताए हैं–

(क) इस्लामी अक़ीदों से अपराध की रोकथाम

मानव-इतिहास की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि इन्सानों की बड़ी संख्या आस्था के संबंध में हमेशा भटकाव का शिकार रही है । दुनिया में इन्सान ने अपनी वास्तविकता को समझने में हमेशा ग़लती की है । कभी वह खुद खुदा बन जाता है और कभी दुनिया की हर चीज़ को खुदा मान लेता है । आज भी दुनिया की अधिकतर आबादी का यही हाल है । बहुदेववाद, अधर्म, मूर्तिपूजा, नास्तिकता और अनीश्वरवादिता में जिस प्रकार पहले के लोग घिरे हुए थे आज भी इन्सानों की बड़ी संख्या इन्हीं का शिकार है । विज्ञान के आश्चर्यजनक विकास के बाद भी खुदा एवं ईश्वर के वास्तविक और सत्य ज्ञान से इन्सान वंचित है । इसके विपरीत मानव इतिहास में इस्लाम का सबसे बड़ा कारनामा यही है कि उसने हमेशा मानवता को आस्था संबंधी भटकाव से निकलने की कोशिश की है । नबियों के आह्वान का केन्द्र बिन्दु यही रहा है कि उन्होंने सबसे पहले आस्था में सुधार पर ध्यान दिया । फिर दूसरी प्रचलित बुराइयों को मिटाने पर ज़ोर दिया है । आजकल तो अपराध का सैलाब उमड़ पड़ा है और उसे रोकने की हर संभव कोशिश की जा रही है । लेकिन जब तक सही बुनियाद पर यह कोशिश नहीं होगी हमेशा असफल रहेगी और वह बुनियाद है ईमान और आस्था का गठन और उसका सुधार । इस्लाम ने अक़ीदे की कौन-सी बुनियादें उपलब्ध करायी हैं और इनसे मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़े हैं, यह एक विस्तृत विषय है, लेकिन यहां विस्तार में जाने का अवसर नहीं है । केवल कुछ आवश्यक बिन्दुओं की ओर संकेत किया जा रहा है–

इस्लामी अक़ीदों का परिचय

ईश-विश्वास : ईश-विश्वास का अर्थ यह है कि सृष्टि का अकेला वही स्रष्टा और स्वामी है । उसका कोई साझीदार नहीं है । वह जो चाहता है करता है । सृष्टि की कोई वस्तु उसकी नज़रों से ओझल नहीं है । धरती, आकाश, सूरज, चांद, तारे, पहाड़, जंगल, नदी, पेड़, जानवर और इन्सान सब उसके आदेश के अधीन और उसकी इच्छा से

स्थित और जीवित हैं । हर प्रकार की क्षमता और ज्ञान उसके पास है । वह अजर-अमर और निस्पृह है । वह हर ऐब से पाक है । सारी प्रशंसा उसी के लिए है । हर प्रकार के श्रेष्ठ गुण और अच्छाई उसी से संबंधित है । उस जैसा कोई नहीं । वह बेमिसाल और अकेला है । कुरआन में अल्लाह (ईश्वर) का परिचय इस तरह कराया गया है–

"अल्लाह, वह जीवंत शाश्वत सत्ता है जो संपूर्ण जगत को संभाले हुए है, उसके अतिरिक्त कोई खुदा नहीं है । वह न सोता है, और न उसे ऊंघ लगती है । ज़मीन और आसमान में जो कुछ है, उसी का है । कौन है जो उसके सामने उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके ? जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है उसे भी वह जानता है और उसके ज्ञान में से कोई चीज़ उनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती । यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह खुद ही उनको देना चाहे । उसका राज्य आसमानों और ज़मीन पर छाया हुआ है और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देने वाला काम नहीं है । बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है ।"

(कुरआन, 2:255)

ईशदूतत्व पर विश्वास : रसूलों और ईशदूतों पर ईमान और विश्वास का अर्थ यह है कि अल्लाह ने मानवजाति के मार्गदर्शन के लिए इन्सानों में से कुछ लोगों का चयन करके, उन पर अपना संदेश अवतरित किया जिससे कि वे लोगों को सही रास्ता बताएं । इस तरह के पैग़म्बर और ईशदूत हर युग और हर क़ौम में भेजे गये और ईशदूतत्व की अंतिम कड़ी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं, जिन पर कुरआन अवतरित हुआ और रहती दुनिया तक समस्त मानवता के लिए मार्गदर्शन है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के बाद न तो कोई पैग़म्बर होगा और न कोई आसमानी किताब (ईश्वरीय पुस्तक) अवतरित होगी । अल्लाह फ़रमाता है–

"मुहम्मद इसके सिवा कुछ नहीं कि बस एक रसूल हैं, इनसे पहले और रसूल भी गुज़र चुके हैं ।"

(कुरआन, 3:144)

ईश्वरीय पुस्तकों पर विश्वास : ईश्वरीय पुस्तकों पर विश्वास का अर्थ यह है कि अल्लाह ने मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए न केवल रसूल और पैग़म्बर भेजे बल्कि उन पर पुस्तकें भी अवतरित कीं जिससे कि वे इनके माध्यम से लोगों को सत्य और असत्य की बातें समझा सकें । इन ईश्वरीय पुस्तकों में, जो विभिन्न रसूलों और ईशदूतों पर अवतरित हुईं तौरात, इंजील, ज़बूर और कुरआन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । अल्लाह फ़रमाता है–

"ऐ नबी, उसने तुम पर यह किताब उतारी, जो सत्य लेकर आयी है और उन किताबों की पुष्टि कर रही है जो पहले से आयी हुई थीं । इससे पहले वह इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए तौरात और इंजील उतार चुका है, और उसने वह कसौटी उतारी है जो फ़ुरक़ान (सत्य और असत्य का अंतर दिखाने वाली) है ।" (कुरआन, 3:3,4)

फ़रिश्तों पर विश्वास : फ़रिश्तों पर विश्वास का अर्थ यह है कि अल्लाह ने जिस प्रकार इन्सानों और अन्य प्राणियों को पैदा किया है, इसी तरह फ़रिश्तों को भी पैदा किया है । इनका काम हर समय अल्लाह के आदेश का पालन है । कुछ फ़रिश्ते ईश-गुणगान के काम पर लगाए गये हैं तो कुछ संदेश पहुंचाने के काम पर । कुछ फ़रिश्ते अज़ाब के लिए निर्धारित हैं तो कुछ मनुष्यों के कर्मों का लेखा-जोखा तैयार करने पर । सारांश यह कि वे विभिन्न कामों में लगे हुए हैं और हर समय खुदा के आदेशों का पालन कर रहे हैं । अल्लाह फ़रमाता है–

"प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों और ज़मीन का बनाने वाला है और फ़रिश्तों को संदेशवाहक नियुक्त करने वाला है, (ऐसे फ़रिश्ते) जिनकी दो-दो और तीन-तीन और चार-चार भुजाएं हैं । वह अपनी सृष्टि संरचना में जैसा चाहता है अभिवृद्धि करता है । वास्तव में अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है ।" (कुरआन, 35:1)

(विदित हो कि अरब के लोग फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां समझते थे और उनकी उपासना करते थे । इस्लाम ने इस धारणा का खंडन किया और बताया कि वे भी अल्लाह के पैदा किये हुए बन्दे हैं और उनकी उपासना करना ग़लत है ।)

परलोकवाद पर विश्वास : परलोकवाद पर विश्वास का अर्थ यह है कि अल्लाह ने एक विशेष उद्देश्य के लिए इस सृष्टि की रचना की है और दुनिया में इन्सानों को पैदा किया है । फिर एक दिन उसे समाप्त कर देगा । वह दिन

क़ियामत और प्रलय का दिन होगा, जिसमें दुनिया की सारी चीज़ें विनष्ट हो जाएंगी और इन्सानों को अपने कर्मों की जवाबदेही के लिए पुनः जीवित किया जाएगा । जिसके बाद वे अपने कर्मों के अनुसार अच्छे या बुरे परिणाम पाएंगे । अल्लाह फ़रमाता है–

"जब आसमान फट जाएगा, और जब तारे बिखर जाएंगे, और जब समुद्र फाड़ दिये जाएंगे, और जब क़ब्रें खोल दी जाएंगी, उस समय प्रत्येक व्यक्ति को उसका अगला-पिछला सब किया-धरा मालूम हो जाएगा ।"

(क़ुरआन, 82:1-5)

क़ुरआन में इन बातों पर ईमान लाने या विश्वास रखने की बार-बार मांग की गयी है और इनसे इन्कार करने वालों को सख़्त सज़ा सुनायी गयी है । अल्लाह फ़रमाता है–

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारी है और हर उस किताब पर जो इससे पहले वह उतार चुका है । जिसने अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और आख़िरत के दिन का इन्कार किया वह गुमराही में भटककर बहुत दूर निकल गया ।" (क़ुरआन, 4:136)

ये इस्लामी आस्था एवं विश्वासों के मूलभूत तत्व हैं । इनको स्वीकार करने के बाद व्यक्ति के पूरे व्यक्तित्व, विचारधारा, आचार और व्यवहार में क्रांति आ जाती है । वह हर बात को अपनी आस्था और विश्वास के तराज़ू पर तौलता है । अगर उस पैमाने पर पूरा उतरता है तो व्यवहार में लाता है नहीं तो वह उसे अस्वीकार कर देता है । एक सच्चे मुसलमान का हर क़दम आस्था और विश्वास की मांग के अनुसार उठता है । उसका जीना और मरना अपनी आस्था और विश्वास की सीमा में होता है । एक सच्चे मुसलमान के नज़दीक ज़िन्दगी की कोई क़ीमत है तो वह ईमान और विश्वास से है । वह अपनी आस्था और विश्वास की रक्षा के लिए अपनी जान भी न्योछावर कर देता है । आस्था और विश्वास के माध्यम से व्यक्ति उन हैवानी शक्तियों का मुक़ाबला कर सकता है, जो वर्तमान दौर में इन्सान पर विजय प्राप्त कर चुकी हैं और जिनके कारण विभिन्न प्रकार के अपराध घटित हो रहे हैं । आइए नीचे की पंक्तियों में इसका अवलोकन करते हैं कि आस्था और विश्वास किस प्रकार अपराध की रोकथाम करता है । यहां आस्था और विश्वास के सभी अंगों पर विस्तृत चर्चा का अवसर नहीं है । इसमें से केवल ईश-विश्वास और परलोक-विश्वास पर प्रकाश डाला जा रहा है ।

ईश्वर का स्वामित्व

वर्तमान दौर में अपराध के घटित होने के विभिन्न कारणों में से एक बहुत बड़ा कारण आर्थिक है । इसके अधीन निर्धनता और ग़रीबी ही नहीं आते बल्कि धन-दौलत का लोभ और एक-दूसरे से आगे बढ़ने की भावना शामिल है । आदमी अधिक से अधिक धन क्यों जमा करता है ? इसलिए कि वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति और अपनी सुरक्षा चाहता है । वह समझता है कि यहां हर आवश्यकता की पूर्ति अपनी कमाई पर निर्भर और अपनी सुरक्षा धन-दौलत की बुनियाद पर ही संभव है । अतः वह इसकी प्राप्ति के लिए हर संभव प्रयास करता है । भले ही उसे कोई अपराध ही क्यों न करना पड़े । इसी प्रकार एक निर्धन और ग़रीब चोरी, बेईमानी या आत्महत्या जैसे अपराध क्यों करता है । इसलिए कि वह समझता है कि उसकी ग़रीबी को दूर करने का कोई रास्ता नहीं है । अतः या तो वह अनुचित तरीक़े से धन-दौलत हासिल करने की कोशिश करता है या फिर मायूस होकर आत्महत्या कर लेता है । लेकिन इस्लामी आस्था पर पूर्ण विश्वास करने वाला इससे बचा रहता है ।

UNITED
ELECTRONIC SPARES

Deals :
Electronic Spare Parts,
TV, DVD, DTH & All Types of Remote,
CFL Glass & CFL Kit, USB Set, Fan,
Iron, Mixer, Mobile Accessories,
0-25 KVA To 10 KVA Stabiliser &
Inverter, CFL Inverter &
12 V 7.2AH Battery

Shop No-8, Hotel Ashoka Complex,
L.T. Road, Ramgarh Cantt, Jharkhand

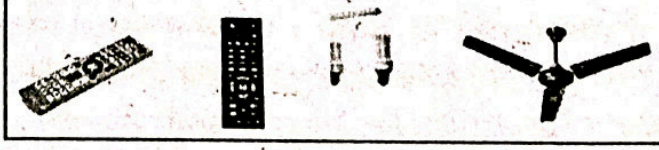

सांप्रदायिक शांति एवं सद्भाव है देश की शक्ति

● संपादन प्रभाग

हमारा देश संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है । विविधता हमारे देश की उल्लेखनीय विशेषता है । संसार के सभी महत्वपूर्ण धर्म, जैसे ईसाइयत, इस्लाम, हिन्दू, यहूदियत, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी, बहाइयत आदि के मानने वाले यहां मौजूद हैं । हमारे देश में लगभग 1700 भाषाएं मातृभाषा के रूप में बोली जाती हैं । एक सौ पच्चीस करोड़ इन्सानों के इस देश में लगभग छह हज़ार जातियां पायी जाती हैं और दुनिया के महत्वपूर्ण वांशिक वर्गों में से छह वर्गों के लोग यहां मौजूद हैं ।

जो बात संसार में बहुत-से लोगों के लिए आश्चर्यजनक है, वह यह है कि इतनी विविधताओं के बावजूद इस देश में लोग शताब्दियों से अम्न व शांति के साथ रह रहे हैं । एक ही गांव में विभिन्न धर्मों और वर्गों के लोग रहते हैं । वे एक-दूसरे के दुख-दर्द में सम्मिलित होते हैं । मिल-जुलकर संयुक्त समस्याओं का सामना करते हैं, और भाषा, धर्म, वंश आदि की विविधता के बावजूद मानवता का रिश्ता उन्हें आपस में जोड़े रखता है । हमारे देश में सांप्रदायिक झगड़े भी जन्म लेते रहे । कभी इन झगड़ों ने अत्याचारपूर्ण टकराव का रूप भी धारण कर लिया, लेकिन मज़बूत आपसी तालमेल और एक-दूसरे पर निर्भरता के कारण इन झगड़ों ने स्थायी टकराव का रूप धारण नहीं किया । दंगों आदि की घटनाओं के बावजूद सामाजिक ताना-बाना स्थापित रहा और समाज कभी विभाजित नहीं हुआ ।

यह परिस्थिति और सामुदायिक अम्नो-शांति हमारे देश की बड़ी शक्ति है और यह हमारे देश की विशिष्टता भी है । संसार में बहुत कम समाज ऐसे हैं, जहां विभिन्न धार्मिक वर्ग इतने लंबे समय से मिल-जुलकर रह रहे हों । लोकतंत्र और मानव अधिकारों के दावेदार यूरोपीय देश भी विविधता को इतनी सुन्दरता के साथ नहीं निभा सके और विविधता का अनुभव वहां अनेक प्रकार के सामाजिक तनाव उत्पन्न कर रहा है, इसलिए अब जबकि सारी दुनिया में सांस्कृतिक समाज अस्तित्व में आ रहे हैं, और इस प्रकार के समाज अधिकतर देशों की सामाजिक एवं आर्थिक ज़रूरत बनते जा रहे हैं । हमारे देश का और यहां के शताब्दियों पुराने अनुभव का महत्व बहुत बढ़ गया है । सारी दुनिया इस अनुभव से सीखना चाहती है । सामुदायिक शांति हमारी शक्ति भी है और हमारी सबसे मूल्यवान धरोहर भी । आज इसी के कारण दुनिया में हमारे देश का सम्मान है । इसी के कारण हम एक बड़ी मार्केट बने हुए हैं । अपनी इसी विशिष्टता के कारण हम दुनिया की सभी संस्कृतियों एवं सभ्यताओं से जुड़ पाते हैं और उन पर प्रभाव डाल सकते हैं ।

हमारे देश के संविधान ने भी सभी समुदायों और धर्मों के मानने वालों को स्वतंत्रता दी है और सबके मध्य भाईचारा और अम्नो-शांति हमारे संविधान का आधार स्तंभ है । संविधान की प्रस्तावना जिसे संविधान की आत्मा कहा जाता है, एक ऐसे देश का सपना दिखाती है जिसकी बुनियाद सभी नागरिकों के मध्य प्रेम, मानव सम्मान, पद और अवसरों की समानता, आस्था, पूजा-उपासना, विचार रखने और व्यक्त करने की स्वतंत्रता और सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय, जैसे उच्च मानव मूल्यों पर हो । संविधान की धारा-25 में स्पष्ट रूप से कहा गया है–

"सभी लोगों को विचार की स्वतंत्रता और स्वतंत्रता से धर्म स्वीकार करने, उसका अनुसरण करने और उसका प्रचार करने का समान अधिकार है ।"

यह बड़ी चिंता की बात है कि कुछ वर्षों से इस

परिस्थिति में तेज़ी से बदलाव आ रहा है । अतिवादी मानसिकता समाज में तेज़ी से बढ़ रही है । कुछ स्वार्थी तत्व अपने तुच्छ राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक हितों के लिए इस शताब्दियों पुराने सामाजिक ढांचे को ध्वस्त करने पर तुले हुए हैं । ये शक्तियां सामाजिक भेदभाव में ही अपना हित देखती हैं । इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि ये पूरे देश को और विशेष संवेदनशील राज्यों को निरंतर सांप्रदायिक तनाव की स्थिति में रखना चाहते हैं ।

बड़े दंगों के परिणामस्वरूप विश्व स्तर पर बदनामी होती है और विश्व स्तरीय विरोध का ख़तरा रहता है, इसलिए अब नयी मानसिकता यह है कि छोटी-छोटी किंतु बहुत ही दहशतनाक और आतंकित घटनाओं को निरंतर किया जाए । लोकसभा में गृह मंत्रालय की ओर से उपलब्ध किये गये आंकड़ों के अनुसार गत वर्ष (2015 में) सांप्रदायिक टकराव की घटनाओं में 17 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई और केवल एक वर्ष के अंतराल में 751 घटनाएं रिकार्ड की गयीं । इनमें से अधिकतर (लगभग 87 प्रतिशत) घटनाएं केवल सात राज्यों (उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान और गुजरात) में हुई हैं और आंकड़ों से यह भी ज्ञात होता है कि चुनाव के निकट इन घटनाओं की संख्या अचानक बढ़ जाती है ।

इन छोटी किंतु अत्यंत अत्याचारपूर्ण घटनाओं के कई उदाहरण अभी हाल के दिनों में सामने आये हैं । झारखंड में एक युवक और एक कम उम्र के लड़के की पेड़ पर लटकती हुई लाशें, दादरी में मुहम्मद अख़्लाक़ की दर्दनाक हत्या, सांप्रदायिकता का विरोध करने वाले बुद्धिजीवियों को निशाना बनाकर हत्या करने की घटनाएं, दिल्ली, हरियाणा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, आगरा और मुंबई में चर्चों पर हमले, यूनीवर्सिटियों में दलितों पर अत्याचार, पूना में एक आई॰टी॰ इंजीनियर की भीड़ द्वारा हत्या आदि वे कुछ प्रसिद्ध घटनाएं हैं जो मीडिया में वाद-विवाद का विषय बन सकी हैं । इनके अतिरिक्त देहातों में लड़कों पर, बसों और ट्रेनों में यहां तक कि कार्यालयों और कामकाज की जगहों पर भी सांप्रदायिक आधारों पर कटाक्ष, शोषण और अत्याचार की घटनाएं बड़ी संख्या में सामने आने लगी हैं । देश के उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्रों और दक्षिण में कर्नाटक और केरल के कुछ क्षेत्रों में और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में परिस्थिति तेज़ी से बिगड़ रही है और राजनीतिक हितों के लिए सांप्रदायिक द्वेष की जो आग भड़काई जा रही है वह हमारे देश की मज़बूत सामाजिक व्यवस्था और शताब्दियों पुराने मूल्यों को भी अपनी लपेट में लेने लगी है ।

इससे पूर्व भी देश में सांप्रदायिक टकराव की जो घटनाएं हुई हैं, वे अधिकतर या तो शहरों में हुई हैं या शहरों में लगने वाली आग ने आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों को अपनी लपेट में लिया है । लेकिन गत कुछ वर्षों में विशेष रूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जिस प्रकार की घटनाएं सामने आयी हैं उन्होंने पूरे देश को चौंका भी दिया है और दहला भी दिया है । इस बार यह आग ग्रामीण क्षेत्रों में भड़की और वह भी उन ग्रामीण क्षेत्रों में जो सांप्रदायिक तनाव का कोई इतिहास नहीं रखते थे और 1992 ई॰ के आसपास भी, जबकि पूरा देश सांप्रदायिक तनाव की स्थिति से दोचार था, वहां शांति बनी रही । गत तीन वर्षों में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बहुत-से गांवों में सांप्रदायिक झड़पों की दो दर्जन से अधिक घटनाएं सामने आयी हैं ।

दलित वर्ग सदैव से जातपात के भेदभाव का शिकार रहा है । परंतु अब दलितों पर अत्याचार का अत्यंत भयानक और लंबा सिलसिला चल पड़ा है । गुजरात और देश के कुछ और क्षेत्रों में कभी गाय के नाम पर और कभी किसी और बहाने से, हमलों में अचानक बढ़ोत्तरी हो गयी है । दलित महिलाओं को नंगा करके परेड कराने की घटनाएं सामने आने लगी हैं ।

इस बिगड़ती हुई सांप्रदायिक स्थिति की एक और विशेषता यह है कि मामला केवल सामयिक भड़काव और सामयिक झड़पों का नहीं है बल्कि बड़े पैमाने पर सामाजिक भेदभाव का है । देश में नंगे होते रहे हैं । किंतु दंगों के बाद जब शांति स्थापित हो जाती तो लोग मिल-जुलकर रहने लगते थे । इन झड़पों के कारण वक़्ती और सामयिक होते थे और शांति स्थापित होने के बाद लोग उन कारणों को भी भूल जाते थे ।

लेकिन इस समय स्थिति यह है कि भेदभाव के लिए मज़बूत और स्थायी आधार उपलब्ध कराये जा रहे हैं । तनाव को केवल सामयिक कारकों तक सीमित नहीं रहने दिया जा रहा है बल्कि ऐसे विश्व स्तरीय, राजनीतिक, ऐतिहासिक और आस्था संबंधी कारक खोजे जा रहे हैं जिनके प्रभाव लंबे समय तक पड़ने वाले हों । विभिन्न संप्रदायों के मध्य ऐसी भ्रांतियां, शिकायतें और बदगुमानियां पैदा की जा रही

है, जो स्थायी रूप की होती हैं और जिनके ताने-बाने विश्व स्तरीय राजनीति से और इतिहास एवं इतिहास की स्वकल्पित धारणाओं से जुड़ते हैं। इस प्रकार की स्थायी शिकायतें और भ्रांतियां आसानी से दूर नहीं होतीं और निरंतर दूरियां पैदा करती चली जाती हैं।

यही कारण है कि दंगों के लंबे समय के बाद भी अत्याचार से पीड़ित लोगों को उनके घर वापस होने नहीं दिया जाता। शहरों में धार्मिक संबंध के आधार पर कालोनियों और अपार्टमेंट में घर देने से इन्कार किया जाता है। सड़क पर होने वाले मामूली झगड़े को भी आतंकवाद से जोड़ दिया जाता है। वकील सांप्रदायिक आधारों पर केस लेने से इन्कार करने लगते हैं। पुलिस और समाज के रक्षक तक सांप्रदायिक आधार पर गालियां देने लगते हैं। छोटे-छोटे देहातों में सांप्रदायिक आधारों पर आर्थिक बाईकॉट के अभियान चलने लगते हैं। अल्पसंख्यकों की भाषाएं और उनके सांस्कृतिक प्रतीक घृणित होने लगते हैं।

जो तत्व देश में इस प्रकार की निकृष्टतम सांप्रदायिकता फैलाने को आतुर हैं उनका मूल लक्ष्य यह है कि समाज बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक दो बिल्कुल ही अलग-अलग वर्गों में विभाजित हो जाए। बहुसंख्यक वर्ग स्वयं को अल्पसंख्यक वर्ग से अलग कर ले। अल्पसंख्यकों को वह ग़ैर समझने लगे। देश में उत्पन्न हर समस्या के लिए वह अल्पसंख्यक वर्ग को ज़िम्मेदार समझने लगे। अल्पसंख्यकों से संबंधित सभी कामों को ग़ैरियत, संदेह, दुश्मनी और घृणा की विशेष ऐनकों से देखने का अभ्यस्त हो जाए। 'अपनों' और 'परायों' का यह भेदभाव इतना पक्का हो जाए कि दूसरे संप्रदाय से संबंधित किसी व्यक्ति या व्यक्तियों पर बड़े से बड़ा अत्याचार भी कोई बेचैनी न पैदा करे। उनकी कठोर से कठोर यातना का भी कोई एहसास न हो और उनकी अत्यंत सही और उचित बातें भी समझ में न आएं। इसके परिणामस्वरूप वह स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसे ध्रुवीकरण कहा जाता है। यानी दो वर्गों के बीच एक साथ रहते हुए भी सोच और रवैये का ऐसा ध्रुवीकरण हो जाता है कि कोइ चीज़ भी संयुक्त नहीं रहती। एक ही घटना को दोनों वर्ग अपनी-अपनी ऐनकों से देखते हैं। हर घटना का कारण दोनों वर्गों में अलग-अलग और बिल्कुल विपरीत समझा जाता है। वे समझने लगते हैं कि उनका हित दूसरे वर्ग के हित से टकराता है। दूसरे वर्ग के हर दोस्त को वे अपना दुश्मन और उसके हर दुश्मन को वे अपना दोस्त समझने लगते हैं। यह स्थिति पैदा हो जाए तो उनके बीच आपसी संवाद न केवल समाप्त हो जाती है बल्कि असंभव होने लगती है। कोई संयुक्त प्लेटफार्म शेष नहीं रहता और स्थिति अत्यंत धमाकेदार हो जाती है।

निश्चित रूप से इस समय हमारे देश में स्थिति इतनी ख़राब नहीं है। आज भी देश के अधिकतर क्षेत्रों में सामाजिक स्तर पर हिन्दू और मुसलमान मिल-जुलकर ही रहते हैं और समाज की एक बड़ी संख्या उन लोगों और वर्गों पर आधारित है जो सांप्रदायिक सौहार्द में न केवल विश्वास रखते हैं बल्कि उसे शेष रखने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। लेकिन इसमें संदेह नहीं कि यह सुन्दर एवं मधुर परिस्थिति तेज़ी से पतन की ओर अग्रसर है और देश के कई राज्यों में सामाजिक खाइयां दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही हैं, और निरंतर हम उसी धमाकेदार और तबाह करने वाली स्थिति की ओर बढ़ रहे हैं जिसका उल्लेख किया गया है।

यह अत्यंत चिंता की बात है। जैसा कि देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने राष्ट्रपति के नाम अपने एक पत्र में लिखा है कि इस प्रकार के सांप्रदायिक भेदभाव की स्थिति एक प्रकार का न्यूक्लियर बम है जो फटने के निकट है। आवश्यकता इस बात की है कि इसका समय रहते नोटिस लिया जाए और ऐसे क़दम उठाए जाएं जिनसे इस बढ़ती हुई सामाजिक खाई को पाटा जा सके और आपस में एक-दूसरे पर भरोसे के वातावरण को बहाल किया जा सके।

इस बात पर बड़ी हद तक मतैक्य पाया जाता है कि हमारे देश में सांप्रदायिक घृणा का ज़हर अंग्रेज़ों ने अपनी "फूट डालो और राज करो" की पॉलीसी के द्वारा फैलाया था। अंग्रेज़ों से पहले के इतिहास में मामूली झगड़ों की घटनाएं तो मिलती हैं किंतु ऐसा भेदभाव देखने में नहीं आता। अंग्रेज़ों ने अपने राज्य को मज़बूत करने के लिए इस भेदभाव को ज़रूरी समझा था। और यह बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि स्वतंत्रता के बाद अंग्रेज़ों का यह एजेंडा स्वयं भारत के लोगों ने अपना लिया है। अंग्रेज़ों ही की तरह हमारे देश के बहुत से वर्गों ने भी सामाजिक भेदभाव को सत्ता हथियाने और उसे मज़बूत करने का आसान माध्यम समझ लिया है।

इस भेदभाव का सबसे बड़ा कारण कुछ नारे और

कल्पनाएं हैं, जो विशेष रूप से तैयार किये जाते हैं और उनको पूरी शक्ति के साथ आम किया जाता है । 'भारत प्राचीन दौर में बहुत समृद्ध और खुशहाल था, मुसलमान शासकों ने देश को अंधकार के दौर में पहुंचा दिया ।' 'उन्होंने यहां की आबादी पर बहुत अत्याचार किये', 'लोगों को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया और मंदिरों को ध्वस्त किया'', यहां के मुसलमान देश के विभाजन के लिए ज़िम्मेदार हैं', 'इस्लाम ग़ैर-मुस्लिमों से घृणा करना सिखाता है और कुरआन ख़ून-ख़राबे की शिक्षा देता है', मदरसों में घृणा का प्रचार होता है', मुसलमानों की आबादी तेज़ी से बढ़ रही है', 'ईसाई ज़बरदस्ती धर्म परिवर्तन करा रहे हैं', 'अल्पसंख्यक वर्ग देश से प्रेम नहीं करता' इत्यादि, ऐसी दसियों ख़याली बातें हैं जिनका बेबुनियाद होना बहुत ही मज़बूत और तार्किक प्रमाणों के साथ सिद्ध हो चुका है । लेकिन इसके बावजूद ये ख़याली बातें पूरी शक्ति के साथ और तमाम साधनों को प्रयोग में लाते हुए आम की जाती है, और प्रयास किया जाता है कि बहुसंख्यक वर्ग की मानसिकता इन्हीं ख़याली बातों के आधार पर तैयार हो । ऐसी ही कुछ और भी ज़हरीली ख़याली बातें कुछ अल्पसंख्यक वर्ग के लीडर भी फैलाते हैं ।

इन घृणात्मक ख़याली बातों के पूरे ज़ोर से प्रचार का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा व्यवस्था और उसका पाठ्यक्रम है । इसके द्वारा बचपन ही से ये ख़याली बातें मन में बैठ जाती हैं और फिर इसी मानसिकता के साथ पूरे व्यक्तित्व का निर्माण होने लगता है । यदि पूरे देश की नवजवान आबादी तीन-चार भागों में विभाजित हो जाए और एक-दूसरे के विरुद्ध बदगुमानी (कुधारणा), ईर्ष्या, घृणा और विमुखता की स्थिति के साथ मैदान में आये तो समाज की क्या दुर्गति बन सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है । यह बड़ी चिंता की बात है कि इस समय देश की अनगिनत शिक्षण संस्थाएं इसी रीति पर शिक्षा दे रही हैं और पाठ्यक्रम में जगह-जगह ज़हर घोलने का प्रयास किया जा रहा है ।

इन धारणाओं के आधार पर समय-समय पर नारे और इशूज़ भी पैदा किये जाते हैं । 'मुस्लिम आबादी का धमाका', 'लव-जिहाद', 'मुसलमानों से पाक भारत', 'धर्म परिवर्तन का ख़तरा', '(कैराना से) हिन्दुओं का पलायन' इत्यादि ऐसे ही बेबुनियाद नारे और इशूज़ हैं ।

इन धारणाओं और नारों के आधार पर लोगों की मानसिकता को तैयार करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका ज़हरीले भाषणों की होती है । आग उगलते हुए इन भाषणों में यह आश्चर्यजनक क्षमता होती है कि वे कम पढ़े-लिखे लोगों और नवजवानों में जुनून और दीवानगी की लहर दौड़ा सकते हैं । धर्म और संप्रदाय के प्रति भावुक अपील का ईंधन इस चिंगारी को तेज़ी से भड़का देता है । सांप्रदायिक घृणा की घटनाओं का विश्लेषण इसी परिणाम तक पहुंचाता है कि इनमें महत्वपूर्ण भूमिका भड़काऊ भाषणों की ही रही है । दंगों की जांच करने वाले कई न्यायिक कमिशनों ने भी इसे नोट किया है ।

पिछले कई सालों से ज़हरीले भाषणों का जो तूफ़ान उमड़ आया है, वह पूरे देश के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है । खुलेआम क़त्ल व ख़ून की बातें हो रही हैं । सिरों पर इनाम रखे जाने का ऐलान हो रहा है । सबक़ सिखाने के चैलेंज किये जा रहे हैं । बलात्कार बल्कि लाशों के अपमान करने की धमकियां दी जा रही हैं । और आश्चर्य की बात यह है कि इस भयानक ख़तरे के मुक़ाबले में देश की पूरी क़ानूनी व्यवस्था को मानो लक़वा मार गया है ।

इन ख़याली ज़हरीली बातों के प्रचार का दूसरा बड़ा माध्यम मीडिया होता है । दंगों की जांच कमीशनों ने हर जगह मीडिया के एक हिस्से की नकारात्मक भूमिका को भी उजागर किया है । बेवक़्त सांप्रदायिक तौर पर संवेदनशील मसलों को खड़ा करना, नॉन-इशूज़ को इशूज़ बनाना, संप्रदायों और धर्मों के बीच भ्रांतियां फैलाना, ग़लत ख़बरों और अफ़वाहों का प्रचार और छोटी-छोटी बातों को बढ़ा-चढ़ाकर और भड़काऊ तरीक़े से इस प्रकार सामने लाना कि घृणा फैले, यह सब प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ही के द्वारा होता है । हत्यारा और अत्याचारी यदि अल्पसंख्यक वर्ग से संबंधित है तो उसका नाम खोल दिया जाता है । आतंकवाद की कोई घटना सामने आती है तो उसे विशेष धर्म और धार्मिक धारणाओं से जोड़ने की दौड़ शुरू हो जाती है । हालांकि ये सब बातें पत्रकारिता की जानी-मानी नैतिकता के विरुद्ध हैं किंतु सब देख रहे हैं कि इन सिद्धांतों की किस तरह धज्जियां उड़ाई जा रही हैं ।

अब इधर कुछ दिनों से जो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का एक भाग कम पढ़े-लिखे ज़हरीले वक्ताओं का स्थान ले लेने की दौड़ में लगा हुआ है ।

एकेश्वरवाद

■ स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य

यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते ।।६।।

अर्थ-जिसे कोई नेत्र से नहीं देखता बल्कि जिसकी सहायता से नेत्र (अपने विषयों को) देखते हैं उसी को तू ब्रह्म जान । जिस इस (देशकालावच्छिन्न वस्तु) - की लोक उपासना करता है वह ब्रह्म नहीं है ।

–शांकर भाष्यार्थ
(आदि शंकरचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

तस्माद्वा एते देवो अतितरमिवा-यान्देवान्यदग्निवार्युरिन्द्रस्ते ।
ह्सेनन्ने दिष्ठं पस्पृशुस्ते ह्योनत्प्रथमो विदाञ्चकार ब्रह्मोति।।२।।

-केनोपनिषद्, खण्ड ४

अर्थ-क्योंकि अग्नि, वायु और इन्द्र- इन देवताओं ने ही इस समीपस्थ ब्रह्म का स्पर्श किया था और उन्होंने ही उसे पहले-पहल 'यह ब्रह्म है' ऐसा जाना था, अतः वे अन्य देवताओं से बढ़कर हुए ।

- शांकर भाष्यार्थ
(आदि शंकराचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनिः सर्वस्य ।
प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् ।।६।।

-माण्यूक्योपनिषद्, गौ० का०

अर्थ-यह सब का ईश्वर है, यह सर्वज्ञ है, यह अन्तर्यामी भी है और समस्त जीवों की उत्पत्ति तथा लाभ का स्थान होने के कारण यह सब का कारण भी है ।

–शांकर भाष्यार्थ
(आदि शंकराचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये परिजग्रयत् ।
न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः ।।१९।।

-श्वेताश्वतरोपनिषअ्, अध्याय४

अर्थ-उसे ऊपर से, इधर-उधर से अथवा मध्य में भी कोई ग्रहण नहीं कर सकता जिसका नाम महद्यशः है, ऐसे उस ब्रह्म की कोई उपमा भी नहीं है ।

–शांकर भाष्यार्थ
(आदि शंकराचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

येनावृतं नित्यमिदं हि सर्वं
ज्ञः कालकारो गुणी सर्वविद्यः ।
तेनेशितं कर्म विवर्तते ह
पृथ्व्यप्तेजोऽनिलखानि चिन्त्यम् ।।२।।

- श्वेताश्वतरोपनिषद्, अध्याय ६

अर्थ-जिसके द्वारा सर्वदा यह सब व्याप्त है तथा तो ज्ञानस्वरूप, काल का भी कर्ता, निश्पापत्वादि गुणवान् और सर्वज्ञ है उसी से प्रेरित होकर यह पृथिवी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाशरूप कर्म (जगद्रूप से) निवर्तित होता है, (अतः उस परमात्मा का चिन्तन करना चाहिए)

–शांकर भाष्यार्थ
(आदि शंकरचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

न तस्य कार्यं कारणं च विद्यते
न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते ।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च ।।८।।

- श्वेताश्वतरोपनिषद्, अध्याय ६

अर्थ-उस (ब्रह्म) के शरीर और इन्द्रियां नहीं हैं, उसके समान और उससे बढ़कर भी कोई दिखाई नहीं देता, उसकी पराशक्ति नाना प्रकार की ही सुनी जाती है और वह स्वाभाविकी ज्ञान क्रिया और बल क्रिया है ।

–शांकर भाष्यार्थ
(आदि शंकरचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

न तस्य कश्चित्पतिरस्ति लोके
न चेशिता नैव चतस्य लिङ्मग् ।
स कारणं करणाधिपाधिपो
न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिप : ।।९।।

- श्वेताश्वतरोपनिषद्, अध्याय ६

अर्थ- ब्रह्माण्ड में उसका कोई स्वामी नहीं है, न कोई

शासक या उसका चिह्न ही है । वह सबका कारण है और इन्द्रियाधिष्ठाता जीव का स्वामी है । उसका न कोई उत्पत्तिकर्ता, न स्वामी है ।

-शांकर भाष्यार्थ

(आदि शंकराचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः
साक्षी चेता केवतो निर्गुणश्च ।।११।।

- श्वेताश्वतरोपनिषद्, अध्याय ६

अर्थ-समस्त प्राणियों में स्थित एक ब्रह्म है, वह सर्वव्यापक, समस्त भूतों का अन्तरात्मा, कर्मों का अधिष्ठाता, समस्त प्राणियों में बसा हुआ, सबका साक्षी, सबको चेतनत्व प्रदान करने वाला है ।

-शांकर भाष्यार्थ

(आदि शंकरचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

यो ब्रह्माणं विधधाति पूर्वं
यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।
तँह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं
मुमुक्षुर्वैशरणमहंप्रपद्ये ।।१८।।

- श्वेताश्वतरोपनिषद्, अध्याय ६

अर्थ-जो सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा को उत्पन्न करता है और जो उसके लिये वेदों को प्रवृत्त करता है, अपनी बुद्धि को प्रकाशित करने वाले उस ब्रह्म की मैं मुमुक्ष शरण ग्रहण करता हूं ।

-शांकर भाष्यार्थ

(आदि शंकरचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

श्रीमद्भगवद्गीता में 'तौहीद'

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ।।२४।।

-गीता, अध्याय ४

अर्थ-(जिस यज्ञ में) अर्पण अर्थात् स्रुवा आदि (भी) ब्रह्म है (और) हवन किये जाने योग्य द्रव्य (भी) ब्रह्म है (तथा) ब्रह्मरूपकर्ता के द्वारा ब्रह्मरूप अग्नि में आहुति देना रूप क्रिया (भी ब्रह्म है)। उस ब्रह्म कर्म में स्थिति रहने वाले योगी द्वारा प्राप्त किये जाने योग्य (फल भी) ब्रह्म ही है ।।४।।

संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः ।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः ।।२४।।
शनैः शनैरूपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया ।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत् ।।२४।।

-गीता, अध्याय ६

अर्थ-संकल्प से उत्पन्न होने वाली सम्पूर्ण कामनाओं को निःशेषरूप से त्याग कर (और) मन के द्वारा इन्द्रियों के समुदाय को सभी ओर से भली भाँति रोककर ।।२४।।

क्रम-क्रम से (अभ्यास करता हुआ) उपरति को प्राप्त हो (तथा) धैर्य युक्त बुद्धि के द्वारा मन को परमात्मा में स्थिर करके (परमात्मा के सिवा और) कुछ भी चिन्तन न करें ।।२४।।

अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा

-गीता, अध्याय ७, श्लोक ६

अर्थ-मैं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति तथा प्रलय (यानी कियामत) (का मूल कारण) हूं ।

मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनञ्जय ।

-गीता, अध्याय ७, श्लोक ७

अर्थ-हे धनञ्जय! मुझ (परमात्मा) से अलग दूसरा कोई भी परम (कारण) नहीं है ।

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ।।२०।।

-गीता, अध्याय ७

अर्थ-उन-उन भोगों की कामना द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, (वे लोग) अपने स्वभाव से प्रेरित हो कर उस-उस नियम को धारण करके अन्य देवताओं को पूजते हैं । परन्तु उन अल्प बुद्धि वालों का वह फल नाशवान है (तथा वे) देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं (और) मुझ (परमेश्वर) के भक्त मुझको ही प्राप्त होते हैं ।।२०।।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्यमनुत्तमम् ।।२४।।

-गीता, अध्याय ७

अर्थ-बुद्धिहीन पुरुष मेरे अनुत्तम अविनाशी परम भाव को न जानते हुए मन-इन्द्रियों से परे मुझ परमेश्वर को (मनुष्य की भाँति जन्म कर) व्यक्ति-भाव को प्राप्त हुआ मानते हैं ।।२४।।

यान्ति देवव्रता देवान् पितृ२न्यान्ति पितृव्रताः ।

भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपिमाम्।।२४।।

-गीता, अध्याय ९

अर्थ–देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पुरखों को पूजने वाले पुरखों को प्राप्त होते हैं, भूतों-प्रेतों को पूजने वाले भूतों-प्रेतों को प्राप्त होते हैं (और) मुझ (परमेश्वर) का पूजन करने वाले भक्त मुझ को ही प्राप्त होते हैं ।।२४।। (इसीलिये मेरे भक्तों का पुनर्जन्म नहीं होता)

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एवं च ।।२०।।

- गीता, अध्याय १०

अर्थ–हे अर्जुन! मैं (परमात्मा) सब प्राणियों के हृदय में स्थित सबका आत्मा हूं तथा सम्पूर्ण प्राणियों का आदि, मध्य और अन्त भी मैं ही हूं ।।२०।।

यतः पृवित्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ।।४६।।

- गीता, अध्याय १८

अर्थ–जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त (ब्रह्माण्ड) व्याप्त है उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है ।।४६।।

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ।।६२।।

-गीता, अध्याय १८

अर्थ–(इसलिये) हे अर्जुन! (तू) सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा । उस परमात्मा की कृपा से (ही तू) परम शान्ति को (तथा) सनातन परम धाम को प्राप्त होगा ।।६२।।

लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि एकेश्वरवाद के इस सत्य को बताने वाला यह वैदिक धर्म आज किताबों में ही सिमट कर रह गया है उसके स्थान पर बहुईश्वरवाद का असत्य आ गया है । यहां आज भी नये-नये देवता, ईश्वर के नये-नये अवतार बनते जा रहे है । यदि टी०वी० अथवा किसी फिल्म में किसी व्यक्ति को ईश्वर का अवतार बना दिया जाए, महिमा मंडित कर दिया जाए, तो यहां जनता उसकी पूजा करना शुरू कर देती है । कई तो अपने को साक्षात ईश्वर ही कहते घूम रहे हैं और जनता उनके पीछे-पीछे भाग रही है । शर्म की बात है कि असत्य का जितना बोलबाला भारत में है वैसा कहीं नहीं है । ईश्वर ही इन्हें सद्बुद्धि दे । ये अपनी बुद्धि और विवेक दोनो खो चुके हैं ।

ये भटके हुए लोग ध्यान दें कि जिस पृथ्वी में हम रहते हैं, वह सूर्य (जो कि एक तारा है) का चक्कर लगाने वाला एक ग्रह है । सूर्य का चक्कर लगाने वाले ऐसे कई ग्रह हैं और इन ग्रहों के भी अलग-अलग चक्कर लगाने वाले कई-कई उपग्रह हैं, जैसे हमारी पृथ्वी का उपग्रह चन्द्रमा है, जो पृथ्वी का चक्कर लगा रहा है । सूर्य के ये ग्रह हमारी पृथ्वी से कुछ छोटे भी हैं और वृहस्पति जैसे इतने बड़े भी कि हमारी पृथ्वी जैसी हज़ारों पृथ्वी उसमें समा जाएं । सूर्य और सूर्य के इन ग्रहों-उपग्रहों (यानी सौर मण्डल) के बीच हमारी पृथ्वी का अस्तित्व बहुत छोटा है ।

हमारा सूर्य हमारी आकाशगंगा का एक तारा है । इस आकाशगंगा में लगभग दो सौ अरब तारे (यानी सूर्य) हैं । जिनमें बहुत से तारे हमारे सूर्य से हज़ारों गुना बड़े और चमकदार हैं ।

–शांकर भाष्यार्थ

(आदि शंकरचार्य कृत भाष्य का अर्थ)

ढहती सरकारी इमारतें

आश्चर्य होना स्वाभाविक है कि
अंग्रेज़ों के बनवाए पुल और इमारतें
सैकड़ों बरस बाद भी और
उचित देखभाल के अभाव में भी
आज भी मज़बूती से टिके हुए हैं
इधर हमारे अपने बनवाए हुए पुल
सड़के इमारतें ढह-ढह जाते हैं
कुछ तो कारण है इस फ़र्क़ का ।
क्या इसे ढूंढ़ने बहुत दूर जाने की
अधिक जांच-पड़ताल की ज़रूरत है ?
इस आपराधिक कृत्य में लिप्त सभी
नीचे से ऊपर तक वे अधिकारी
कर्मचारी ठेकेदार दोषी हैं
साथ ही वे नेता जिनका वरद्हस्त
इनके सिरों पर रहता इन्हें बचाता है ।
जिन्हें सरकार किसी का
भी डर छू तक नहीं जाता है ।

ओमप्रकाश बजाज
पोस्ट बाक्स नं० : 595, जी०पी०ओ०,
इंदौर (म०प्र०)

लघुकथा

भ्रम

■ डॉ॰ पूरन सिंह

सुमित्रा के तीन बेटे हैं और तीनों को उसके पति ने खूब पढ़ाया-लिखाया । आज तीनों ही नौकरी करते हैं । तीनों की शादी भी सुमित्रा के पति ने कर दी थी । वे सेवा में थे तभी ।

सुमित्रा के पति समय से सेवा निवृत्त हुए और अपनी सेवा निवृत्ति के दो ढाई वर्ष के बाद ही उनका देहान्त हो गया । पति की मृत्यु के दुख और उनके वियोग में सुमित्रा बीमार रहने लगी, तो सबसे पहली समस्या आई कि आख़िर सुमित्रा को कौन रखे । जो बच्चे जब सुमित्रा ठीक थी और उसका पति कमाकर लाता था, तब 'मम्मी-मम्मी' की रट लगाए रहते थे । आज उन्हें रखने के लिए 'मुड़फुटौव्वल' करने पर उतर आए थे ।

मम्मी को मझले वाला रखे, मेरे पास पहले से ही बहुत ज़िम्मेदारियां हैं । बड़े वाले का तर्क बिच्छू के डंक के मानिंद खड़ा रहता ।

मैं क्यों रखूं, छोटे वाला रखे । मम्मी ने सारी चीज़-गहने उसकी बहू के पास रखे हैं । वही कराए इलाज मम्मी का । मंझले वाला अपनी नौकरी पेशा पत्नी के सुर में सुर मिलाते हुए रेंकता ।

'मैं, मैं क्यों रखूं, मम्मी को । मैं तो सबसे छोटा हूं । बड़े भइया को रखना चाहिए । बड़े भइया के पास ही तो पूरे घर की मालिकी है..... ना बाबा ना.....मैं.....मैं तो मम्मी को किसी क़ीमत पर नहीं रखने वाला ।' अपनी पत्नी के घूंघट में मुंह छिपाकर छोटे वाला मिमियाता ।

सुमित्रा की स्थिति दिनों दिन ख़राब होती जा रही थी । तभी पड़ोस के देवी चाचा ने सुमित्रा को सरकारी अस्पताल में भर्ती करवा दिया था । ज्यों-ज्यों सुमित्रा का इलाज चलता त्यों-त्यों उसकी तबीयत और ज़्यादा बिगड़ती जाती थी । हार-थककर एक दिन डॉक्टरों ने अपना निर्णय सुना दिया था, हम चाहते हैं मां जी कि आप अपने घर जाएं और अपने अपनों के बीच ही रहें ।

डॉक्टरों की बात सुनकर सुमित्रा के होंठ कंपकपाए थे, 'बेटा, अगर आप मेरे-बेटों बहुओं को मेरा अपना कहते हो तो मुझे इतना बता दो यदि वे मेरे अपने हैं तो फिर बेगाने कौन होते हैं ।.....बेटा...मेरे बच्चे.....मैं घर नहीं जाऊंगी.....मैं इसी अस्पताल में ही मरना चाहती हूं । कम से कम यहां कोई भ्रम तो नहीं है कि यहां कोई मे...रा...अ....प....ना ।' और इतना कहने के ठीक दो घड़ी के बाद ही सुमित्रा अपनी अंतिम सांसारिक यात्रा पर निकल पड़ी थी ।

नवगीत

ज़िन्दगी

ज़िन्दगी कब तक बनाये
ख़ैर अपनी ज़िन्दगी की
हादसे हर रोज़ सड़कें नापते हैं
तोप से डरकर परिन्दे कांपते हैं
हंस रहा शातिर बवंडर
नाव हर सहमी हुई है
वन्दना पर घिरा संकट
यातना है वन्दगी की
हर सुबह एक अल्पना कटती छुरी से
नाभि खिसकी है मनुजता की, धुरी से
गालियां हर रोज़ हंसती
जीतकर पावन उक्ति से
है प्रताड़ित सरल शुचिता
वन्दना है गन्दगी की
सभ्यता का हर कवच जर्जर हुआ है
आदमी बस यंत्रचालित इक सुआ है
अब हिमालय झुक रहा है
क्षुद्र घाटी के चरण में
चतुष्पथ पर शील पिटता
सुस्तुति नित्य दरिन्दगी की ।

डॉ॰ रामसनेही लाल शर्मा 'यायावर'
86, तिलकनगर, बाईपास रोड, फ़ीरोज़ाबाद

आबादी सवा सौ करोड़ से अधिक, व्यक्तिगत गोल्ड मेडल सिर्फ़ एक

■ ए॰ एन॰ शिब्ली

चीन के बाद भारत आबादी के हिसाब से दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है । ताज़ा आंकड़ों के मुताबिक़ इस समय भारत की आबादी 129 करोड़ से अधिक है । दुनिया के दूसरे कई ग़लत कामों में तो हमारा देश बहुत आगे है मगर अफ़सोस की बात यह है कि खेलों के मामले में हम दुनिया में बहुत पीछे हैं । एक दो खेल में तो हमारी कुछ हैसियत है भी मगर अधिकतर खेलों में भारत दुनिया के दूसरे देशों के मुक़ाबले कहीं नहीं ठहरता । भारत के एक राज्य से कम की आबादी वाले देश भी भारत से बेहतर प्रदर्शन करते हैं । भारत सौ से अधिक वर्षों से ओलंपिक में भाग लेता आ रहा है जिसमें उसने अब तक 27 पदक जीते हैं जिसमें सिर्फ़ एक व्यक्तिगत स्वर्ण पदक है जो अभिनव बिंद्रा ने जीते थे । अमेरिका के तैराक माइकल फेल्प्स अकेले 28 पदक जीत चुके हैं । एक तरफ़ जहां अकेला एक व्यक्ति इतने पदक जीत चुका है वहीं दूसरी ओर इतना बड़ा देश पदक के लिए तरस रहा है ।

रियो में ओलंपिक जारी है । इस पंक्ति के लिखे जाने तक सबके सब खिलाड़ियों ने मायूस ही किया है । जिनसे इस बार बहुत आशाएं लगायी गयी थी वह भी नाकाम रहे हैं । इस पंक्ति के लिखे जाने तक इस बार ओलंपिक खेलों में भारत को सिर्फ़ एक कांस्य पदक साक्षी मलिक ने दिलवाया है । निशानेबाज़ अभिनव बिंद्रा बिल्कुल क़रीब आकर पदक से चूक गये, जबकि पुरुष हॉकी टीम आख़िरी तीन सेकेंड में गोल गंवाकर ओलंपिक चैम्पियन जर्मनी से 1-2 से हार गयी । ट्रैप निशानेबाज़ी में मानवजीत सिंह संधू और कीनान चेनाइ पहले दिन के प्रदर्शन को बेहतर नहीं कर सके और ओलंपिक पुरुष ट्रैप सेमीफाइनल में प्रवेश नहीं कर

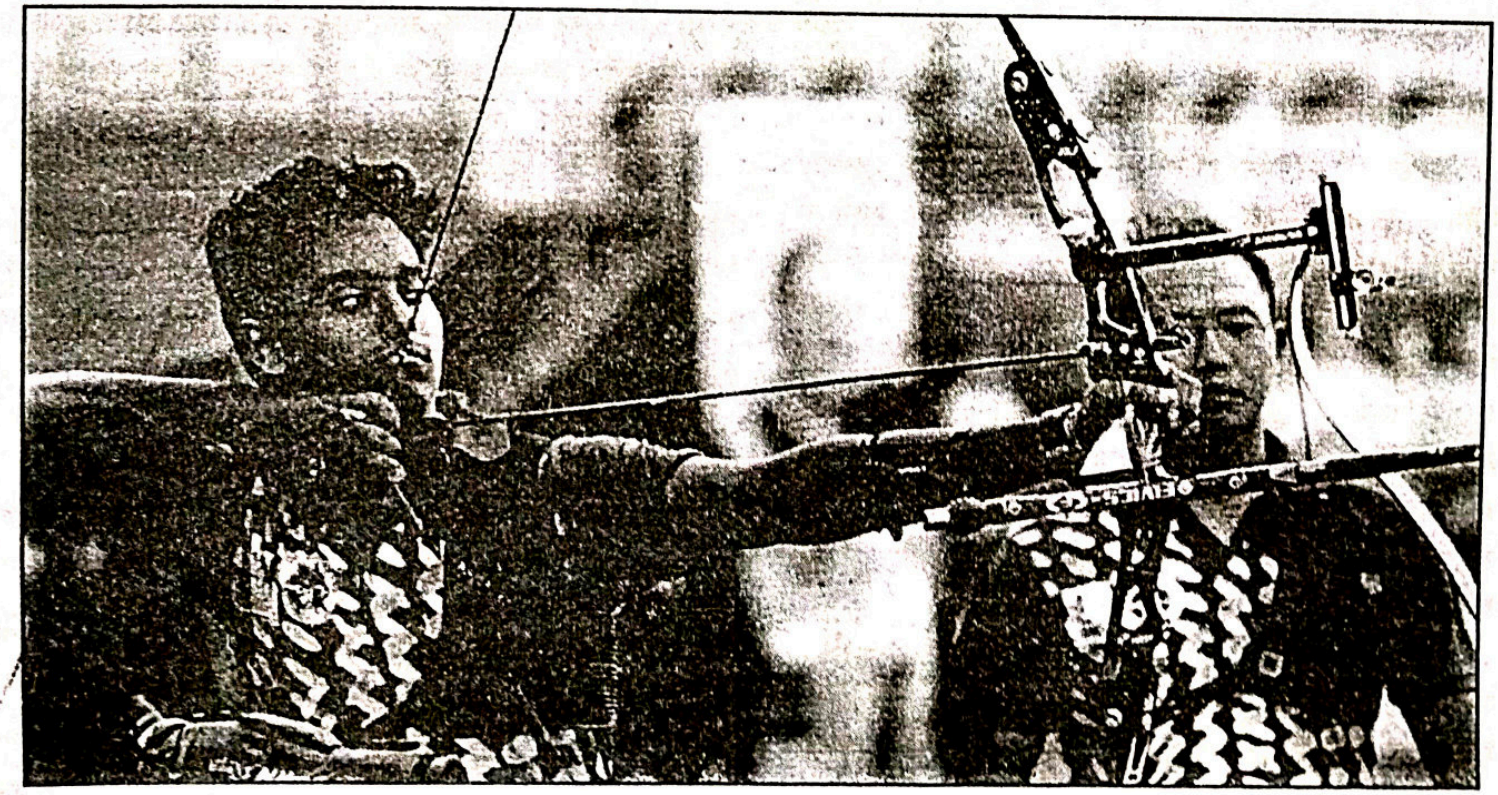

पाये । संधू 16वें और चेनाइ 19वें स्थान पर रहे । महिला तीरंदाज़ लक्ष्मीरानी मांझी व्यक्तिगत स्पर्धा में ख़राब प्रदर्शन के बाद स्लोवाकिया की अलेक्जेंड्रा लोंगोवा से हार कर बाहर हो गयी । मांझी ने यह मुक़ाबला 1-7 से गंवाया ।

बीजिंग ओलंपिक 2008 के व्यक्तिगत स्वर्ण पदक विजेता बिंद्रा पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में शूटआफ़ में उक्रेन के एस॰ कुलीश से हार गये । वैसे तो देश बहुत उदास है, मगर बिंद्रा पदक से चूकने के बावजूद अपने प्रदर्शन से ख़ुश हैं । दूसरा ओलंपिक पदक जीतने का सपना टूटने के बावजूद भारत के स्टार निशानेबाज़ अभिनव बिंद्रा ने कहा कि वह अपने प्रदर्शन से ख़ुश हैं । बिंद्रा ने पत्रकारों से कहा, ''ऐसा होता है । किसी को चौथे नंबर पर रहना था और मैं रहा । मैंने अच्छा प्रदर्शन किया ।'' उन्होंने कहा, ''मैंने पूरी कोशिश की और मैं अपने प्रदर्शन से ख़ुश हूं । यह अच्छा और कठिन दिन था । मैंने अपना सब कुछ दिया और ओलंपिक में दुनिया में चौथे स्थान पर रहकर अपने कैरियर से विदा ली । पदक जीतता तो और अच्छा होता । मैं बहुत क़रीब पहुंचा लेकिन मैं ख़ुश हूं ।''

युवा भारतीय तैराक साजन प्रकाश और शिवानी कटारिया रियो ओलंपिक की तैराकी स्पर्धा में अपने-अपने वर्ग से शुरुआती दौर में ही बाहर हो गये । साजन 200 मीटर बटरफ्लाय हीट में 43 तैराकों में 41वें स्थान पर रहे । वहीं शिवानी 200 मीटर फ्रीस्टाइल में 29 तैराकों में 28वें स्थान पर रही । वह अपनी हीट में दूसरे स्थान पर रही थी बल्कि साजन पांच तैराकों में चौथे स्थान पर थे ।

तीरंदाज़ी में भारत की सबसे बड़ी पदक उम्मीद दीपिका कुमारी ज़रूरत के समय अच्छा प्रदर्शन करने में नाकाम रही और रूस ने रियो ओलंपिक की महिला रिकर्व तीरंदाज़ी स्पर्धा के रोमांचक क्वार्टर फाइनल में शूटआफ़ के ज़रिये भारत को 5.4 से हरा दिया । चार सेट के बाद स्कोर 2.2 से बराबर था लेकिन शूट आफ़ में रूस की तुइयाना डी, सेनिया पेरोवा और इन्ना स्टीपानोवा ने 35.23 से जीत दर्ज की । दीपिका का प्रदर्शन तीनों भारतीयों में सबसे ख़राब था । उसे आख़िर में परफेक्ट 10 स्कोर करना था लेकिन यह स्टार तीरंदाज़ सिर्फ़ 8 अंक बना सकी ।

एशियाई खेलों के पूर्व स्वर्ण पदक विजेता विकास कृष्णन (75 किलो ग्राम) भार वर्ग के क्वार्टर फाइनल में दूसरे वरीय बक्तेमीर मेलिजकुजेव से हारकर रियो खेलों से



बाहर हो गये । शिवा थापा (56 किलो ग्राम) और मनोज कुमार (64 किलो ग्राम) भार वर्ग में पहले ही हारकर बाहर हो चुके थे । हार से मायूस मुक्केबाज़ विकास कृष्णन (75 किलो) ने कहा कि वह इससे बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकते थे जो उन्होंने उजबेकिस्तान के बेक्तेमिर मेलिकुजिएव के ख़िलाफ़ किया । विकास ने कहा, ''मैं माफ़ी चाहता हूं कि मैंने आप सभी को निराश किया । मैंने पहले दौर में बढ़त बनाने की कोशिश की लेकिन पहला दौर गंवाने के बाद वापसी मुश्किल थी और मैंने उम्मीद छोड़ दी ।''

भारत को जिम्नास्टिक स्पर्धा में दीपा कर्माकर से बहुत उम्मीद थी मगर वह चौथे स्थान पर रही । दीपा को अपनी हार का इतना अफ़सोस हुआ कि खेलगांव पहुंचने के बाद दीपा फूट-फूटकर रोई ।

टेनिस में सानिया मिर्ज़ा और बैडमिंटन में साइना नेहवाल से बहुत आशाएं थीं मगर इन सभों ने भी मायूस किया । कुल मिलकर अब तक जितनी भी स्पर्धाएं हुई हैं उनमें कुछ खिलाड़ियों ने कुछ बेहतर प्रदर्शन तो किया है मगर पदक सिर्फ़ साक्षी को मिला है ।

खेल विशेषज्ञों का मानना है कि भारत में खिलाड़ियों को वैसी सुविधाएं मिलती ही नहीं हैं की उनसे ओलंपिक जैसे बड़े आयोजन में पदक की उम्मीद की जा सके । सरकार भी, मीडिया भी और ख़ुद आम जनता भी पूरे साल धोनी-धोनी और कोहली-कोहली करती रहती है । जब दूसरे खेलों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा, उनके खिलाड़ियों को सुविधाएं नहीं दी जाएंगी तो फिर भला उनसे पदक की उम्मीद कैसे की जा सकती है ।

धनोपार्जन और इस्लाम

■ डॉ० फ़रहत हुसैन

अपनी आजीविका प्राप्ति के लिए मनुष्य व्यापार, व्यवसाय व उद्योग स्थापित करता है, मज़दूरी करता है या नौकरी करता है। इस प्रकार किसी न किसी रूप में उत्पादन क्रिया में सहभागिता करता है। मनुष्य अधिक से अधिक धन कमाना चाहता है जिससे उसका रहन-सहन का स्वर ऊंचा उठे। यह इच्छा आर्थिक विकास में सहायक होती है परन्तु जब यह अनियंत्रित, अन्तहीन एवं सिद्धांतहीन हो जाती है तो समाज के ताने-बाने बिखरने लगते हैं। अधिक से अधिक धन कमाने की होड़ में अनैतिक, असामाजिक बल्कि मानवता विरोधी कार्य किये जाते हैं। इस्लाम अपनी नैतिक एवं क़ानूनी व्यवस्था द्वारा आर्थिक गतिविधियों को इस प्रकार नियंत्रित करता है कि आर्थिक विकास की गाड़ी आगे बढ़े, साथ ही समाज को किसी प्रकार की क्षति न हो। यह सुन्दर सामनजस्य किसी अन्य व्यवस्था में नहीं पाया जाता।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–"लोगो ईश्वर से डरो और आजीविका प्राप्ति की अपनी कामना को अच्छा स्वरूप प्रदान करो (क्योंकि) कोई व्यक्ति उस समय तक मर नहीं सकता जब तक उसके भाग्य का धन उसे प्राप्त नहीं हो जाता।... अत: अल्लाह से डरो और आजीविका में उत्तमता अपनाओ। वैध आजीविका प्राप्त करो और अवैध का त्याग करो। (इब्न माजा)

उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि मनुष्य को भाग्य से कम या अधिक नहीं मिल सकता तो फिर कमाने के नाजायज़ अथवा अवैध मार्ग को अपनाना मूर्खता है। एक अन्य कथन के अनुसार बच्चा जब गर्भ में होता है तभी उसकी आजीविका अल्लाह द्वारा निर्धारित कर दी जाती है। (मुस्लिम)

उपरोक्त कथनों / शिक्षाओं से यह आशय लेना त्रुटिपूर्ण होगा कि भाग्य भरोसे मनुष्य कर्म ही छोड़ बैठे। पवित्र क़ुरआन में आदेश दिया गया–"नमाज़ पूरी कर लेने के बाद आजीविका प्राप्ति हेतु धरती में फैल जाओ।" (62:10)

अर्थात ईश्वर की उपासना के पश्चात अपनी तथा अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आर्थिक क्रियाओं में संलग्न हो जाओ। इसी तरह संन्यास अथवा संसार त्याग की अनुमति नहीं दी गयी।

इस्लामी व्यवस्था की विशेषता यह है कि इसमें आर्थिक गतिविधियों को समुचित महत्व देते हुए उन्हें प्रोत्साहित तो किया गया परन्तु उनको नैतिक बंधन में बांध कर रखा गया। इसके लिए हलाल व हराम की अवधारणा दी गयी। इस्लामी शरीअत द्वारा वर्जित व्यापार, व्यवसाय तथा आर्थिक क्रियाकलाप हराम, अवैध तथा नाजायज़ हैं, इनकी पूर्ण मनाही है। अपनी आजीविका के लिए इन्हें अपनाना पाप है तथा शरीअत में क़ानूनन दंडनीय है। इन वर्जित कार्यों के अतिरिक्त शेष सभी कार्य हलाल वैध तथा जायज़ हैं।

इस्लामी शरीअत ने जिन तरीक़ों पर प्रतिबंध लगाया वे ये हैं–

1. किसी की धन संपत्ति उसके मालिक की स्वतंत्र सहमति के बग़ैर, अथवा अनुचित दबाव डालकर अथवा धोखे से लेना
2. घूसख़ोरी
3. अमानत में ख़यानत
4. चोरी-डकैती
5. अनाथ के धन में अवैध हिस्सेदारी
6. नाप-तौल में हेरा-फेरी
7. अश्लीलता फैलाने के कारोबार
8. नाच-गाने का पेशा
9. व्यभिचार तथा वेश्यावृत्ति का धंधा
10. शराब तथा नशीली वस्तुओं के कारोबार
11. जुआ तथा उसकी सभी क़िस्में
12. प्रतिमा निर्माण तथा तत्संबंधी कार्य
13. ब्याज तथा उस पर आधारित कारोबार

यह कार्य किसी व्यक्ति को क्षणिक आर्थिक लाभ पहुंचा सकते हैं परन्तु दूरगामी स्तर पर उस व्यक्ति के लिए भी हानिकारक होते हैं तथा समाज में अव्यवस्था, अनैतिकता, अन्याय, अत्याचार तथा शोषण का कारण बनते हैं। इनसे सामाजिक ढांचे को घोर आघात पहुंचता है। कल्याणकारी राज्य का उत्तरदायित्व होगा कि इस प्रकार की गतिविधियों को बलपूर्वक रोके एवं दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही करे।

"फ़ने तालीम व तर्बियत" भाग-1 का हिन्दी में पहला संस्करण

शिक्षण-प्रशिक्षण कला

(भाग-1)

अफ़ज़ल हुसैन
एम०ए०एल०टी

इस पुस्तक में बच्चों की मनोस्थिति, शिक्षा के नियम, शिक्षक के गुण, प्रधानाचार्य के दायित्व, शिक्षण के तरीक़े, प्रशिक्षण के दंग, पाठशाला की व्यवस्था, शिक्षा संस्थाओं की सफलता की शर्तें और सहयोग प्राप्त करने के स्वरूपों पर विचार से प्रकाश डाला गया है ।

इसमें माता-पिता और शिक्षकों के लिए सरल और सुगम भाषा में बच्चों के इस्लामी दृष्टिकोण से शिक्षण और प्रशिक्षण के नियम बयान किये गये हैं । आशा है कि उर्दू संस्करण ही की तरह इसे भी आसामान्य लोकप्रियता प्राप्त होगी ।

साइज : $\frac{23 \times 36}{16}$ कुल पृष्ठ : 552 मूल्य : 325-00

MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazl Enclave,Jamia Nagar
New Delhi-110025 • Phone: 26981652,26984347
• Fax: 26987858 • E-mail: mmipublishers@gmail.com
• website: www.mmipublishers.net

मुन्ना : प्रेरक बाल-कहानियां

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

पुस्तक	: मुन्ना (बाल कहानी-संग्रह)
कवयित्री	: कीर्ति भटनागर
पृष्ठ	: 40 मूल्य : 80.00
प्रकाशक	: संगम पब्लिकेशंज़, पटियाला-147001
मोबाइल	: 09915103490

'मुन्ना' सिद्धहस्त लेखिका सुकीर्ति भटनागर का बाल कहानी-संग्रह है । इस संग्रह में पांच कहानियां क्रमशः 'मुन्ना', 'आत्मशक्ति', 'अनोखे लाल', 'महक' और 'आज के बाद' संकलित हैं । इन कहानियों को पढ़ने से महसूस होता है कि लेखिका को बाल मनोविज्ञान का गहन ज्ञान और परख है । इसलिए बाल-सुलभ चंचलता और क्रिया-कलापों तथा बाल मनोभावों का सुन्दर एवं मनोहक चित्रण इन कहानियों में हुआ है । लेखिका को भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है । भाषा दोष नगण्य है । ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है ।

पहली कहानी 'मुन्ना' पंजाब के आतंकवाद की पृष्ठभूमि पर है; हालांकि यह पृष्ठभूमि कहीं की भी हो सकती है । बात उस समय की है जब पूरा पंजाब आतंकवाद से त्रस्त था । मुन्ना एक बारह वर्षीय बालक है, जो एक आतंकी का पुत्र है । वह स्वयं अपने पिता की आतंकी कार्रवाई का शिकार होता जाता है । वह तीव्र गति से आती एक ट्रेन को बचाने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देता है, जिसके नतीजे में वह अपनी दोनों टांगें गंवा बैठता है ।

आतंकवाद या किसी भी तरह का बिगाड़ क्यों पैदा होता है ? "हर दिन ऐसी ही घटनाएं, ऐसी ही मौतें और ऐसा ही आतंक(पर क्यों, किसलिए होता है यह सब ? धन के लिए, जाति-धर्म के नाम पर, या फिर राष्ट्र के बंटवारे के लिए ?" (मुन्ना, पृ॰ 7)

लेखिका ने इस ओर इन शब्दों में इशारा किया है, "जब मानवीय सोच और मानसिकता विकृत हो जाती है, तब राष्ट्र, समाज, परिवार सब बिखराव की स्थिति में आ खड़े होते हैं ।" इस बिखराव का दोषी कोई एक पक्ष नहीं होता है । हर एक कुछ न कुछ दोषी होता है । लेखिका इसका उपचार बताते हुए कहती है, "वही राष्ट्र सुदृढ़, समृद्ध और प्रगतिशील हो सकता है, जहां के वासी सुसंस्कृत और शाश्वत नैतिक मूल्यों को अपनाने वाले होते हैं ।" सचमुच शिष्टाचारपूर्वक शाश्वत नैतिक मूल्यों की रस्सी को मज़बूती के साथ पकड़े रहना ही शांतिपूर्ण और अनुशासित समाज के निर्माण की कुंजी है । इसके अभाव में सुख-शांति की हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं । गुरु गोविन्द सिंह जी ने कहा भी है–शुभ कर्मण से कबहुं न टरौ । यानी नेक कामों से कभी न हटो, कण भी नहीं । इसी लिए हमें शुभ कर्म करते हुए 'मानवता' का आंचल थामे निरन्तर आगे बढ़ना है । दूसरी कहानी 'आत्मशक्ति' है । इसमें एक खुलहाल घराने की दो जुड़वां बहनों–ममता और स्मिता की कहानी है, जो 'जैविकीय असमानता' नामक अस्थि रोग से ग्रस्त है । दोनों बहनें अपनी उम्र के बच्चों के समय समय पर किए जाने वाले उपहास से दुखी और निराश हो जाती तो उनके माता-पिता उन्हें समझाते हुए कहा करते, "इस जीवन में किसी के भी हर चीज़ नहीं मिलती । कहीं न कहीं, कोई न कोई कभी तो रह ही जाती है । इसलिए निराश और दुखी होने के स्थान पर आशावादी बनकर हिम्मत से जीवन जीने की चेष्टा करनी चाहिए ।" (आत्मशक्ति, पृष्ठ 16)

माता-पिता की उत्साहवर्द्धक बातों का यह असर हुआ कि दोनों बहनें जी-जान से पढ़ाई, चित्रकारी और संगीत में लग गई । नतीजा यह हुआ कि हर समय उदासी में डूबी, सिकुड़ी-सिमटी -सी व्हील चेयर पर बैठी रहने वाली दोनों अपनी बहनें अपनी लगन और कड़ी मेहनत के बल पर एक दिन अपनी कला का सर्वोत्तम प्रदर्शन के कारण उन्हें राष्ट्रति पुरस्कार प्राप्त हुआ । स्वाभिमान और आत्मविश्वास की चमक से उनके चेहरे दमक रहे थे और चिढ़ाने वाले बच्चों का दृष्टिकोण भी उनके प्रति बदल गया और उन्होंने उनकी आत्मशक्ति की प्रशंसा करते हुए अपने मित्रतापूर्ण हाथ उनकी ओर बढ़ा दिए । यह कहानी विकलांग बच्चों के लिए मार्गदीपक के समान है, जो सतत् उनका मार्गदर्शन करती रहेगी और उन्हें निराशा के भंवर से निकाल कर आशा के

प्रकाश में जीवन जीने की कला सिखाती रहेगी ।

'अनोखे लाल' एक सब्ज़ी बेचने वाले विनोदी स्वभाव और उपकारी प्रवृति के निष्काम व्यक्ति की कहानी है, क़िस्मत की लॉटरी निकलने के बाद रातों-रात उसकी दुनिया बदल जाती है । फिर भी वह सब्ज़ी बेचना नहीं छोड़ता है और लोगों की मदद करता रहता है । ऐसी ही लोगों के लिए संत कबीर ने कहा है–संत न छोड़े संतई ।

पांचवी कहानी है–आज के बाद । इस कहानी में संचार के साधानों के अति प्रयोग के कारण इस्क्कीसवीं सदी के बच्चों के बिगड़ने की कहानी है। मुक्ता और मोहित ऐसे ही दो बच्चे हैं जो मोइबाल, टी॰वी॰ कंप्यूटर, आई-पॉड वीडियो गेम इत्यादि के घनचक्कर में फंसकर अपनी पढ़ाई से दूर होकर अपना भविष्य अंधकारमय बना रहे हैं । उन्हें माता-पिता की बात भी अच्छी नहीं लगती । वे समझते हैं कि माता-पिता उनके हितैषी नहीं हैं, नहीं तो बात बात पर उन्हें क्यों टोकते ।

एक दिन पिकनिक स्थल से प्राकृतिक दृश्यों के फ़ोटो ख़ींचते-खींचते मुक्ता पिकनिक पर आए अपने परिवार से बिछुड़ जाती है । इस कठिन परिस्थितियों में उसके माता-पिता मोबाइल के माध्यम से उसे खोज निकालते हैं और उनकी समझ में संचार के नवीनतम साधनों की की उपयोगिता आ जाती है ।

इस पर मोहित के पिता कहते हैं, ''तुम ठीक कहते हो बेटा, आज मुझे पहली बार इस बात का आभास हुआ कि मीडिया से जुड़ी चीज़ें हमारे लिए कितनी उपयोगी हैं ।''

''वह तो ठीक है, पर हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि हर बात के दो पक्ष होते हैं–अच्छा और बुरा। इसलिए हर काम में संतुलन बनाए रखना बहुत आवश्यक है; क्योंकि अति तो हर चीज़ की बुरी होती है ।''

''हां मां, तुम ठीक कहती हो । भविष्य में हम फ़ोन का दुरुपयोग कभी नहीं करेंगे ।'' दोनों बच्चे एक साथ बोले, तो माता-पिता ने भी हंसते हुए कहा, ''फिर तो आज के बाद हमें भी तुम दोनों को डांटने-डपटने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी-।'' (आज के बाद, पृष्ठ 39)

कुल मिलाकर ये प्रेरणाप्रद और सशक्त कहानियां हैं । इसके चरित्र जीते-जागते और समाज से लिये गए हैं । ये कहानियां बाल-सुधार और विकास में योगदान अवश्य करेंगी । आवरण-सज्जा आकर्षक और बाल सुलभ है । 'मोबाइल' और 'साइकिल' शुद्ध है, 'मोबाईल' और 'साईकिल' नहीं ।

साहित्य-समाचार

चीन में शोध संगोष्ठी

विश्व हिन्दी मंच भारत और गुंआंगदोंग अन्तर्राष्ट्रीय भाषा विश्वविद्यालय ग्वानजाऊ चीन के संयुक्त तत्वावधान में चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी, पर्यटन और हिन्दी प्रचार का सप्त दिवसीय पिछले दिनों हांगकांग में किया गया । आयोजन में भारत के 10 प्रदेशों के 50 प्रतिनिधियों और चीन के हिन्दी प्रोफ़ेसरों की भागीदारी रही । 23 जून को 'वासमती' होटल हांगकांग के विशाल कक्ष में अन्तर्राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसका विषय ''साहित्य और संवेदना'' था ।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि क्वानतोंग वैदेशिक अध्ययन विश्वविद्यालय क्वाञ्चौन के हिन्दी प्रोफ़ेसर क्रमशः डॉ॰ गंगाप्रसाद शर्मा, प्रो॰ हरूई एवं श्रीमती थ्यान खफिंग, मुख्य अतिथि दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ॰ मुरली मनोहर पाठक रहे । अध्यक्षता डॉ॰ रामसनेही लाल शर्मा यायावर ने की । आयोजन में कई रचनाकारों की कृतियों के लोकार्पण के साथ डॉ॰ प्रणव शर्मा और डॉ॰ प्रजीता गोस्वामी द्वारा संपादित कृति ''साहित्य और संवेदना'' तथा डॉ॰ यायावर की कृति 'आधुनिकता का दर्पण' का भी लोकार्पण हुआ ।

विद्वानों ने हिन्दी की वैश्विक स्थिति तथा साहित्य में संवेदना के स्वरूप, साहित्य और संवेदना के अंत:संबंध तथा कालिदास के काव्य में संवेदना जैसे विधि विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किये । अनेक हिन्दी सेवियों को सम्मानित किया गया । चीनी विश्वविद्यालय के तीनों प्रोफ़ेसरों ने चीन में हिन्दी की स्थिति पर प्रकाश डाला । डॉ॰ यायावर को 'विश्व हिन्दी सेवी' की मानद उपाधि प्रदान की गयी ।

कार्यक्रम के अंत में डॉ॰ यायावर ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कार्यक्रम को वाक्‌यज्ञ कहा और डॉ॰ प्रणव शर्मा को उसका ऋत्विक बताते हुए इक्कीसवीं सदी के नवगीत का संवेदना संसार विषय पर अपना वक्तव्य दिया । धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम संचालक डॉ॰ प्रणव शर्म ने किया ।

मकाऊ भ्रमण, हिन्दी सेवी भारतीयों से भेंट, हिन्दी अध्ययन केन्द्रों तथा विश्वविद्यालय-भ्रमण तथा प्रमुख पर्यटन स्थलों का भ्रमण भी किया गया ।

कहां हैं ख़ुशियां ?

■ चांद ख़ां रहमानी

गांव में ट्रैक्टर-ट्रॉली के घुसते ही बच्चों ने शोर मचाना शुरू कर दिया, ट्रैक्टर आ गया–ट्रैक्टर आ गया । गांव में घुसते ही कीचड़ से भरी गली में ट्रैक्टर का पिछला पहिया धंस गया । ट्रैक्टर के आने के इन्तिज़ार में खड़े युवकों ने आनन-फ़ानन में ईंटों का इन्तिज़ार किया और ट्रैक्टर के पहिया के नीचे लगा दिया ताकि इंजन का ज़ोर लगने पर पहिए को मज़बूत ज़मीन मिलने पर वह बाहर निकल आये। कुछ इंजन की ताक़त और कुछ युवकों ने ज़ोर लगाया, तो ट्रैक्टर का पहिया कीचड़ से निकल गया । ट्रैक्टर को सही जगह पर खड़ा करा कर उसकी ट्रॉली में भरे टेंट के सामान को जल्दी-जल्दी उतारा जाने लगा । कल शादी है । बारात सुबह ही आ जाएगी, इसलिए सब हड़बड़ी में है । युवकों के झुंड में ज़बरदस्त उत्साह है । ज़िन लोगों की लड़की वालों से अनबन थी, वे युवक भी सामान उतारने और काम कराने में व्यस्त हैं । हमारे घर में भी बहन बेटी की शादी होगी, तब कौन साथ देगा, इसलिए सब काम में जुटे हैं ।

जब भी कोई पुलिस का काम पड़ता है तो दिल्ली वाले साबिर फूफा ही संभालते हैं । कई बार वे इस तरह के मामले निबटा चुके हैं । इसलिए वे इस घर के लिए विशिष्ट मेहमान हैं । उन्हें 15 दिन पहले ही फ़ोन पर दावत दे दी गयी है । सन्नो फुफ्फो की तीन साल पहले हार्ट अटैक से इन्तिक़ाल हो चुका है, सो इस बार फूफा को अकेले ही आना होगा । वैसे दोनों साथ चलते थे । दिल्ली वाले फूफा भी आ चुके हैं । उन्हें सभी लोग फूफा ही बुलाते हैं । जिस तरह से पिता अपने बच्चों से कहता है जा मम्मी को बुला ला, उसी तरह उनके साले-सलहज सब उन्हें फूफा ही कहते हैं । घर में भारी चहल-पहल है । हर आदमी काम में व्यस्त है । कोई दिशा-निर्देश दे रहा है । फूफा चारपाई पर बैठे हैं । उनके साथ दो रिश्तेदार भी बैठे हैं । कल से जो बारिश और बूंदाबांदी हो रही थी, वह आज भी जारी है।

गांव में शहरों की तरह टेंट लगाने का काम टेंट वाले नहीं करते सो टेंट लगाने का काम घर वालों के ज़िम्मे ही होता है । टेंट लगाना तो दूर टेंट हाउस का मालिक तो सामान भी नहीं निकलवाता, जो सामान चाहिए आपको खुद निकालना होगा और वहीं रखकर जाना होगा । सामान गुम होगा या टूटेगा तो उसके पैसे देने होंगे अगर बर्तन साफ़ नहीं मिले, तो उसकी सफ़ाई के पैसे भी आपको देने होंगे । सामान लादने और उसे ले जाने और वापस छोड़ने का ज़िम्मा भी आपका ही होता है । इसलिए युवक बड़ी मशक़्क़त के साथ ट्रॉली से सामान उतारने में लगे हैं ।

बूंदाबांदी जारी है । भारी बारिश की आशंका है, इसलिए बारिश से निबटने के लिए बड़े वाले आंगन में 20 फुट लंबी और 10 फुट चौड़ी तिरपाल तानने का काम जोरों पर है । कोई बांस गाड़ रहा है, तो कोई तिरपाल का कोना पकड़े खड़ा है, कोई बांस-बल्लियों का जाल बना रहा है, जिस पर तिरपाल रुक सके । कोई सलाह दे रहा है कि ऐसा करो या वैसा करो । कोई किसी पर चिल्ला रहा है...ख़ाली खड़ा है ये नहीं कि काम समेटवा ले ।

शाम होने को जा रही है, अंधेरा बढ़ रहा है । यूं भी बरसात के मौसम में अंधेरा ज़्यादा गहरा होता है । गांव में बिजली कम ही आती है इसलिए जनरेटर का इन्तिज़ाम सबसे पहले कर लिया है ।

आंगन में, गलियों में, गांव के हर हिस्से में कीचड़ है, मगर इसके बावजूद सब खुश हैं । किसी को न तो बारिश से परेशानी है न कीचड़ से, सबके चेहरों पर खुशी है । युवकों का झुंड अपने-अपने काम पर लगा है । शाम हो रही है लेकिन रिश्तेदारों का आने का तांता अब भी लगा है । जिस लड़की की शादी हो रही है उसके बहनोई, बहनोई के भाई, उनकी बहनें, फिर उनके रिश्तेदार सब पहुंच रहे हैं । जो दूर के रिश्ते में लगते हैं वे भी आ गये हैं । घर में अंधेरा है । एक लालटेन थी उसे भी कोई ले गया है । मोबाइल की रोशनी से काम चलाया जा रहा है । ज़मीन पर गद्दे पड़े हैं, पर उन्हें सील भरे गद्दों पर महिलाएं अपने बच्चों को लेकर अंधेरे में लेटी हैं । बच्चे पर बच्चा और महिला से सटी महिलाएं लेटी हैं । पैर रखने की जगह नहीं है । ऊपर

से ज़बरदस्त उमस है । गर्मी से लोग पसीने-पसीने हो रहे हैं । अंधेरे में किसी बच्चे के रोने की, तो किसी महिला के खिलखिलाने की आवाज़ आ रही है । अजीब तरह का घुटन भरा माहौल है, लेकिन इसके बाद भी सब खुश हैं । किसी के भी चेहरे पर न अंधेरे की परेशानी है, न लेटने-बैठने की चिंता है । कुछ रिश्तेदार तो आठ दिन पहले आ चुके हैं और कुछ शादी के आठ दिन बाद जाने का इरादा रखते हैं । किसी को कोई जल्दी नहीं है ।

रात हो चुकी है, लेकिन रिश्तेदार अभी भी आ रहे हैं । कोई रेलवे स्टेशन पर आ चुका है, तो कोई शहर के बस अड्डे पर । उन रिश्तेदारों को लाने के लिए लोग चल पड़े हैं । कुछ लोगों को ऐतिराज़ भी है अगर आना था तो घर से जल्दी चलना चाहिए था, इस तरह रिश्तेदार को परेशान करने का क्या मतलब ।' लेकिन जिस घर में शादी है उसको तो सबको खुश रखना है वो क्या करे, उसे उन रिश्तेदारों को लाना ही होगा ।

जिस घर में शादी है उस घर के समीप ही रेलवे लाइन गुज़र रही है । रिश्तेदार या इस मुहल्ले के युवक बोर होते हैं तो कुछ देर के लिए रेलवे ट्रैक पर घूम आते हैं । बच्चों को विशेष हिदायत के साथ जाने दिया जाता है । वैसे भी यहां के लोगों को ट्रेनों के आने जाने का समय पता है । इसी गांव के सटा रोड है जिस पर दिन-रात सवारियां चलती हैं । यही गांव का बस अड्डा है । रिश्तेदार यहां भी घूमने आ जाते हैं । रात हो चुकी है । रिमझिम बारिश हो रही है । उधर तिरपाल तानी जा चुकी है । युवकों में गजब का उत्साह है । डेक की आवाज़ तेज़ कर दी गयी है और डांस का कार्यक्रम शुरू हो गया है । महिलाएं अपने बच्चों को अंधेरे में सुलाकर बाहर आ चुकी हैं ।

इसी बीच एक महिला के रोने की आवाज़ आती है । डांस थोड़ी देर के लिए रुक जाता है । पता लगता है एक किशोर पर जिन्न का असर आ गया है । वह उल्टी करने लगता है । खुसर-फुसर शुरू हो जाती है । इन्हीं के एक नाराज़ रिश्तेदार की करतूत है । वह शाम को ही चैलेंज करके गया था कि देख लेना शाम को क्या कर सकता हूं । यह जादू उसने ही किया है । सब लोग उस कथित तांत्रिक रिश्तेदार को कोसने लगते हैं ।

इसके साथ ही जिन्न का काट करने के लिए किसी तांत्रिक की तलाश शुरू हो जाती है, लेकिन अंधेरी रात है इस समय कौन आएगा । आख़िर आधा घंटा बाद किशोर खुद ही ठीक हो जाता है । गांव में अब भी भूत-प्रेत, चुड़ैल और जिन्न का चक्कर खूब चलता है । उन्हें डॉक्टर या मनोचिकित्सक से ज़्यादा तांत्रिक पर ज़्यादा भरोसा है, क्योंकि ये लोग जल्दी सुलभ हो जाते हैं । लड़का ठीक हो गया, चलो बवाल कटा, नहीं तो रंग में भंग पड़ गया था ।

दिल्ली वाले फूफा, पसीने से तरबतर है । उन्हें नींद नहीं आ रही है । उनके लिए जो हवाई फंखा मंगाया गया था वह वोल्टेज कम होने के कारण चला नहीं । फूफा सोच रहे हैं कि यहां लोगों में कितना संतोष है ।

ये लोग इतने मुश्किल हालात और कम संसाधनों में भी मनोरंजन के पल ढूंढ़ लेते हैं । इनके लिए गांव का छोटा-सा बस अड्डा जहां गिनती की दस बारह दुकाने हैं, मनोरंजन का स्थान है । रेल की पटरी भी उनका मनोरंजन कर देती है । सब लोग खुश हैं । किसी को कोई शिकायत नहीं । किसी के चेहरे पर कोई गिला-शिकवा नहीं । अगर शहर होता, तो शायद ऐसी हालात में एक भी रिश्तेदार नहीं रुकता और दस जगह बदनामी करता सो अलग ।

यहां मेहमान और घर के लोग छोटी-छोटी चीज़ों में खुशियां ढूंढ़ लेते हैं । दूसरी ओर बड़े शहरों का जीवन है, जहां खुशियां काफ़ूर हो चुकी हैं । बड़े से बड़ा फ़ंक्शन भी उन्हें खुशी नहीं दे पाता है । बड़े-बड़े होटल, शहरों की शानदार इमारतें, चमचमाती सड़कें भी उनके चेहरे पर खुशी नहीं ला पातीं । शहरी लोग खुशियां तलाशने ऊंटी, कश्मीर, मनाली, बड़े हिल स्टेशनों के अलावा विदेशों का सफ़र करने जाते हैं, लेकिन दिली खुशी नहीं मिल पाती । एक कृत्रिम खुशी लेकर लौटते हैं । शहर का जीवन कितना टफ़ और समस्याग्रस्त है कि उसे खुशी ढूंढ़े नहीं मिल रही । लाखों रुपया ख़र्च करने के बाद भी शहर के लोगों के चेहरों पर संतोष का भाव नहीं होता । हम गांव से यह सोचकर शहर में आ गये कि बेहतर जीवन और खुशियों का संसार मिलेगा, लेकिन यहां समस्याओं का दरिया सामने खड़ा है । यह हमने कैसे शहर बसाये हैं, जहां जीवन एक संघर्ष बनकर रह गया है । फूफा को यह सब सोचते-सोचते सवेरा हो गया । अगले दिन भी बारिश हो रही है । बारात दोपहर में आ चुकी है । बारातियों के चेहरे खुशियों से लवरेज़ हैं । थोड़ी देर में बारात विदा हो गयी । फूफा भी सुबह होते ही दिल्ली के लिए निकल पड़े और ट्रेन में बैठकर भी गांव के लोग छोटी-छोटी बातों में भी खुशी तलाश लेते हैं उसी के बारे में सोचते हुए दिल्ली पहुंच गये हैं ।

अल्लाह और उसकी सृष्टि

● अबरार अहमद
(लाखेरीवाले)

इन्सान की सामान्य बुद्धि की बात है कि जब भी कोई कर्म होता है, तो इन्सान उसके कर्ता की कल्पना करता है आविष्कारक की कल्पना करता है । यह बात इतनी स्वाभाविक है कि संसार का कोई भी व्यक्ति इससे इन्कार नहीं कर सकता । यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि किसी भी आविष्कार को देखकर इन्सान उसके आविष्कारक के अस्तित्व को स्वीकार करता है तथा साथ ही उस ओविष्कार की उपयोगिता को देखकर उसे उस आविष्कारक के प्रति कृतज्ञ होना ही पड़ता है ।

यदि हम देखते हैं कि पूरी सृष्टि आश्चर्यजनक रूप से सुव्यवस्थित हैं सूरज और चांद सुव्यवस्थित तरीक़े से अपने-अपने कक्ष में परिक्रमा कर रहे हैं । रात और दिन किसी न किसी विशेष नियम के अनुसार आ- जा रहे हैं । साथ ही यदि हम स्वयं इन्सान के ऊपर विचार करते हैं, तो पाते हैं कि वह सोचने-समझने की ज़बरदस्त क्षमता रखता है । इन्सान के अस्तित्व के लिए आवश्यक सूरत, चांद, तारे, हवा आदि में पूर्ण सामंजष्य पाया जाता है । इन्सान को पीने के लिए जल उपलब्ध है, खाने के लिए अनेक प्रकार की खाद्य सामग्री मौजूद है । अपने आवश्यक कार्यों को पूरा करने के लिए प्रकाशमान दिन मौजूद है, आराम के लिए रात मौजूद है ।

अत: जब हम इस सुव्यवस्थित सृष्टि पर विचार करते हैं, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि निश्चय ही कोई ऐसी ताक़त मौजूद है, जो इस सृष्टि को चला रही है । अब यदि कोई यह कहे कि यह सृष्टि अनायाज ही अस्तित्व में आ गई तथा अपने-आप ही सुव्यवस्थित ढंग से चली जा रही है, तो हम उसे बेवकूफ़ ही समझेंगे ।

बुद्धिसंगत बात तो यह है कि इस सृष्टि का एक रचयिता है, जिसने अपनी शक्ति से योजनाबद्ध तरीक़े से इस सृष्टि का निर्माण किया है । वही इसे शून्य से अस्तित्व में लाया है । वही इस सृष्टि का स्वामी और शासक है, तथा उसी के आदेशानुसार यह ख़ास मक़सद के तहत हो रहा है तथा उसी के आदेशानुसार यह सृष्टि बिल्कुल सुव्यवस्थित ढंग से चल रही है । अत: यह सब एक ख़ास मक़सद के तहत हो रहा है तथा कुछ भी निरूदेदश्य नहीं है । दुनिया का सबसे बड़ा झूठ ही यह है कि यह सृष्टि अपने-आप पैदा हो गई, तथा बिना किसी उद्देश्य के अपने-आप सुव्यवस्थित ढंग से चल रही है ।

सृष्टि के अवलोकन से हमें इसके सृष्टा के अस्तित्व को स्वीकारना ही होगा । सृष्टि की विशालता, व्यापकता, अनुशासन तथा सुव्यवस्था आदि इस ओर संकेत करते हैं कि कोई न कोई सृष्टा अवश्य मौजूद है, उसी को हम अल्लाह के नाम से पुकारते हैं । यदि हम यह विचार करें कि एक देश के एक से अधिक प्रधानमंत्री हैं, तो हम पाते हैं कि उस देश की व्यवस्था ही बिगड़ जाएगी । अर्थात एक ही पद पर एक से अधिक व्यक्तियों का होना पूरी व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने के लिए काफ़ी है ।

यह तो हुई एक छोटे से देश की बात, अब हम यदि इस सुव्यवस्थित सृष्टि पर विचार करें तो हमारी बुद्धि हमें यह स्वीकार करने पर आमादा करती है कि इसे चलाने वाला केवल एक है और वही अल्लाह है । यदि इस सृष्टि को चलाने वाले एक से अधिक होते, तो वे एक-दूसरे को पराजित करने का प्रयास करते, फलस्वरूप इस सृष्टि की व्यवस्था बिगड़ जाती ।

अत: हम इस निकर्ष पर पहुंचते हैं कि यह सृष्टि सिर्फ़ और सिर्फ़ एक अल्लाह की रचना है । जब हम अल्लाह पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि वह मानवीय कमज़ोरियों से उच्च एवं पाक है । न उसके कोई मां-बाप है और न ही कोई बेटा या बेटी । उसे मौत तो क्या नींद और ऊंघ तक नहीं आती । उसने बिना किसी की सहायता के इस सृष्टि को उत्पन्न किया । वह एक ऐसी जीवंत सत्ता है, जिसने इस सृष्टि को बनाकर छोड़ नहीं दिया, बल्कि वह उस पर हर पक्ष शासन कर रहा है, इसी कारण यह सृष्टि सुचारू रूप से चल रही है ।

इन्सान, इस सृष्टि में अल्लाह की सर्वोत्तम रचना है । अल्लाह ने इन्सान को इस धरती पर अपना उत्तराधिकारी बनाया है । उत्तराधिकारी का काम है, अपने मालिक के आदेशों का पालना करना एवं करवाना । इस प्रयोजन हेतु अल्लाह ने धरती और आसमानों तथा जो कुछ इनके बीच स्थित है, सबको इन्सान की सेवा में लगा दिया है ।

इन्सान, अल्लाह की अन्य रचनाओं से इसलिए भिन्न है कि अन्य रचनाएं चाहे-अनचाहे सदैव अल्लाह की बन्दगी में लगी रहती हैं, जबकि इन्सान को यह स्वतंत्रता प्राप्त है कि वह अल्लाह की बन्दगी करे या न करे । इसी में उसकी परीक्षा भी है ।

यदि इन्सान इस धरती पर अल्लाह की बन्दगी करता है तथा अल्लाह के बताए हुए मार्ग पर चलता है तो वह स्वर्ग का अधिकारी है, जहां उसे हर तरह का ऐशो-आराम उपलब्ध होगा और यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो वह नरक का पात्र होता है, जहां उसे ज़बरदस्त अज़ाब दिया जाएगा ।

अल्लाह एक ऐसी हस्ती है कि इन्सान जो कुछ छिपाता फिरता है, उसकी ख़बर उसे रहती है । इन्सान, दूसरे इन्सानों से तो छिपा सकता है, परन्तु वह अल्लाह से कुछ नहीं छिपा सकता । इन्सान जो गुप्त मंत्रणाएं करते हैं, उनकी भी अल्लाह को ख़बर रहती है । अल्लाह इन्सान की गरदन की रग से भी ज़्यादा उसके नज़दीक है, अत: वह इन्सान के दिल में उभरने वाले वसवसों तक को जानता है । अल्लाह की क़ुदरत से कोई चीज़ बाहर नहीं है ।

जब कोई इन्सान, अल्लाह को सच्चे दिल से पुकारता है, तो अल्लाह न सिर्फ़ उसकी पुकार को सुनता है, बल्कि उसका जवाब भी देता है । वह इन्सानों के सारे कर्मों को अपनी परिधि में लिए हुए है । इस सृष्टि में जो कुछ है, वह केवल और केवल एक अल्लाह की रचना है । सिर्फ़ इन्सान ही नहीं, बल्कि पूरी सृष्टि का रचयिता एक और केवल एक अल्लाह है ।

अल्लाह की हस्ती सदैव से है और सदैव रहेगी । उसके सिवा कोई चीज़ अनादि और अनंत नहीं है । यह सृष्टि नश्वर है, एक दिन इसका विनाश होना निश्चित है, केवल अल्लाह की हस्ती सदैव बाक़ी रहने वाली है ।

अल्लाह वह जीवंत सत्ता है, जिसे कभी मौत नहीं आती । वह अपनी हस्ती और गुणों, अधिकारों और सत्ता में अकेला है । कोई उसका सहभागी और समकक्ष नहीं, अत: केवल वही बन्दगी के लायक़ है । बन्दगी, उपासना, आज्ञापालन तथा सजदा सिर्फ़ और सिर्फ़ उसी के लिए है । अल्लाह ही ने बिना किसी मिसाल के मात्र अपने आदेश से इस सृष्टि की रचना की है । इस रचना में कोई उसका सहायक नहीं है । इस सृष्टि का कोई रचयिता नहीं है अथवा इस सृष्टि के रचयिता एक से अधिक हैं, ये दोनों ही धारणाएं ग़लत हैं, मिथ्या हैं ।

चलने की तैयारी कर

झोली को मत भारी कर,
चलने की तैयारी कर ।

घोड़े-हाथी थक हारे,
पैदल की सवारी कर ।

रेशम महलों को तू छोड़,
जीवन को बंजारी कर ।

नील गगन में जो घर है,
उसकी गुज़र-गुज़ारी कर ।

दौड़ कभी तो पूरी होगी,
राहों से चल यारी कर ।

इक-इक कर क्या गिनता है,
दुनिया ही तू सारी कर ।

बेचे और ख़ारीदे तू,
मन को न पंसारी कर ।

डर बैठा नदिया तट पर
तूफ़ानों से यारी कर

अपनी धड़कन के भीतर
परलोक को यारी कर ।

अभिराम सत्यज्ञ जयशील
द्वारा, शंभु प्रसाद (डाकघर कर्मचारी)
हथुआ, बिहार

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

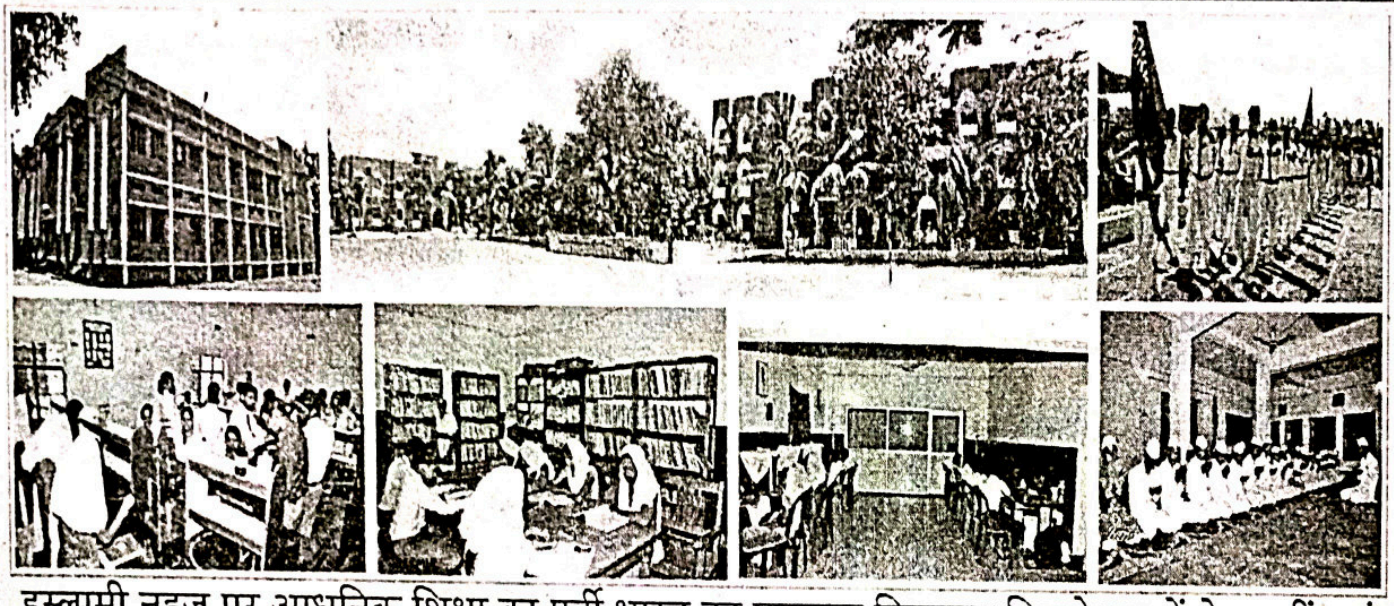

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम
एम.ए., बी.एड.ए (अलीग.)
निदेशक

साद राशिद ख़ान नदवी
फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ
छात्रावास अधिक्षक

वकील अहमद
एम.एस.सी., बी.एड.
प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

कैसा अद्‌भुत हमारा संसार ?

■ जागृति श्रीवास्तव

अन्तरिक्ष से हरी, नीली और सफ़ेद दिखने वाली हमारी धरती अभी तक 100 अरब प्रकाश वर्ष में फैले ब्रह्माण्ड का एकमात्र ऐसा अद्‌भुत ग्रह है, जिसमें लाखों करोड़ों प्रकार का जीवन, जल और वायु विद्यमान है । पृथ्वी नारंगी जैसी गोल आकृति की है जो लट्टू की तरह अपने अक्ष पर घूमती है तथा लगातार अग्रदिशा में गमन करती हुई सूर्य की परिक्रमा भी करती रहती है, जिसके परिणामस्वरूप 29 जून को पृथ्वी तल पर सबसे बड़ा दिन तथा सबसे छोटी रात उत्तरी गोलाई में होती है जबकि दक्षिणी गोलाई यानी अंटार्कटिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, अफ्रीका तक दक्षिणी अमेरिका में इसी समय सबसे बड़ी रात तथा सबसे छोटा दिन होता है ।

पृथ्वी के इसी परिक्रमण तथा परिभ्रमण के कारण 22 दिसम्बर को उत्तरी गोलाई में सबसे बड़ी रात एवं सबसे छोटा दिन और जाड़े की ऋतु होती है जबकि दक्षिणी गोलाई में सबसे बड़ा दिन, सबसे छोटी रात तथा ग्रीष्म ऋतु होती है । पृथ्वी के इसी परिक्रमण और परिभ्रमण के फलस्वरूप धरती पर रात-दिन की अवधि और ऋतु में परिवर्तन होते हैं । इसी कारण 21 मार्च तथा 23 नवम्बर को ऐसी अद्‌भुत तिथियां हैं जब सारी धरती पर दिन और रात बराबर होते हैं । 21 जून को भारत में 14 घंटों का दिन और 10 घंटों की रात, ईरान, चीन तथा जापान में 20 घंटों का दिन और 4 घंटों की रात तथा उत्तरी यूरोप, उत्तरी एशिया तथा उत्तरी अमेरिका में 22 घंटों का दिन तथा 2 घंटों की रात होती है । इससे आगे बढ़ने पर सूरज डूबता ही नहीं तथा उत्तरी ध्रुव पर तो 21 दिसम्बर से 21 जून तक 6 माह तक दिन ही दिन रहता है जबकि इस कालावधि में दक्षिणी ध्रुव में रात ही रात रहती है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



Sajid Anwar

9372478173, 9422828136

SAJID CARPETS

We Sale All Kinds of JA - NAMAZ

SPECIALIST IN MASJID JA-NAMAZ

WHOLE SALER & RETAILER

We also Import & Export

Mohammad Ali Road, Mominpura, NAGPUR - 440 018. INDIA

E-mail : carpetjanamaz@gmail.com

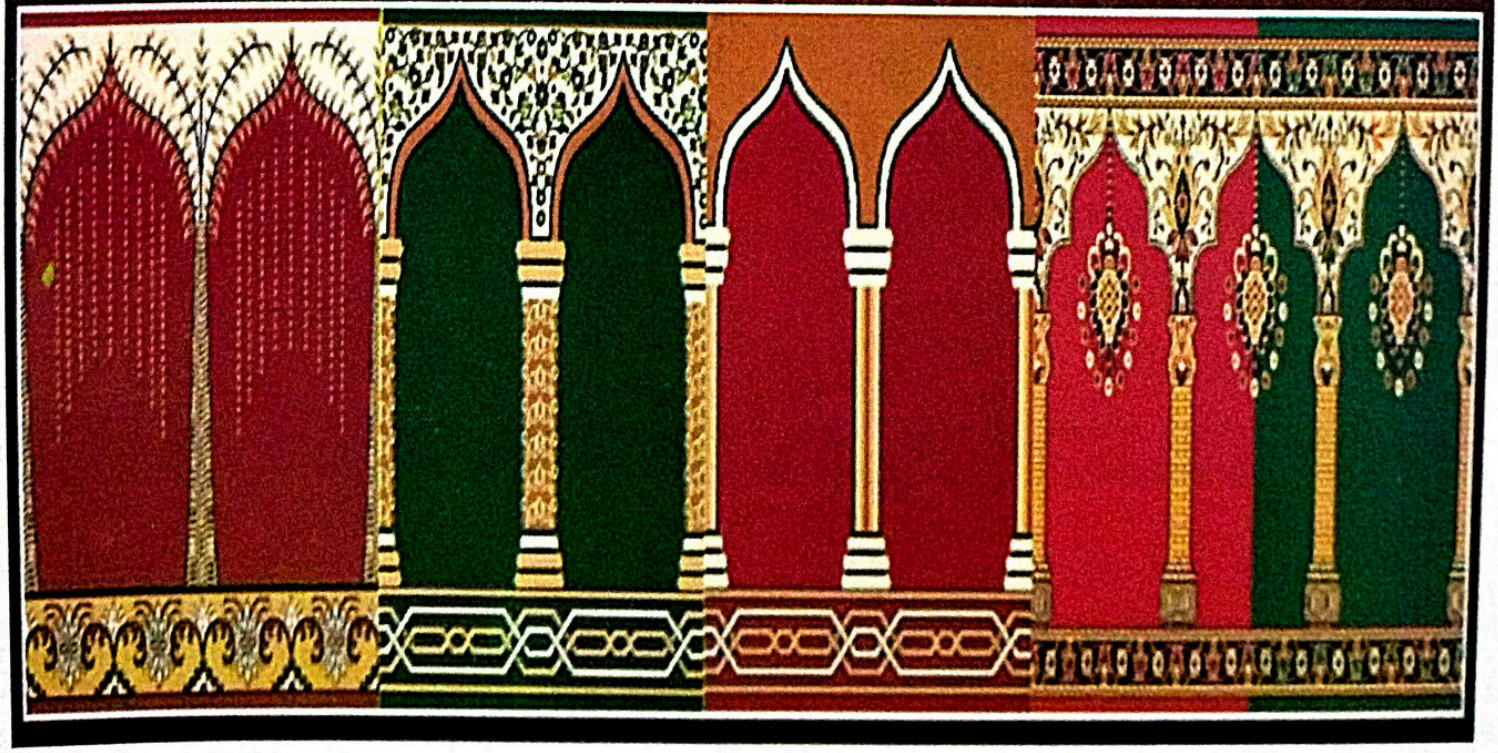

Posted on 20-21 September 2016
October 2016
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.09.2016
Total Pages-52 (With Covers)

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

कान्ति
स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

पढ़िए और पढ़ाइए

जो केवल समाचार ही न दे

- बल्कि बताए समाचारों का मर्म और आगे-पीछे का हाल
- देश व समाज की उन्नति के लिए प्रस्तुत करे ठोस उपाय
- प्रस्तुत करे इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ होने वाले दुष्प्रचार का तोड़
- सामने लाए सही स्थिति और अवगत कराये वास्तविकताओं से
- रखे ध्यान नैतिक मूल्यों का और मार्गदर्शन करे भलाई व कल्याण की ओर

सहयोग राशि :-

✧ प्रति कॉपी 5 /= ✧ छहमाही 125/= ✧ वार्षिक 250/=

एजेंसी और ग्राहक बनने के लिए सम्पर्क करें ।

KANTI WEEKLY

D-314, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-25
Phone : 09818799223, 011-26949430
E-mail : kantiweekly@hotmail.com